१
पत्र व्यवहार
जमनालाल बजाज
का देश के राजनैतिक नेताओं से

कृपया यह ग्रन्थ नीचे निर्देशित तिथि के पूर्व अथवा उक्त तिथि तक वापस कर दें। विलम्ब से लौटाने पर प्रतिदिन दस पैसे विलम्ब शुल्क देना होगा।

जमनालाल बजाज सेवा-ट्रस्ट-माला–३

पत्र-व्यवहार

भाग १

—जमनालाल बजाज का देश के राजनैतिक नेताओं से—

सम्पादक
रामकृष्ण बजाज
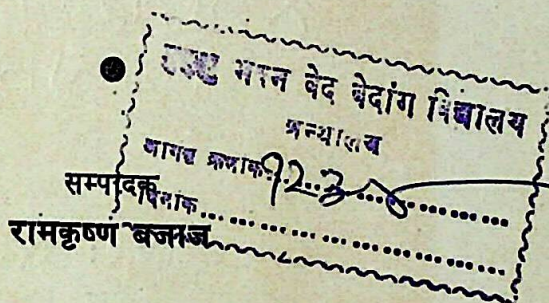
प्राक्कथन
चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य

१९५८
मुख्य विक्रेता
सस्ता साहित्य मंडल
नई दिल्ली
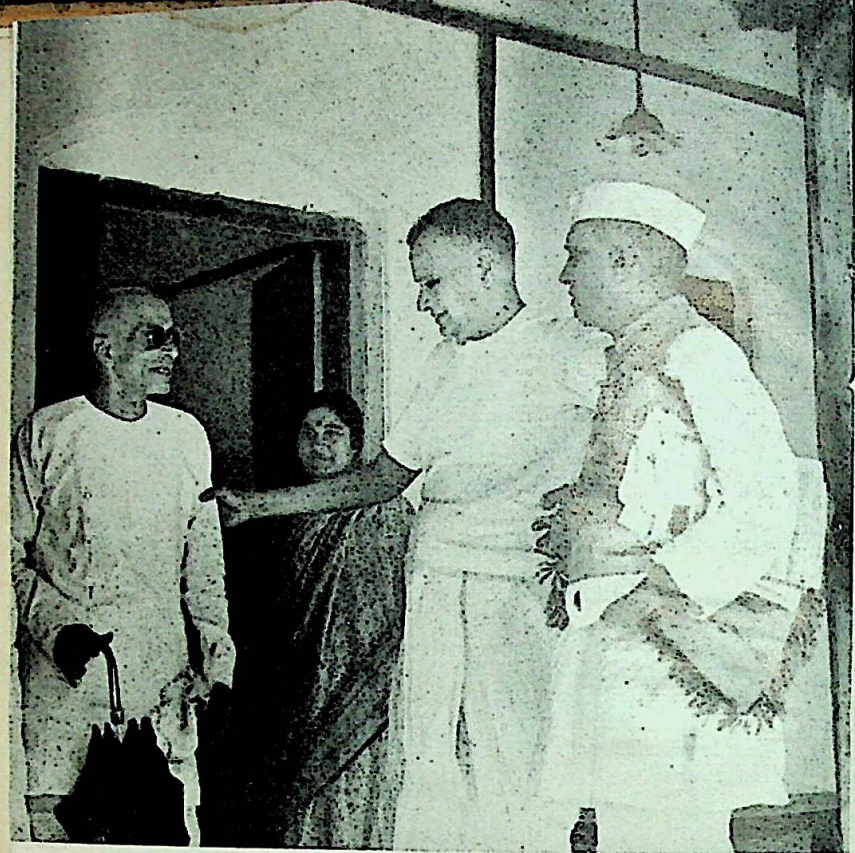
दो लोक-नेताओं के बीच में

प्राक्कथन

श्री जमनालाल बजाज उन लोगों में से एक थे, जिनकी जीवन-लीला भारत के लिए अपने राजनैतिक स्वप्नों के पूरे होने से पहले ही समाप्त होगई। लेकिन यह कौन कह सकता है कि हम, जो उनसे ज्यादा समय तक जीवित रहे हैं, अधिक सौभाग्यशाली हैं? जो लड़ाई के दौरान में ही गुजर गये, वे अनेक निराशाओं के शोक से बच गये।

जमनालालजी की याद उन अनगिनत कांग्रेसियों को प्यारी है, जिनको उन्होंने राजनैतिक संग्राम में भाग लेने की खातिर अपने परिवार त्यागने और काम-धंधे छोड़ने में सहायता दी थी। उनके पास धन था, और वह जानते थे कि किस प्रकार से उसे दिया जाय। अपनी पैतृक सम्पत्ति को कहीं अधिक बढ़ाने की क्षमता उनमें थी और तदनुकूल अवसर भी थे; लेकिन उन्होंने उन सभी अवसरों को छोड़ दिया और गांधीजी के सर्वाधिक प्रिय बन गये। दीनातिदीन की भांति वह राष्ट्र के काम में जुट गये। उन्होंने अपने लिए जेल का रास्ता खोल लिया और सारी संपत्ति की जब्ती की संभावना पैदा कर ली।

उनके पत्र थोड़े ही हैं, लेकिन यह संग्रह अवश्य ही दिलचस्प होगा। मेरी यह भूमिका, उनके हाथों मुझे जो मिला, उसके प्रति मेरे प्रेम और आभार की विनम्र परिचायक है।

मद्रास
१५-८-५८

चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य

संपादक का निवेदन

हमारी आजादी की लड़ाई के साथ जिन व्यक्तियों के नाम गहराई से जुड़े हुए हैं, उनमें एक नाम पूज्य पिताजी (स्व० जमनालाल बजाज) का है। वैसे तो प्रारंभ से ही उनके जीवन में सेवा-भाव विद्यमान था, लेकिन गांधीजी के संपर्क में आने के बाद उनकी प्रवृत्तियों और सेवाओं का क्षेत्र बहुत व्यापक हो गया। राष्ट्र के अभ्युदय से संबंधित सभी प्रमुख प्रवृत्तियों में—क्या राजनैतिक, क्या सामाजिक और क्या रचनात्मक—उन्होंने सक्रिय भाग लिया। उनकी एक ही इच्छा थी—हमारा देश स्वाधीन हो और ऊपर उठे।

पिताजी के संपर्क बड़े ही व्यापक थे। सन् १९४१ का व्यक्तिगत सत्याग्रह समाप्त होने पर जब ११ फरवरी १९४२ को उनका देहांत हो गया तो उनके इष्ट-मित्रों तथा साथियों ने इच्छा प्रकट की कि उनकी विस्तृत जीवनी निकलनी चाहिए, लेकिन सन् १९४२ का ऐतिहासिक आंदोलन छिड़ जाने से वह कार्य उस समय न हो सका। देश आजाद हुआ, किंतु साथ ही अनेक समस्याएं देश के सामने आ गईं। इस प्रकार देर-पर-देर होती गई। आखिर सन् १९५१ में जाकर श्री हरिभाऊजी उपाध्याय द्वारा लिखित विस्तृत जीवनी प्रकाशित हुई।

पाठक जानते हैं कि पूज्य गांधीजी के साथ पिताजी का न केवल निकट संपर्क ही रहा, अपितु उन्होंने उनके प्रति अपनेको समर्पित ही कर दिया। पिताजी तथा बजाज-परिवार के साथ गांधीजी का समय-समय पर पत्र-व्यवहार होता रहा। वे पत्र निजी न थे, लोकहित की बहुत-सी सामग्री उनमें थी। अतः जीवनी के बाद उन पत्रों का संग्रह 'पांचवें पुत्र को बापू के आशीर्वाद' के नाम से कई भाषाओं में प्रकाशित हुआ। बाद में उसका एक संक्षिप्त संस्करण भी निकाला गया।

पिताजी के निधन के बाद देश के अनेक गण्यमान्य व्यक्तियों, रचनात्मक कार्यकर्त्ताओं तथा संबंधियों ने उनके संस्मरण लिखे थे। उनसे पिताजी के व्यक्तित्व पर तो प्रकाश पड़ता ही था, यह भी मालूम होता था कि उनकी सेवा का क्षेत्र कितना बड़ा था और उनकी प्रवृत्तियां कितनी फैली हुई थीं। उन सब महत्वपूर्ण संस्मरणों का संग्रह 'स्मरणांजलि' के नाम से पुस्तकाकार प्रकाशित किया गया।

कहने की आवश्यकता नहीं कि इन सब पुस्तकों का हर तरफ से स्वागत हुआ। उससे प्रेरणा मिली कि पिताजी के संग्रह में और जो महत्वपूर्ण तथा राष्ट्रोपयोगी सामग्री है, उसका प्रकाशन भी किया जाय।

पिताजी का पत्र-व्यवहार देश के कोने-कोने से और हर तरह के व्यक्तियों से था। फाइलें देखने पर पता चला कि सारे पत्र तो उपलब्ध नहीं हैं, क्योंकि सत्याग्रह-आंदोलन के समय पुलिस आदि से उनको बचाते-बचाते बहुत-से दीमकों के खाद्य हो गये। लेकिन जो बचे, उनमें से छांटने पर बहुत-से पत्र ऐसे निकले, जो लोकोपयोगी हैं और जिनसे स्वतंत्रता-संग्राम तथा गांधी-युग के इतिहास पर अच्छा प्रकाश पड़ता है।

इस पत्र-व्यवहार को चार भागों में प्रकाशित करने की योजना बनाई गई है।

(१) राजनैतिक नेताओं से।
(२) देशी राज्य के कार्यकर्ताओं से।
(३) रचनात्मक कार्यकर्त्ताओं से।
(४) शासकों तथा शासन प्रतिनिधियों से।
(५) सामाजिक और व्यापारिक बंधुओं तथा कुटुंबीजनों से।

छठा भाग उनकी डायरी (दैनंदिनी) में से चुने हुए अंशों को लेकर निकाला जायगा।

बच्चों की सहज-स्वाभाविक इच्छा होती है कि अपने दिवंगत पिता के लिए कोई उपयुक्त स्मारक तैयार करें। स्थूल स्मारक का समय अब गया। अतः हमने सोचा कि उनके साहित्य के संकलन तथा प्रकाशन के लिए

जो कुछ किया जा सके, करें।

पत्रावली का पहला भाग पाठकों के सामने रखते हुए हमें बहुत प्रसन्नता अनुभव होती है। इन पत्रों का उपयोग भारत की आजादी का इतिहास लिखने के लिए हो सका, तो हमें बड़ी खुशी होगी और हम समझेंगे कि हमारा परिश्रम सार्थक हुआ।

हमें विश्वास है कि इस सामग्री के प्रथम बार प्रकाश में आने से पाठकों को बहुत-सी नई व महत्वपूर्ण बातें मालूम होंगी।

पूज्य राजाजी के हम अत्यंत आभारी हैं, जिन्होंने बहुत ही व्यस्त रहते हुए भी इस पुस्तक की भूमिका लिखने की कृपा की।

—रामकृष्ण बजाज

पत्र-व्यवहार

भाग १

पत्र-व्यवहार

उत्तर प्रदेश

: १ :

बंबई, मई, १९४०

प्रिय श्री कैलासनाथजी,

वर्धा से, पू. बापूजी की प्रार्थना करने पर, आपके जयपुर आने के बारे में उन्होंने आपको तार दिया था। आपका जवाब आ गया था। आपने वहां आना मंजूर किया, इससे बापू को व हम सबको खुशी हुई। यों तो मैं ही आपको आने को लिख सकता था और मुझे उम्मीद थी कि आप आना स्वीकार कर लेंगे, परंतु बापू के जरिये बुलाने में अब आप बापू के प्रतिनिधि बनकर जयपुर आवेंगे। बापू ने जो पत्र जयपुर की प्रदर्शनी के बारे में दिया है, उसकी नकल आपकी जानकारी के लिए इसके साथ भेज रहा हूं। आप इसका उपयोग अपने भाषण आदि में कर सकते हैं।

मैं ता. २३ की शाम को सवाई माधोपुर होता हुआ जयपुर पहुंचूंगा। ता. २४ को खादी-प्रदर्शनी का उद्घाटन होगा। मेरे खयाल से आपका ता. २४ की सुबह मेल से जयपुर पहुंचना ठीक रहेगा। मैं स्टेशन के नजदीक न्यू होटल में ठहरूंगा। आप भी कृपाकर मेरे पास ही ठहरेंगे। जयपुर से और किसीका निमंत्रण स्वीकार करते समय इसका खयाल रखें। आपके साथ और कोई आवेंगे तो मुझे सीकर सूचना कर देवेंगे तो अच्छा होगा।

आपको वहां कम-से-कम तीन-चार रोज तो ठहरना होगा, जिससे वहां के रचनात्मक कार्यों से आप पूरी तरह से वाकिफ हो सकें। आपका प्रेम और खासकर भुवाली-अल्मोड़ा की यात्रा की जब याद आती है, तब बड़ा सुख मिलता है।

जमनालाल बजाज के वंदेमातरम्

: २ :

पुरी, ६-६-४०

प्रिय जमनालालजी,

प्रणाम। जयपुर में चार रोज आपके पास रहकर जो आनंद प्राप्त हुआ, मैं उसको पूरे तौर पर लिख नहीं सकता। आपका प्रेम और कृपा मुझे हमेशा याद रहेगी और मैं उसे कभी नहीं भूल सकूंगा। मैं इसके लिए आपका बहुत कृतज्ञ हूं। जयपुर में प्रजा-मंडल का काम जितनी सुंदरता और सफलता के साथ चल रहा है, उसको भी देखकर मुझे बहुत खुशी हुई। अगर सब रियासतों में जैसे आपके नेतृत्व में काम चलता है, वैसा चले तो बहुत सफलता मिलती। मेरे लायक कोई काम कभी हो तो कृपा करके लिखियेगा। मैं गांधीजी को भी आज खत भेज रहा हूं। जवाहरलालजी ने २१ जून को नेशनल प्लैनिंग कमेटी की बैठक बंबई में रखी है। मालूम नहीं कि होगी या नहीं। अन्न की स्थिति दिन-दिन बिगड़ती जाती है। आशा है कि वर्किंग कमेटी अपनी आने-वाली बैठक में सब हाल पर विचार करके देश को सही रास्ता बतायेगी, और आजकल लोगों को जो आम तौर पर बेचैनी हो रही है, उसको दूर करेगी। हरेक आदमी कुछ-न-कुछ सोचता ही रहता है। मैं तो अब इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि हमारे लिए तो अहिंसा और असहयोग ही बड़े जबर्दस्त हथियार हैं। मगर इसके लिए सब हिंदुस्तान के रहनेवालों का सहयोग चाहिए। देश में इतना धन नहीं है कि आजकल के नये-नये हथियार हवा और जमीन और समुद्र के बना सकें, और इनको बनाकर दूसरों का सामना कर सकें।

आप तो अब वर्धा पहुंच गये होंगे या जानेवाले होंगे ? कृपा करके लिखिएगा कि आप वर्किंग कमेटी की मीटिंग खतम होने के बाद कहां रहेंगे।

श्रीमती जानकीदेवी को मेरा प्रणाम। वह जावरे तो हो आईं, प्रयाग भी आवें तो हमें उनका स्वागत करने का मौका मिले। वंदेमातरम्।

कैलासनाथ काटजू

: ३ :

प्रयाग, १५-१-४२

प्रिय सेठ जमनालालजी,

नमस्कार। पत्र आपका आया। मुझे दुःख है कि मेरा वर्धा का आना रह गया। आजकल सर्दी ज्यादा है। डाक्टर ने मना कर दिया है। आपसे मिलने को जी चाहता है। अगर कुशलपूर्वक रहा तो अगले महीने में आऊंगा। वसंतपंचमी को तो काशी जाना है। मैंने तय कर लिया है कि आपके गोरक्षण समाज का मेंबर हो जाऊंगा। अगले महीने की १५ तारीख से, कृपा करके, मुझे १० सेर गाय का घी भिजवा दिया करें। डेरी से कह दीजिए कि भेज दें और बिल की वी.पी. कर दें। दो-तीन महीने का कष्ट होगा। फिर मैं पांच-सात गायें अपने लिए मंगवा लूंगा और घर में ही छोटी-सी डेरी खोल लूंगा।

कृपा रखेंगे।

आपका,
कैलासनाथ काटजू

: ४ :

पूना, १६-६-२८

प्रिय जमनालालजी,

आपके पत्र तथा भेजे हुए अन्य कागजात के लिए धन्यवाद। मुझे मालूम हुआ है कि "बंबई भूमिकर कानून और बंदोबस्त दर्पण" (सेटलमेंट मैन्युअल) हमें उपलब्ध हो गया है।

मैं इसी महीने की २१ या २२ जून को बंबई पहुंचूंगा और मेरा सुझाव है कि हमें २२ को बारडोली के लिए रवाना हो जाना चाहिए।[1]

आपका,
हृदयनाथ कुंजरू

---

[1] अंग्रेजी से अनूदित

: ५ :

पैरिस, १९-६-३६

प्रिय जमनालालजी,

सप्रेम वंदे। अनेक धन्यवाद। आपका पत्र प्राप्त हुआ।

मैं यहां से वापस आने पर या तो काशी विद्यापीठ में अध्यापन-कार्य करने की सोचता हूं, या कांग्रेस-कार्य। कांग्रेस-कार्य के संबंध में पं. जवाहरलालजी से बातचीत हुई थीं, लेकिन वापस आने पर उनसे फिर बातचीत करने पर कुछ निश्चित होगा। उनके कथनानुसार उस समय की स्थिति पर भी कुछ निर्भर करेगा। नहीं तो विद्यापीठ में स्थान अगर खाली हो तो वहां अध्यापन-कार्य, जो मैं पहले कर चुका हूं, करने की सोचता हूं। लेकिन स्थान खाली रहने के बारे में अभी कुछ कहा नहीं जा सकता। विद्यापीठ से दो-तीन महीने बाद पत्र आने से ही पता लगेगा। मुझे उम्मीद है कि इन दोनों में से कोई एक कार्य तय होगा। यदि यह न हो सका तो ही दूसरा कोई कार्य राष्ट्रीय दृष्टि का रखूंगा, लेकिन मुझे आशा है कि उसकी आवश्यकता नहीं पड़ेगी।

पंडितजी ने लिखा था कि आप दो शर्त पर रुपया दिलवाने की कोशिश कर सकते हैं। एक तो इस शर्त पर कि अगर राष्ट्रीय कार्य करें तो वापस करना नहीं पड़ेगा। लेकिन कोई निजी कार्य करने पर सब रुपया चुकता करना पड़ेगा। दूसरा, इस शर्त पर कि ऋण लिया हुआ रुपया सब अदा करें। तीसरा, उन्होंने यह भी लिखा था कि संभवतः कुछ रुपया, अगर हो सका तो आप छात्र-वृत्तियों के तौर पर दिलवा सकेंगे। मुझे ८० पौंड की जरूरत है। मैं चाहता हूं कि अगर आप कुछ रुपया कर्ज या छात्रवृत्ति के तौर पर दिलवाने की कोशिश कर सकें, और बाकी इस शर्त पर दिलवा सकें कि राष्ट्रीय कार्य अगर न किया तो उसे वापस करना पड़ेगा, तो बड़ी कृपा होगी। अगर यह पूरी तौर पर किसी प्रकार संभव न हो सके तो मुझे यह भी मंजूर है कि कुछ हिस्सा आप इस शर्त पर दिलवावें कि वह वापस कर दिया जाय।

रुपया अदा करने के बारे में आपने जो लिखा है, उसे मैं ठीक तौर पर

समझ नहीं पाया। मैं उसे किश्तों में अदा करूंगा। अगर अधिकांश या लगभग पूरा हिस्सा इस शर्त पर ही आप दिलवा सकें कि वह किसी भी हालत में वापस करना पड़ेगा तो मुझे प्रसंगवश कुछ ऐसा कार्य या व्यवस्था करनी पड़ेगी कि मैं उसे जल्द-से-जल्द अदा कर सकूं। मैं यह नहीं समझ सका कि आप शायद कोई सबूत चाहते हैं कि मैं किस प्रकार रुपया अदा कर सकूंगा। अगर मेरा सवाल ठीक हो तो कृपया लिखिए कि आप किस प्रकार का सबूत चाहते हैं।

कांग्रेस-कार्य के संबंध में अखिल भारतीय विदेशी विभाग या ऐसे ही किसी विभाग के बारे में पंडितजी से बातचीत हुई थी। मैं पंडितजी को जल्द ही लिखनेवाला हूं, लेकिन इस संबंध में कोई निश्चयात्मक बातचीत नहीं हुई है।

आपको अगर इस पत्र के बाद भी कुछ और स्पष्टीकरण की आवश्यकता हो तो जरूर लिखियेगा।

आशा है कि आपका उत्तर शीघ्र ही आयगा। योग्य सेवा लिखिएगा।

आपका,

बा. वि. केसकर

: ६ :

मसूरी, १८-१०-३८

पूज्य जमनालालजी,

आपका पत्र आपके इस्तीफे के बारे में मिला। मैं जब कार्य-समिति की प्रोसीडिंग्स लिख रहा था, तो सुभाषबाबू से पूछा कि आपके त्यागपत्र के बारे में क्या लिखा जाय। उन्होंने कहा कि यह लिखा जाय कि त्यागपत्र का विचार दूसरी बैठक में किया जायगा। आपके जाने के बाद इस बारे में पूज्य बापू से बातचीत हुई। बापूजी का यह कहना था कि त्यागपत्र तो कबूल ही किया जाय और आपको काम से रिहाई तब दी जाय जब खजांची का दूसरा कोई बंदोबस्त हो जाय। सभापति बंबई में थे, और अखबारों में है कि आपके साथ वर्धा जा रहे हैं। मुझे आशा है कि त्यागपत्र का कुछ-न-कुछ निर्णय आप लोगों ने किया होगा। जो कुछ फैसला किया हो, मुझे लिख दीजिएगा।

आपका स्वास्थ्य अब ठीक होगा। आशा है और सब कुशल है। हम दोनों का नमस्कार।

जे. बी. कृपलानी

: ७ :

वर्धा, २२-१०-३८

प्रिय श्री कृपलानीजी,

आपका मसूरी से १८-१० का लिखा पत्र मिला। मैंने श्री सुभाषबाबू से बंबई में व वर्धा म आग्रहपूर्वक प्रार्थना की थी कि मुझे मुक्त कर देवें। उन्होंने मेरे दिल्ली से आने के बाद वर्किंग कमेटी के सदस्यों से व पूज्य बापूजी से बातें की थीं, वह कहीं, और अपनी ओर से भी कहा कि मेरा त्यागपत्र स्वीकार करने से कांग्रेस के बारे में कई प्रकार की गलतफहमियां फैलने का डर ह। इंटरेस्टेड पार्टी इस बारे में कई प्रकार की अटकलें लगायेगी, लेकिन यह भी कहते थे कि तुम्हें आराम व शांति तो जरूर मिलना चाहिए। वे पू. बापूजी को पत्र लिखकर उनकी राय भी मंगानेवाले थे। मैंने भी आज उन्हें लिखा ह। मेरा साधारण चलता है। श्री गिरधारी व उनकी स्त्री यहींपर हैं। एक-दो रोज और ठहरेंगे।

जमनालाल बजाज के वंदेमातरम्

: ८ :

इलाहाबाद, २२-४-३६

पूज्य जमनालालजी,

१८ को धार्मिक संस्कार और २० को यहां रजिस्ट्रेशन हो गया। जवाहर-लालजी ने उस मौके पर कुछ राजनैतिक कार्यकर्ताओं को अपने घर बुलाया था। आप नहीं रह सके, इसका मुझे अफसोस है। आपकी उपस्थिति मैं बहुत चाहती थी।

आप तो शायद २७ के पूर्व वर्धा पहुंच जायंगे। कहीं पहाड़ पर जाने का विचार है? मेरा प्रोग्राम अभी कुछ ठीक नहीं है। इस २४ तारीख को शांति-निकेतन जा-रहे हैं। पीछे क्या कार्यक्रम होगा, कुछ ठीक नहीं है। आप लोग

आशीर्वाद दीजिए कि मैं ठीक तरह से न्याय और सत्य का पालन कर जीवन बिता सकूं और देश की सेवा कर सकूं।

आशा है, आप स्वस्थ शरीर हैं और सब कुशल है। जानकीवहन और मदालसा को मेरा नमस्कार कहिएगा।

आपकी
सुचेता (कृपलानी)

: ९ :

बंबई, १९४१

प्रिय जमनालालजी,

मैं पहले न लिख सका इसके लिए क्षमा चाहता हूं। मेरी तबियत खराब थी और दोपहर के समय कुछ बुखार-सा हो जाता है। परंतु आज कुछ अच्छा हूं।

बंबई आकर यह पता लगा कि मेरी बहन का नहीं, पर उनकी लड़की का आपरेशन हुआ था और वह मेरे साथ इलाहाबाद जानेवाली थी। बद-किस्मती से उसका एक टांका टूट गया और जख्म पक गया। ऐसी हालत म वह १५–२० दिन तक रेल का सफर नहीं कर सकती।

कल मुझे इंदूजी का एक पत्र मिला, जिससे मालूम हुआ कि अम्माजी नानी मुझसे मिलना चाहती हैं। इसके अलावा जवाहरलालजी से भी मुलाकात की आशा है। इस कारण में आज ८ बजे शाम की गाड़ी से देहरादून के लिए रवाना हो रहा हूं।

आपका पत्र मुझे करीब ३ बजे मिला, इसलिए आपसे मिल न सकूंगा। आशा है, आप क्षमा करेंगे। आपसे और बापूजी से मिलकर दिल व दिमाग को जो शांति मिली उसके लिए आप लोगों का हार्दिक उपकार मानता हूं।

आशा है, आपकी तबियत अच्छी होगी।

आपका सेवक,
फिरोज (गांधी)

: १० :

वृंदावन, १४-१-३१

श्री सेठ जमनालालजी,

मैं बनारस से तीन दिन हुए यहांपर आया। दो या तीन दिन सहारनपुर रहकर मैं साबरमती चला जाऊंगा।

बापूजी के साथ बनारस में बातें हुई थीं और यह फैसला हुआ कि दो महीने मैं साबरमती रहूं और चर्खा-संघ और उसके कार्य की अच्छी तरह से जानकारी हासिल कर लूं। उसके बाद जिस स्थान में काम करने का होगा मैं वहीं चला जाऊं। खयाल तो यही है कि बनारस को केंद्र बनाकर मैं वहां से कार्य आरंभ करूं। बापूजी भी इससे सहमत हैं, परंतु साबरमती में रहने के बाद जब बापूजी वहां आयेंगे इसका पूरी तरह से फैसला किया जायगा।

मैं तो यह भी चाहता हूं कि अपनी धर्मपत्नी शांतिदेवी को भी अपने साथ अहमदाबाद ले जाऊं, परंतु मालूम नहीं कि वह अभी आ सकेंगी या नहीं। उनके रहने का भी कुछ बंदोबस्त वहां करना होगा। बापूजी भी चाहते हैं कि हो सके तो शांतिदेवी को अपने साथ ले आऊं। यदि मुझे यह मालूम हो कि जानकीबहन वहांपर रहेंगी तो मैं शांति को वहां लाने की और ज्यादा चेष्टा करूं, क्योंकि मुझे पूरी आशा है कि जानकीबहन के साथ उनकी तबियत जल्दी लग जायगी। यदि आप मुझे इसके बारे में लिखें तो अच्छा ही होगा। मैं तो शांति को वर्धा में भी छोड़ सकता हूं, परंतु मेरा खयाल है, यदि वह साबरमती में रहे तो कुछ काम भी अच्छी तरह से सीख लेगी।

मैं शायद साबरमती २२ या २३ तारीख तक पहुंच जाऊंगा। आपका और जानकीबहन का तो शायद वहांपर तबतक जाना न हो।

और जो कुछ मेरी बातें बापूजी से इस कार्य के संबंध में हुई हैं, मैं आपको मिलूंगा तब बतला दूंगा।

आशा है कि आपका स्वास्थ्य अच्छा होगा। सबको मेरा नमस्ते कहिएगा।

आपका,
(आचार्य) जुगल किशोर

: ११ :

वर्धा, २२–९–३१

प्रिय जुगलकिशोरजी,

आपका पत्र तो मुझे १०-९ का मिल गया था, परंतु बराबर काम में लगे रहने के कारण उत्तर देने में देरी हुई। हां, यह बात तो मेरे भी मन में आई थी कि जब ऐसी हालत आपके सामने है तो फिर आपने बिना काम क्यों इतना परिश्रम किया और हम लोगों को बुलाया। मुझे तो पहले से विश्वास था। इसलिए ही मैंने पूज्य बापूजी के सामने बहुत कड़ाई के साथ आपसे कहा था। और जो कुछहोता है, ठीक ही है। अगर सब-कमेटी की रिपोर्ट के आधार पर प्रेम-महाविद्यालय को ग्राम में ले जाया जाय तो परिश्रम सफल समझा जा सकेगा।

श्री मनोहरलालजी का मैं भी अधिक परिचय करना चाहता था परंतु उस समय न हो सका। अब तो मैं भ्रमण में जा रहा हूं। किसी एक स्थान पर जब कभी कुछ समय के लिए रहना होवेगा तब मुझे तलाश करके वह आ जावेंगे तो ठीक रहेगा। वर्तमान में मेरा प्रोग्राम ता० २८-२९ को बिहार व ता० १ से कलकत्ता रहने का है।

जमनालाल बजाज के वंदेमातरम्

: १२ :

प्रयाग, ३० श्रावण ८१ (जुलाई, १९२५)

प्रियवर वंदे।

स्वराज्य पार्टी का पूरा बल कांग्रेस पर कब्जा करने की ओर लग रहा है। महात्माजी का इस विषय में क्या हार्दिक मंतव्य है और आप लोग अर्थात आप, वल्लभभाई, राजगोपालाचार्यजी और राजेंद्रबाबू क्या करना चाहते हैं यह मैं जानना चाहता हूं। मेरे सामने यह प्रश्न तुरंत ही जोर से उपस्थित होनेवाला है, क्योंकि स्वराज्य दल संयुक्त प्रांत पर कब्जा करना चाहेगा। इस प्रांत पर कब्जा कर लेने से उनका

वजन कांग्रेस में बहुत बढ़ जायगा। मैं महात्माजी की नीति पूरी तरह न जानने के कारण असमंजस में हूं। यदि महात्माजी कांग्रेस को स्वराज्य दल के हवाले करने पर तैयार हों, क्योंकि मैंने ऐसा सुना है कि उन्होंने पंडित मोतीलाल को कुछ इसी प्रकार का पत्र लिखा है—तो हम लोग चुनाव इत्यादि के झगड़े में फिर क्यों पड़ें? चुनाव सितंबर से आरंभ हो जायगा। स्वराज्य दल की ओर से अभी से लोग वेतन पर चुनाव के संबंध में काम करने के लिए नियत किये जा रहे हैं। पं. गौरीशंकर मिश्र स्वराज्य दल के सदस्य हो गये हैं और मुझे मालूम हुआ है कि वह और शेरवानी उस दल के इस प्रांत में मुख्य संचालक आगामी चुनाव के लिए नियुक्त हुए हैं। स्वयं पं. मोतीलाल यहां उपस्थित ही हैं। ऐसी दशा में आप समझ सकते हैं कि जो लोग महात्माजी के आदर्श पर चलना चाहते हैं उन्हें काफी कठिनाई होगी। यदि शीघ्र कोई नीति निश्चित हो जाय तो चुनाव में काम बिगड़ने न पावे, इसका यत्न हो सकता है। उत्तर शीघ्र दें।

सस्नेह,

पुरुषोत्तमदास टंडन

: १३ :

प्रयाग, भा. कृ. ५-८१ (अगंस्त, १९२५)

प्रियवर,

वंदे। नागपुर में जिस वीरता से आपने हिंदू-मुसलमान झगड़े को रोका उसपर बधाई। आपकी चोट का अब क्या हाल है? विश्वास करता हूं कि अब आप अच्छे होंगे।

आपका पत्र साहित्य-भवन के हिस्सों के संबंध में मुझे मिला था। साहित्य-भवन में आपकी ५०० रुपये की हुंडी और अप्लीकेशन फार्म भी आ गया ह। डायरेक्टरों की बैठक अभी नहीं हो सकी है। शीघ्र होनेवाली है।

सस्नेह,

पुरुषोत्तमदास टंडन

पुनश्चः

आपको याद होगा कि खादी के प्रचार के लिए आपने श्री मंजूर अली सोख्ता से बातचीत करने और उनको नियत करने के लिए मुझसे कहा था। उन्होंने अंत में स्वीकार नहीं किया था। आपके खादी-मंडल की ओर से फिर हमारे प्रांत में किसीकी नियुक्ति की बातचीत हुई या नहीं, यह मुझे मालूम नहीं। थोड़े दिन हुए श्री देवदास गांधी का एक पत्र पं. जवाहरलाल नेहरू के पास आया था, जिसमें देवदासजी ने लिखा था कि बापूजी की राय है कि कानपुर में परशुरामजी से चर्खा-प्रचार के संबंध में सहायता ली जाय। हमारे प्रांतीय खादी-मंडल के मंत्री श्री रामस्वरूप गुप्त से परशुरामजी से बातें हुई। परशुरामजी काम करने को तैयार हैं, किंतु उन्हें आर्थिक सहायता की आवश्यकता पड़ेगी क्योंकि इस समय वह किसी स्कूल में नौकर हैं और ७५ और १०० रुपये के बीच में वेतन पा रहे हैं और कुछ और भी जीविका है। चर्खे का काम यह सब छोड़कर उन्हें करना होगा। यदि भारतीय खादी-मंडल की ओर से आप उन्हें संयुक्त प्रांत म रख सकें तो कृपया तुरंत इसका प्रबंध कर दीजिए और मुझे सूचित कर दीजिए। परशुरामजी अपने लिए निश्चित क्या लेंगे यह तो मैं नहीं कह सकता। किंतु मेरा ध्यान है कि लगभग ८० या ९० रुपये म वह अपना काम चला लेंगे।

पु. दा. टंडन

: १४ :

इलाहाबाद, २२-१-३६

प्रिय जमनालालजी,

वंदे। २० तारीख की रात्रि को मैं कलकत्ते से चला और कल यहां पहुंचा।

पूज्य बापूजी का जो पत्र आपकी दी हुई भूमि पर हिंदी पाठशाला बनाने के संबंध में मेरे पास आया था और जिसपर आपने भी कुछ शब्द स्वीकृति के लिखे थे उसके बारे में मैं आपसे पूछना चाहता था। मैंने महादेव-

भाई को कुछ दिन हुए लिखा था कि पूज्य बापूजी इस विषय में जो उचित समझेंगे वह मुझे शिरोधार्य होगा। आप भी जो सेवा इस संबंध में मुझसे चाहें सूचित करें। आपने पूरी स्कीम का ब्यौरा और क्या सोच लिया है, क्या मुझे कुछ उसकी सूचना दे सकेंगे ?

सस्नेह,
पुरुषोत्तमदास टंडन

: १५ :

फैजाबाद, २१-५-३६

प्रिय श्री जमनालालजी,

नमस्कार। आपका कृपा-पत्र मिला। इसके पहले एक कार्ड भी मिला था। मेरी तबियत ठीक नहीं है। यहां आने पर फिर दौरा आ गया। गरमी में मुझे कभी तकलीफ नहीं होती थी। यह एक नई बात है।

जबतक दौरा खत्म नहीं हो जाता, और मैं लंबे सफर के काबिल नहीं हो जाता तबतक मेरा आना संभव नहीं है। कृपया लिखियेगा कि आपका बंबई में कबतक रहना होगा।

मैंने जिन सज्जन के बारे में आपको लिखा था उनका नाम रमाकांत है। वह प्रयाग के रहनेवाले हैं। टंडनजी इनको जानते हैं। कार्यालय का काम अच्छी तरह कर सकेंगे। लिखने की योग्यता बहुत अच्छी है। व्याख्यान देने का अच्छा अभ्यास नहीं है; यह एक कमी जरूर है, पर कुछ दिनों के अभ्यास से यह कमी दूर हो सकती है। मिलने पर विशेष बातें करूंगा।

भवदीय,
नरेंद्रदेव (आचार्य)

: १६ :

फैजाबाद, १७-७-३६

प्रिय जमनालालजी,

नमस्कार। आपका कृपापत्र मिला। मेरी तबियत इधर ६-७ दिन से सुधर रही है, पर यह कहना कठिन है कि कबतक ऐसी रहेगी। छोटी जगह

होने के कारण यहां चिकित्सा की विशेष सुविधा नहीं है। इसलिए मैं आगामी वृहस्पति को बंबई जा रहा हूं। श्री मेहर अली ने सब प्रबंध कर दिया है। इधर वर्षा भी कम होगई है।

डा. शाह को भी दिखलाऊंगा। मेरी समझ में इस कमजोरी की हालत में जरूरी होते हुए भी वह शायद आपरेशन अभी न करें। यदि कुछ दिनों के बाद करने को कहगे और बंबई का मौसम प्रतिकूल न पड़ा तो मैं कुछ दिन रह भी जाऊंगा।

आशा है, आप प्रसन्न होंगे। बंबई पहुंचकर आपको, जैसा हाल होगा, लिखूंगा।

भवदीय,
नरेंद्रदेव

: १७ :

मसूरी, ३०-१०-४१

प्रिय जमनालालजी,

नमस्कार। मुझे माफ़ कीजिएगा कि मैंने आपके खतों का जवाब अभी तक नहीं दिया। इस मामले में, आप जानते हैं, मुझे कितना आलस है। मैं चाहती थी, जवाब देने से पहले, पापू से इस बारे में पूछ भी लूं। लेकिन इंटरव्यू में कुछ देर हो गई। मैं कल गई थी पापू से मिलने।

उनको आपका ख़त दिखाया। उन्होंने कहा कि मैं इस बारे में क्या बता सकता हूं। जो जमनालालजी ठीक समझें वैसा ही करें। हम लोगों को तो इन बातों की कोई समझ नहीं है। मैंने यह सुना था कि टाटा के शेयर वगैरा में बहुत फायदा है आजकल। यह मैंने बापू से कहा। उन्होंने उत्तर दिया कि अगर जमनालालजी चाहें तो इस बाबत में मि. नारियलवाला से बातचीत कर लेवें।

आजकल मेरी तबियत बहुत अच्छी रहती है और वजन भी बढ़ा है। अगर यहां की तौलने की मशीन ठीक है, तो मेरा वजन अब ९८ पौंड है।

मेरे पास एगाथा बेन का खत आया है। उसमें उन्होंने एक खुशखबरी

सुनाई है। आपके जो रिश्तेदार लंदन में सेंट पाल चर्च यार्ड में रहते थे वह अभी तक यूरोप में हैं। अच्छी तरह हैं। एगाथा ने उनके लड़के के लिए एक पत्र भेजा है। लेकिन मुझे उनका पता नहीं मालूम है, इसलिए वह पत्र आप ही को भेज रही हूं। आप उन्हें बनारस भेज दीजिएगा। यह खबर बापू को भी बता दीजिएगा। मेरा कार्यक्रम कोई ठीक नहीं है। डाक्टर तो यहां और रहने को कहते हैं।

आशा है, आपकी तबियत अच्छी होगी।

आपकी,
इंदु (इंदिरा नेहरू[1])

: १८ :

इलाहाबाद. ४-५-३२

प्रिय महोदय,

आप जब जमनालालजी से मिलने जायं तो यह खबर उनको दे दीजिएगा—पंडितजी को बराबर हरारत होती है और दर्द भी बराबर होता है। लड़कियां अच्छी हैं। मेरा स्वास्थ्य पहले से अच्छा है और मैं इलाहाबाद ही में हूं। चुपचाप बैठी हूं। इंदू भी आजकल यहीं है और अच्छी है। उनकी कुशलता भी हम लोगों को लिख दिया करो। मिसिज जमनालालजी का स्वास्थ्य कैसा है? मिलने पर मेरा नमस्कार कहियेगा। आशा है, दोनों अच्छे होंगे। पत्र भेजियेगा।

भवदीया,
कमला नेहरू

: १९ :

इलाहाबाद, ११-३-३४

भाई जमनालालजी,

नमस्कार। आपके जाने के बाद मेरी तबियत अच्छी है। मैंने उस दिन

[1] अब इंदिरा गांधी

जिक्र किया था कि १५००) जो फिक्स्ड डिपाजिट था वह खर्च हो गया और जो दूसरी फिक्स्ड डिपाजिट थी वह भी घर ही में खर्च होगी तो इंदू के में जो कमी थी वह पूरी नहीं हो सकेगी। हमारे मकान की छत फट गई है। उसकी मरम्मत में भी काफी रुपया लगेगा।

मेरे कलकत्ते जाने का अभी कुछ ठीक नहीं है। विधान ने ठीक जवाब नहीं दिया है। अब वह दिल्ली जायंगे तो मैंने उन्हें लिखा है कि यहां होते हुए जावे। फिर जैसा तय होगा लिखूंगी। संतानम ने लक्ष्मी इंशूरेंस में जो ५० शेयर थे वह जवाहर के नाम कर दिये हैं। उनका सूद २५ से नहीं दिया है। मैंने लाडली भाई से कहा है कि उन्हें लिखकर मंगा ले। शायद ५००) होंगे।

मोहर के दाम भी नहीं आये; उसके लिए भी खत भेजा है। आते ही आपके पास भेज दूंगी।

वहीद के लिए आपने क्या सोचा। आशा है, आपका स्वास्थ्य अच्छा होगा।

आपकी,
बहन कमला

: २० :

बंबई, २२-५-३५

भाई जमनालालजी,

नमस्कार! हम लोग अच्छी तरह यहां पहुंचे और कल सबेरे ९ बजे जहाज पर जायंगे।

रास्ते में डौली से बातें हुईं। मेरा खयाल है कि अभी आप चुप ही रहिये और उसको विचार करने दीजिए। उसने मुझे कहा था कि आपको खत भेजेगी। मुझे मालूम नहीं कि उसने भेजा कि नहीं। ज्यादा अच्छा हो कि अच्छी तरह सोचकर बात हो, नहीं तो कहीं बाद में गड़बड़ न हो और सब लोग दुखी हों।

आज बापू आये थे। आज शाम को बोरसद जा रहे हैं। जाने से पहले मिलने के लिए कह गये हैं। मुझे उनसे मिलकर बड़ी ही खुशी हुई। इच्छा तो होती थी कि वह मेरे पास ही दिनभर रहें, लेकिन उनको और काम थे, इसलिए जाने दिया।

सबको नमस्कार! पत्र भेजिएगा।

आपकी बहन,
कमला

: २१ :

वर्धा, ७-१२-२८

प्रिय भाई श्री जवाहरलालजी,

लाहौर और लखनऊ में पुलिस ने जो अत्याचार किये हैं, उनकी खबर पढ़कर और सुनकर दुःख होता है। एक तरफ लाहौर में पुलिस का कार्य और दूसरी तरफ लोगों की उदासीनता देखकर दुख हुए बिना नहीं रह सकता। लखनऊ में आपके ऊपर पुलिस की मार पड़ी, लेकिन चोट ज्यादा न आई, यह आपके पूज्य महात्माजी को दिये हुए पत्र से जानकर कुछ संतोष हुआ। लेकिन पुलिस और सरकार इस तरह अपनी मनमानी कर सके, यह देश के लिए कम लज्जा की बात नहीं है। देश के नेता इस बात को सोचकर कुछ रास्ता निकालगे, तभी ठीक होगा। कलकत्ता-कांग्रेस में आप सब लोग आयेंगे ही। उस समय कांग्रेस द्वारा कोई योग्य रास्ता निकलने से ही मन को संतोष होगा।

आल इंडिया स्पिनर्स एसोसियेशन की १८ ता० को वर्धा में मीटिंग है, यह आपको असोसिएशन के पत्र एवं 'यंग इंडिया' द्वारा मालूम हो ही गया होगा। यदि मीटिंग के समय आपका आना हो सकता तो अच्छा रहता। लेकिन आपकी तबियत एवं कांग्रेस के कार्य को देखते हुए शायद आपका यहां आना न हो सकेगा। मीटिंग में एसोसिएशन के नियम एवं कांस्टीट्यूशन के परिवर्तन के संबंध में विचार करना है। इससे यदि आपका मीटिंग के समय आना न हो सके तो भी आपकी जो राय और कोई सुझाव हों तो वे आप

लिखकर भेज सकेंगे तो मीटिंग में विचार करने म अनुकूलता रहेगी। इस-लिए आप अवश्य खयाल रखेंगे।

जमनालाल बजाज के वंदेमातरम्

: २२ :

इलाहाबाद, ९-१२-२८

प्रिय जमनालालजी,

आपका खत अभी मिला। मैं अब बिल्कुल अच्छा हूं। खाली कुछ निशान बाकी हैं। वह भी दो-चार दिन में चले जायंगे। हयादार आदमियों को चोट लगा करती है। बेहयाओं पर कम असर होता है, और आप जानते हैं कि मैं पूरी तरह से बेहया हूं।

मुझे अफसोस है कि मैं वर्धा-चर्खा-संघ की बैठक के लिए नहीं आ सकूंगा। माफ कीजियेगा। कल मैं पूना जाऊंगा। वहां से सीधा यहां वापस आना है और फिर कलकत्ते जाना है। मैंने शंकरलाल को लिख दिया था कि जो तजवीजें आपकी, राजगोपालाचारी और राजेंद्रबाबू की विधान (कांस्टीट्यूशन) के बारे में हैं उनसे मैं सहमत हूं।

आशा है, आपसे कलकत्ते में मिलना होगा।

आपका,
जवाहरलाल नेहरू

: २३ :

हुबली, २४-५-२९

प्रिय जमनालालजी,

आपका पत्र मुझे बंबई में मिला था। माफ कीजियेगा कि मैं उसी समय जवाब नहीं दे सका। लेकिन शंकरलाल ने भी मुझे लिखा था और उनको मैंने जवाब दे दिया था। बापूजी से भी मैंने कहा था कि इस समय मैं साबर-मती नहीं जा सका, क्योंकि मैंने वादा किया था मलाबार जाने का और वहां केरल प्रांतीय कांफ्रेंस में शामिल होने का। इसलिए मजबूर था। फिर मैंने सोचा कि मलाबार से वापस आते हुए साबरमती जाऊं। अब यह भी मुश्किल

हो गया; क्योंकि ऑल पार्टीज कांफ्रेंस की कमेटी में शुरू जून में शरीक होना है। उसके लिए सीधा इलाहाबाद जाना है। इनसब बातों की वजह से जल्दी आश्रम आने का कोई सिलसिला नहीं दीखता। माफ कीजिएगा।

आपका,

जवाहरलाल नेहरू

: २४ :

१०-१२-२९

प्रिय जमनालालजी,

मेरा इरादा है कि मैं वर्धा या तो १६ की रात को या १७ की सुबह पहुंचूं। वहां दो दिन रहूंगा। मैं नहीं चाहता कि मैं इन दिनों म कोई सभाओं में शरीक होऊं या म्यूनिसिपलिटी में एड्रेस लूं। मुझे तो सिर्फ बापू से मिलना है। मैंने वर्धा की म्यूनिसिपल कमेटी को यही लिख दिया है।

आपका,

जवाहरलाल नेहरू

: २५ :

वर्धा, २५-९-३१

प्रिय जवाहरलालजी,

स्वराज-भवन के ट्रस्ट के दस्तावेज का मजमून आपके १९ तारीख के पत्र के साथ मिला। इस सुझाव के पीछे जो भावना है, उसकी मैं कद्र करता हूं। मैं चाहूंगा कि इस दस्तावेज के मजमून और उसकी भावना की पवित्रता की रक्षा सावधानी के साथ की जाय। मैं यह नहीं चाहूंगा कि केवल भावना की रक्षा के लिए इसके असली मकसद को आगे चलकर किसी भी भांति हानि पहुंचे। इसमें निम्नलिखित सुझाव को सभी ट्रस्टियों के पास गश्ती चिट्ठी के रूप में भेजें—

ट्रस्टियों को यह अधिकार नहीं होगा कि वे इस जायदाद को बेचें या हस्तांतरित करें। लेकिन बहुत ही खास स्थिति में निम्न शर्तों पर ही जायदाद बेच या हस्तांतरित कर सकते हैं, जबकि इसका पूरा भरोसा हो

जाय कि ट्रस्ट का हित इसीमें है—

१. पं. जवाहरलाल नेहरू या उनके तत्कालीन उत्तराधिकारी उसे मंजूर करें।

२. बोर्ड का बहुमत उसके पक्ष में हो।

३. अ. भा. राष्ट्रीय महासभा की कार्यकारिणी उसे मंजूर करे।

मैं इसे सिर्फ एक सुझाव के रूप में भेज रहा हूं। अगर आप समझें कि आपने जो परिपत्र भेजा है, वह ठीक है तो मुझे उसमें कोई आपत्ति नहीं है।

मझे आशा है, आप अच्छी तरह होंगे।[1]

आपका,
जमनालाल बजाज

: २६ :

इलाहाबाद, २९-१२-३२

प्रिय जमनालालजी,

आपके दो पत्र मिले—एक कलकत्ते से और एक वर्धा से। हाल मालूम हुआ। तिवारी ने भी कुछ लिखा है और यह पूछा है कि जो हीरे का लाकेट है (मेरी तसवीर का) वह तस्वीर के साथ बेचा जा सकता है कि नहीं। यह लाकेट पापा ने माताजी को दिया था और तस्वीर खास उनके लिए बनवाई थी। उस तस्वीर को वह रखना चाहती हैं और मैं भी नहीं चाहता कि वह बेची जाय। इसलिए कृपा करके तिवारी से कह दीजिए कि तस्वीर को न बेचें। खाली हीरे के लाकेट को अलग करें।

आपसे और मुझसे जो बातें हुई थीं उसके सिलसिले में जो कुछ कार्यवाही मैं कर सकता था, वह मैंने कर दी। एक-दो छोटी बातें रह गई हैं, वह भी जल्दी कर दूंगा। लेकिन ज्यादातर बातें तो मेरे करने की नहीं थीं। ये बातें जनवरी शुरू में हो जायंगी। छुट्टियों के बाद और जो-जो खत लिखने के हैं, वे लिख दिये जायंगे।

---

[1] अंग्रेजी से अनूदित

मैंने कमला के जानने के लिए मुफस्सिल हाल सब लिख दिया है और उसको समझा दिया है। इंदू यहां एक हफ्ते के लिए आई थी। जहांतक उसका संबंध है उसको बता दिया है। अगर अब मुझे ज्यादा मौका न मिले तब भी कुछ हर्ज नहीं और सब बातें हो जायंगी। इंदू आज सुबह बंबई गई।

माताजी की तबीयत अच्छी है। हल्के-हल्के तरक्की होती जाती है।

आपका भाई,
जवाहरलाल नेहरू

: २७ :

इलाहाबाद, १०-१०-३३

प्रिय जमनालालजी,

आप हमारे लिए जो कुछ कर रहे हैं उसके बारे में यदि मैं आपके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रदर्शित करूं तो आशंका है आप इसे अनुचित समझेंगे। आप कहेंगे कि दोस्तों और भाइयों के बीच ऐसी जाहिरदारी नहीं होनी चाहिए। कुछ हद तक यह सही है, मगर फिर भी कमला और मैं दोनों महसूस करते हैं कि इसमें कोई जाहिरदारी की बात नहीं है और हमें आपके प्रति उस तमाम प्रेम, चिंता और ध्यान के लिए, जो आप हमारी सहायता के लिए और हमें अपने कुछ चिंता-भार से छुड़ाने के लिए काम में ला रहे हैं, आपके प्रति अपनी कृतज्ञता दिखानी ही चाहिए। आपके आने से और जो कुछ कार्रवाई आपने वहां की है उससे हमारा दिल बहुत हल्का हो गया है।

जवाहरलाल नेहरू

: २८ :

इलाहाबाद, २१-१२-३३

प्रिय जमनालालजी,

आपका बनारस से भेजा हुआ पत्र मिला। तिवारी के बारे में आपने ठीक किया—अपने निसबत वह स्वयं ही तय कर सकते हैं।

राजा राव के बारे में मैंने एक लंबा नोट लिखा है। उसमें सब वाकयात लिखे हैं। दो-एक बातें मुझे पहले मालूम नहीं थीं, वह अब सब कागज

देखने से मालूम हुईं। एक तो यह है कि राजगोपालाचारी ने उनको १ दिसंबर १९३२ से रुखसत किया था, लेकिन तनखाह उनको १५ अक्तूबर १९३२ तक की ही मिली थी—यानी डेढ़ महीने की नहीं मिली। यह मेरी राय में उनको हर सूरत से मिलनी चाहिए। इसलिए यह रकम मैं उनको दे रहा हूं। बिलफेल अपने पास से देता हूं, फिर आपके भजने पर हिसाब ठीक कर लूंगा। अपने नोट की नकल आपको भेजता हूं। इससे आपको सब मालूम हो जायगा।

रफी अहमद किदवई की गिरफ्तारी की खबर अभी मिली है। शायद मैं भी बहुत दिनों का मेहमान नहीं हूं। खैर, जो खास बातें मैं करना चाहता था वह सब हो गईं। कुछ जरूर बाकी हैं, लेकिन यह सिलसिला तो चला ही जाता है। आपकी मदद से जो बातें फैसल हुई हैं, उनसे बहुत इतमीनान है।

मेरे बाद महमूद जनरल सेक्रेटरी का काम करेंगे।

आपका,
जवाहरलाल नेहरू

: २९ :

बादन बाइलर, २८-१२-३५

प्रिय जमनालालजी,

आपका एक खत, अरसा हुआ, आया था। फिर बाद में एक दूसरा मिला, जिसमें आपने कुछ कमला के जेवर के बारे में लिखा था। माफ कीजियेगा, जवाब में इतनी देर हुई। मैं बेहद मशगूल रहा—कमला की वजह से और कई और कामों से। फिर यह भी खयाल होता था कि आपको कमला की खबरें तो बापू या महादेव से मिलती रहती होंगी। मैं उनको बराबर लिखता रहता हूं। यहां मैं करीब दिनभर कमला के पास ही रहता था। फिर रोज रात को बहुत देर तक काम करना पड़ता था। कुछ मेरी नई किताबों के सिलसिले में और बहुत-कुछ खत लिखने थे। हिंदुस्तान से तो खत आते ही हैं, लेकिन उनके अलावा यूरप से भी बहुत आते हैं। ज्यादा

लोगों की मुझपर इनायत होने का यह नतीजा है। काम सब खुद ही करना पड़ता है; क्योंकि कोई सेक्रेटरी या और मदद करनेवाला नहीं है। एक टाइप रायटर भी यहां लिया है। ज्यादातर २ वजे रात तक लिखा-पढ़ी करता रहता हूं। जब कभी बादन वाइलर से बाहर जाता हूं, जैसे लंदन या पेरिस गया तो वहां और भी दौड़धूप करनी पड़ती है।

आपने सुना होगा कि कमला की तबीयत कुछ दिन हुए बहुत खराब हो गई थी। यकायक बहुत नाजुक हालत हो गई और दो दिन तक यह मालूम होता था कि अब खात्मा करीब है। खैर, इस मुश्किल को पार किया, लेकिन अजहद कमजोरी है और कुछ-न-कुछ खतरा तो जारी ही है। आइंदा भी कुछ-बहुत आशा मुश्किल ही है। सिर्फ यही कहा जा सकता है कि बिलफेल खतरे से निकल आई।

बावजूद इन सब मुश्किलों के मेरा इरादा हिंदुस्तान वापस आने का है। मैं चाहता हूं कि फरवरी में आऊं ताकि कांग्रेस के कुछ दिन पहले पहुंच जाऊं। अभी तक मुझे कांग्रेस की तारीखें मालूम नहीं है।

इंदिरा कुछ दिनों से अपने पुराने स्कूल में स्विट्जरलैंड में पढ़ती है। वहां वह अगले साल के आखिर तक रहेगी। उसके बाद का अभी तक कुछ ठीक नहीं हुआ है। शायद फ्रांस में पढ़े या इंग्लैंड में। अभी तक उसका खर्चा यहीं से दिया गया है। लेकिन मैं चाहता हूं कि आइंदा वह अपने हिसाब से रुपया मंगवाये और अपना खर्चा खुद करे। मुझे ठीक मालूम नहीं कि उसकी स्कूल की फीस वगैरह क्या है और खर्चा क्या होगा। बिलफ़ेल मैं चाहता हूं कि यह इंतजाम हो जाय कि हर दूसरे महीने उसको पचास पौंड उसके हिसाब से भेज दिये जायं। यानी पहले पचास पौंड शुरू जनवरी में भेजे जायं फिर शुरू मार्च में और इसी तरह से। यह रुपया उसको सीधा स्विट्जरलैंड भेजा जा सकता है। रुपया तार से भेजने की कोई आवश्यकता नहीं है। हवाई डाक द्वारा उसकी सूचना दी जाय। शायद बेहतर हो, उसके बैंक में सीधा भेजा जाय। मुझे बैंक का नाम इस समय याद नहीं है। लोजान में है। इंदिरा से पूछकर मैं कल या परसों एक पत्र सीधा बच्छराज

कंपनी को भेज दूंगा। यह सब हिदायत उसमें लिख दूंगा। आपको सिर्फ सूचनार्थ लिख दिया।

इंदिरा को जितना रुपया भेजने को लिखता हूं, उसके अलावा अगर वह चाहेगी तो खुद लिखकर मंगवा सकती है।

जेवर के बारे में जो आपने पूछा, उसका जिक्र मैंने कमला से कुछ दिन हुए किया था। उसने कुछ साफ जवाब नहीं दिया। अच्छा होगा, अगर आप इस सवाल को अभी अटका रखिये। मेरी वापसी पर बातचीत हो जायगी।

बापू की तबीयत का हाल सुनकर फिक्र हुई थी। फिर कुछ इतमीनान हुआ कि अब ब्लड-प्रेशर कम हो गया। आशा है, आप अच्छे होंगे।

आपका भाई,
जवाहरलाल

: ३० :

लोजान, १०-२-३६

प्रिय भाई जमनालालजी,

आपका खत मिला था। मैं परसों लंदन से वापस आया। वहां करीब दो हफ्ते रहा और इतना मशगूल था कि खत लिखने का बिल्कुल वक्त नहीं मिलता था। मेरी गैरहाजिरी में कमला बादन बाइलर से यहां लाई गई। लंबा सफर ऐंबुलेंस में किया गया। मैंने यहां आकर फिर देखा तो कुछ थोड़ा पहले से अच्छा पाया। यों फर्क तो बहुत नहीं है और न जल्दी हो ही सकता है। फिर भी कुछ उम्मीद ज्यादा है। मेरा इरादा है कि इस महीने के आखिर में मैं यहां से रवाना होऊं और हवाई जहाज से हिंदुस्तान वापस आऊं। मार्च के पहले हफ्ते में शायद इलाहाबाद पहुंच जाऊं। सीधा इलाहाबाद ही जाऊंगा। वहां दो-चार दिन रहकर फिर बापू, राजेंद्रबाबू वगैरह से मिलूंगा। मेरी राय में पहले निजी बातें हो जायं, फिर जाब्ते की बैठक वर्किंग कमेटी की हो। आपसे भी उसी सिलसिले में मिलने की आशा है और वल्लभभाई से भी।

मैंने कुछ दिन पहले आपको कमला के कुछ जेवर के बारे में लिखा था। मैंने कमला से सलाह करके, यह मुनासिब समझा था, कि जो जेवर अभी बचा है उसको अभी न बेचें। जब मैं वापस आऊं तो आपसे सलाह करके उसका फैसला करें। लेकिन अब मैं सोचता हूं कि उसको बेच देना ही ठीक रहेगा। यहां खर्च की तो कोई इंतहा ही नहीं है और स्विट्जरलैंड तो खास तौर से महंगा मुल्क है। मरीज के इलाज में जो कुछ खर्च होता है वह तो है ही, लेकिन जब नर्सें रखनी पड़ती हैं तो यह दुगुना-तिगुना हो जाता है। आजकल और बहुत अर्से से कमला की हालत ऐसी है कि दो नर्सों की जरूरत है। मालूम नहीं कबतक यह सिलसिला जारी रहे। इसलिए यह बेहतर है कि और रुपयों का इंतजाम वक्त से कर दिया जाय। जो जेवर वहां है उसको मुनासिब दाम पर बिकवा दीजिये जैसे कि पहले, मुझे लिखा था और यह रुपया कमला के हिसाब में जमा करवा दीजिये।

मेरी वापसी पर आपसे बातें होंगी ही, लेकिन और कामों में हम सब फंसे रहेंगे, इसलिए इसका इंतजाम पहले ही हो जाय तो अच्छा है।

इंदू यहां से थोड़ी ही दूर रहती है। करीब एक घंटे का रास्ता है। कभी-कभी मिलने आ जाती है।

आशा है, आप अच्छे होंगे।

आपका भाई,
जवाहरलाल

: ३१ :

इलाहाबाद, २-५-३६

प्रिय जमनालालजी,

मेरी छोटी लाल पैंसिल ने मुझे फिर धोखा दिया है। वह ऊपर के कमरे में, जहां मैं ठहरा था, छूट गई है। अगर आपको मिली हो तो उसे मुझे भिजवा दीजियेगा।

मैं आज लखनऊ जा रहा हूं। दो दिन बाद वापस आऊंगा। फिर ता० २४ को बंबई जाऊंगा और २५ की सुबह पहुंचूंगा।

आपका भाई,
जवाहरलाल

: ३२ :

इलाहाबाद, ७-५-३६

प्रिय भाई जमनालालजी,

आपकी भेजी हुई पेंसिल पहुंची, धन्यवाद । अब उसकी ज्यादा हिफाजत रखूंगा ।

मैं १५ ता० को बंबई पहुंचूंगा । आशा है, वहां आपसे मुलाकात होगी । मौका मिला तो पेरिनबहेन और आपके साथ स्वराज-भवन के बारे में कुछ बातें करूंगा ।

आपका भाई,
जवाहरलाल

: ३३ :

अकोला, २३-५-३६

प्रिय जमनालालजी,

एक बात मैं आपसे पूछना भल गया । आपको याद होगा कि गढ़वाली सिपाही, जिनको सजा हुई थी, अब अधिकतर जेल से छूट गये हैं । ऐसे शायद १८ हैं । वे बहुत परेशान हैं । यों तो हम उनकी सहायता कभी-कभी कर देते हैं, लेकिन यह कुछ ठीक नहीं है और यह कबतक चलनेवाला है । मुनासिब तो यह है कि उनको हम कहीं नौकरी दिलवा दें । आप समझते हैं कि बंबई में कुछ इसका प्रबंध हो सकता है ? सबका नहीं तो कुछका ? वहां शायद उनको तनख्वाह अधिक देनी पड़े २०) या २५) से कम नहीं ।

कृपा करके मुझे लिखियेगा ।

आपका भाई,
जवाहरलाल

: ३४ :

वर्धा, १९-२-३७

प्रिय भाई श्री जवाहरलालजी,

आज आपको एक तार भेजा है, जिसकी नकल इसके साथ नत्थी है ।

श्री राजेंद्रबाबू यहां आज सवेरे आ गये हैं और इस माह के अंत तक

यहीं रहेंगे। श्री वल्लभभाई भी संभवतः ता० २२ को पहुंच जायंगे। श्री राजाजी को भी आज तार किया है। उनके भी आने की संभावना है।

ता० २४-२५-२६ को महिलाश्रम का उत्सव है। आश्रम की बहनों की यह हार्दिक इच्छां है कि आप इस उत्सव के अवसर पर उपस्थित रहें। मैंने इसी खयाल से तार भेजा है। अगर आप २४ के बजाय २५ को भी आ सकेंगे तो आइयगा। यहां थोड़ा विश्राम भी मिल जावेगा और महिलाश्रम की बहनों का उत्साह भी बढ़ेगा।

क्या सरोजबहन भी आपके साथ आ सकेंगी।

जमनालाल बजाज के वंदेमातरम्

: ३५ :

इलाहाबाद, १०-३-३७

प्रिय जमनालालजी,

मैंने यहां की प्रांतीय कांग्रेस कमेटी के कुछ लोगों से रूपनारायण और श्यामसुंदर शुक्ल के बारे में बात की। उनकी राय हुई कि इन दोनों को कांग्रेस के काम के लिए यहां रहना चाहिए। कुछ प्रबंध तो उन्होंने किया नहीं, न इस समय कर ही सकते हैं। मेरी भी राय है कि अगर यह दोनों यहां से चले गये तो कांग्रेस के काम में कुछ हानि होगी। इसलिए मैंने अपनी जिम्मेदारी पर उन दोनों से यहां ही ठहरने को कहा है।

मैं देहली १४ की सुबह पहुंचूंगा। १५ को सोमवार है, बापू के मौन का दिन। यह हम भूल गये थे। मैं आशा करता हूं कि बापू एतवार के दोपहर से मौन रख लेंगे।

आपका भाई,
जवाहरलाल

: ३६ :

बंबई, १२-४-३७

प्रिय भाई जवाहरलालजी,

आपका पत्र व लेख मद्रास में सम्मेलन समाप्त होने के दूसरे दिन मिला।

अगर एक रोज पहले मिल जाता तो उसका पूरा उपयोग होता। फिर भी मैं उसका उपयोग तो अवश्य करूंगा। आपके लेख की टाइप की हुई नकल आपको मिल गई होगी। मद्रास से भेजने के लिए कह आया था। इन दिनों आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता है, इसलिए चिंता रहा करती है। आपको कुछ समय के लिए पूरा आराम लेना चाहिए। चि. इंदू से अपने तथा उसके स्वास्थ्य के समाचार तथा आपने आराम लेने का क्या निश्चय किया, यह मुझे अवश्य लिखवा भेजें। सरदार कहते हैं कि वर्किंग कमेटी २६-२७ को वर्धा में रखने का निश्चय हुआ ह। एक तरह से तो यह तारीख ठीक है। २६ को बापू का मौन है। वह जल्दी छोड़ सकेंगे, इसकी व्यवस्था कर ली जावेगी। आप व चि. इंदू वर्धा किस तारीख व गाड़ी से आवेंगे, पहले से लिख भेजें।

मैं यहां से हुबली ता० १५ को जाऊंगा। वहां से बंबई जाते हुए वर्धा ता० २५ को पहुंचने का इरादा है।

मद्रास में गणेशन से बात हुई थी। मैंने श्री रामनाथ गोयनका से कहा है कि वह गणेशन से सब खुलासा कर मुझे लिखें। उसका पत्र आने पर आपको लिखूंगा।

श्री कमलाबहन के और तो सब जेवर बिक ही चुके हैं। मोती की कंठी भी बेच दी। केवल हीरे की चूड़ियां रह गईं। उनकी कम कीमत मिलती है। हाल में २२५० से ज्यादा में लेवाल नहीं मिल रहा है। अगर चि. इंदू की इच्छा उसका उपयोग करने की हो, तब तो घर में रहने देवें, अन्यथा २५००) में चि. सावित्री (कमल की सगाई हुई उस लड़की) के लिए रख ली जाय। आप इंदू से पूछकर लिखें।

अपने दफ्तर की कार्रवाई हिंदी में ज्यादा होवे, उसकी आप सूचना समय-समय पर देते रहेंगे तो ठीक रहेगा।

जमनालाल बजाज के वंदेमातरम्

: ३७ :

रेल में, ५–१२–३७

प्रिय जमनालालजी,

आपका २६ नवंबर का पत्र मुझे मिला। गिरधारीलाल का चैक दफ्तर-वालों ने धोखे से बगैर मेरे दस्तखत के अमृतसर भेज दिया।

बोराजी की तजवीज अच्छी है। बापू की ७०वीं वर्षगांठ पर उचित है कि कोई ऐसी पुस्तक तैयार की जाय, लेकिन मेरे लिए इसका संपादकीय बोझा उठाना बहुत कठिन है। यह बहुत मेहनत का काम है और मैं समय नहीं दे सकता। उसमें कुछ मैं लिख सकता हूं। इसलिए किसी और के सुपुर्द करना चाहिए। महादेव इस काम को अच्छी तरह कर सकेंगे।

आपका तार मुझे मिला था और उसका उत्तर भी मैंने दिया। यों तो मैं खुशी से अभ्यंकर के स्मारक में भाग लेने को तैयार हूं, लेकिन समय का सवाल है। मैं ३१ तारीख तक यू. पी. में फंसा हूं। शायद देहली भी जाऊं। उसके बाद वर्किंग कमेटी होगी। कहां और किस तारीख को, यह अभी निश्चय नहीं हुआ हैं। मैंने आपको इस बारे में लिखा भी था। इलाहाबाद वापस जाने पर और आप सबों के जवाब देखकर निश्चय होगा। बाद में जनवरी में मैं सीमा प्रांत जाना चाहता हूं।

आपका भाई,
जवाहरलाल

: ३८ :

खाली (अलमोड़ा) ११–३–३८

प्रिय जमनालालजी,

मैं कल यहां रणजीत के साथ पहुंचा, मुझे तो यह जगह बहुत पसंद आई है। पिछले दो बरस में रणजीत ने काफी मेहनत यहां की है और जंगल को काटकर बहुत सुंदर बाग और खेती बनाई है,। सैंकड़ों फलों के पेड़ दूर-दूर से और मुल्कों से मंगाये और हजारों फूलों के पौधे लगाये हैं। कुछ पुराने फलों के दरख्तों को, जो सूख गये थे, खूब धो-धोकर और ब्रश

से साफ करके फिर ताजा किया। एक-एक पेड़ और पौधे को बच्चों की तरह पाला है और उसकी परवरिश की है। पानी के लिए बहुत मेहनत करके कुछ छोटे चश्मों से जमा करके एक पम्प लगाया है, जो अपने-आप बगैर किसीकी देखभाल के दिन-रात चला करता है। इससे अब पानी की कोई दिक्कत नहीं हैं। इरादा है कि हवा की ताकत से फायदा उठाकर बिजली भी लगवा लें।

ऊन की कताई का भी अच्छा इंतजाम हो गया है और गरीब २० लोग यहां दिनभर कातते हैं। आसपास के गांव में २०० कातते हैं, वे ऊन यहां से ले जाते हैं। और भी बहुत मांग है, लेकिन काफी चर्खे और ऊन बिलफेल नहीं ह। कुछ लोग बहुत अच्छा कातते हैं। और मैं समझता हूं कि कोशिश से यहां अच्छा पश्मीना बन सकता है। बुनने का काम भी यहां शुरू होने वाला है। रणजीत का इरादा/यहां जल्दी एक स्कूल भी खोलने का है।

आपसे मुझे एक शिकायत है। आपने यहां के कुछ बहुत शानदार पेड़ कटवा दिये। मुझे बड़े दरख्तों से बहुत प्रेम है और उनका कटवाना कत्ल-सा मालूम होता है।

सप्रेम आपका,
जवाहरलाल

: ३९ :

इलाहाबाद, २६-५-३८

प्रिय जमनालालजी,

मैं आपको यह बताने के लिए यह पत्र लिखता हूं कि गणेशन ने मेरी आत्मकथा के तामिल संस्करण के लिए कुछ भी रकम अदा नहीं की। मैंने उसे फिर लिखा है कि उसके खिलाफ कार्रवाई करूंगा। तब कहीं उसने मुझे हिसाब भेजा कि उसपर मेरे ५००) से अधिक लेना निकलते हैं। उसने मुझे यह रकम १५ मई तक भेजने का वायदा किया था। उसने वह वादा पूरा नहीं किया और अब तो मैं बाहर जा रहा हूं। यह हिसाब सही

हैं या नहीं, इसका भी कुछ पता नहीं ।[1]

आपका,
जवाहरलाल

: ४० :

लंदन, १५-९-३८

प्रिय जमनालालजी,

मैंने आपको बहुत दिनों से लिखा नहीं है, लेकिन कुछ-न-कुछ मेरी खबरें आपको मिल जाती होंगी। आपने सुना होगा कि इंदिरा बुडापेस्ट में बीमार पड़ गई थी। इस बीमारी से मुझे बहुत परेशानी हुई। खासकर इस बात की फिक्र थी कि कहीं यह बढ़ न जाय। खैर, अभी तक तो उसका सिलसिला अच्छा ही रहा है । डाक्टरों की राय है कि बिलफेल कोई बढ़ने का खतरा नहीं है। फिर भी उसको अभी तीन हफ्ते तक अस्पताल में आराम करना होगा और फिर किसी और जगह जाकर एक महीने तक किसी कदर आराम करना होगा। इसके बाद, आशा है, ठीक हो जायगी।

इस बीमारी से कुछ मेरा प्रोग्राम बदल गया और कुछ खर्चा भी बढ़ गया। इस सिलसिले में मैंने आज बच्छराज कंपनी को लिखा है कि २०० पौंड और भेज दें। आजकल दुनिया की अजीब हालत है, और हरदम बड़ी लड़ाई का खतरा है। मालूम नहीं क्या होनेवाला है। मेरा इरादा है कि अगर इंदू की तबियत ठीक रही तो आखिर अक्तूबर तक हिंदुस्तान वापस आ जाऊंगा।

कमला-अस्पताल का क्या हाल है, मुझे मालूम नहीं। इस सिलसिले में मैंने आज जीवराज मेहता को खत भेजा है। आजकल हिटलर के निकाले हुए बहुत काबिल लोग यहां मारे-मारे फिरते हैं। हर तरह के हैं। मुझे खास तौर पर तीन औरतों की खबर मिली हैं, जिनकी बहुत तारीफ सुनी है। इनमें दो डाक्टर हैं। उम्र २७ और २९ है। बहनें हैं और वियना में डाक्टरी

---

[1] अंग्रेजी से अनूदित

पढ़ी और की है। इनकी बहुत इच्छा है कि हिंदुस्तान जायं और वहां काम करें। तनखाह का कोई सवाल नहीं है। करीब-करीब जो भी दी जायगी वह मंजूर कर लेंगी। मेरा खयाल है २००) या २५०) बहुत खुशी से स्वीकार करेंगी। मैं समझता हूं कि अगर ऐसी औरतें हमारे अस्पताल में रखी जायं तो हमको फायदा और किफायत दोनों होंगे।

तीसरी ४० की है—डाक्टर नहीं है, लेकिन बहुत अच्छी और तजुर-बेकार संगठनकर्ता है। उससे भी कामों में बहुत मदद मिल सकती है।

अस्पताल में तो शायद एक अच्छी औरत काफी हो, लेकिन और बहुत से कामों में और भी लग सकती हैं। बिलफेल तो अस्पताल के ही बारे में आपको लिख रहा हूं। अगर आपकी और जीवराज मेहता की राय हो तो मैं इन औरतों से मिलूं और अगर मुनासिब समझूं तो एक डाक्टर से तय करूं। मैंने जीवराज को लिखा है कि आपसे सलाह करके मुझे तार दे दें।

आपका,

जवाहरलाल

: ४१ :

इटारसी, २४-११-३८

प्रिय जमनालालजी,

यहां इटारसी में मुझसे तीन काश्मीरी (एक मुसलमान और दो हिंदू) मिले, वहां का सब हाल बतलाया। यहां से वर्धा बापू से मिलने जा रहे हैं, लेकिन बेवकूफी से बापू को कोई सूचना नहीं दी है। बापू ने उनको लिखा था और कुछ बातें पूछी थी। उनका जवाब देने वे खुद आये हैं और बहुत-से कागज लाये हैं। मैं समझता हूं कि उनके कुछ कागज बापू को भिजवाये जावें और जब बापू उनसे मिलना चाहें, वह उनके पास चले जावें।

काश्मीर का प्रश्न बहुत आवश्यक है और अगर आपको समय हो तो आप भी उसको कुछ समझ लीजिये। पटटाभि से भी इनको मिला दीजिये।

ये तीनों साहब इधर का कुछ हाल नहीं जानते। इसलिए इनको बता

दीजिए कि शहर में कहां ठहर सकते हैं । शायद तीन-चार दिन उनको ठहरना हो, जबतक बापू रखें ।

आपका भाई,
जवाहरलाल

: ४२ :

वर्धा, १४-८-३९

प्रिय भाई जवाहरलालजी,

मैं कल शाम को जयपुर से यहां बापू के बुलाने पर आया। आपसे मिलना नहीं हुआ। कमल ने मुझे फोन किया था कि उसकी भी इच्छा आपके साथ चायना जाने की है। कल नागपुर से वर्धा तक वह मेरे साथ आया। आपसे उसकी इस बारे में बात हुई, वह उसने मुझे कही। उसका कहना है कि आपने उसे साथ ले जाना स्वीकार कर लिया है। मैं आपसे नीचे लिखी बातें जानना चाहता हूं। कृपया पत्र पहुंचते ही तार द्वारा मुझे सूचना भेज देवें। तब मैं आपसे फोन से बात कर लूंगा।

१. आप बिना संकोच के व प्रसन्नता के साथ इसे ले जाना ठीक समझते हैं क्या? याने इसके साथ जाने से आप पर या चायनावालों पर बोझ व काम में बाधा आने का कोई डर तो नहीं है न?

२. अगर लड़ाई शुरू हो गई तो आपका व इसका उधर ही अटक जाना संभव है क्या?

३. चायना की यात्रा में व वहां जाने में विशेष जोखम है क्या?

४. खर्च अंदाजन क्या लगना संभव है?

५. आप कलकत्ते किस तारीख को और किस समय पहुंच रहे हैं; वहां से कब रवाना होनेवाले हैं?

आप तो समझ ही सकते हैं कि आपके साथ कमल को भेजने में मुझे खुशी ही हो सकती है। आपके साथ यह कुछ समय रह जायगा तो इसे बहुत-सा अनुभव मिलेगा। सेवा-भाव (देश-प्रेम) बढ़ेगा व सबसे ज्यादा लाभ यह होगा कि इसका आलस्य कम हो सकेगा, अगर आप इससे कड़ाई से

काम लेवेंगे तो। संकोच रखकर व्यवहार रखेंगे तो आपको भी कष्ट होवेगा व इसे भी विशेष लाभ नहीं पहुंचेगा। वैसे तो चायना के साथ मेरी भी सहानुभूति रही है। उससे भी यह आपके साथ जाय तो मुझे समाधान ही रहेगा। मैंने ऊपर जो पांच प्रश्न किये हैं, वह खासकर साफ तौर से समझ लूं, तो जानकीदेवी व सावित्री आदि को समझाने में मुझे सुभीता रहेगा।

आपकी ओर से सूचना मिलने पर, अगर संभव हुआ तो, मैं आपसे कलकत्ते में मिलने का प्रयत्न करूंगा या इलाहाबाद से उसी ट्रेन से साथ होना संभव हुआ तो वैसी कोशिश कर देखूंगा। उस समय जयपुर की परिस्थिति व मेरे स्वास्थ्य के संबंध में भी थोड़ी बातें हो जायंगी। आपका प्रेम व संबंध तो हमेशा ही याद रहा करता है व उससे मुझे सुख व संतोष भी मिलता है।

इंदू वहां राजी होवेगी। मुझे उपाध्याय के पास से उसका पता लिखवा देवें। मैं जल्दी ही जयपुर जानेवाला हूं। वहां के कार्य में ठीक सफलता मिलने की आशा हो रही है।

जमनालाल बजाज के वंदेमातरम्

: ४३ :

इलाहाबाद, १६-८-३९

प्रिय जमनालालजी,

आपका पत्र मिला। मैं जब वर्धा से चल रहा था, तब कमल ने मुझसे कहा कि वह भी मेरे साथ चीन चलना चाहता है। मैंने कहा कि आप अभी छूटे हैं। ऐसे मौके पर उसका चलना शायद उचित न हो, लेकिन अगर आप आज्ञा दें तो मुझे उसमें कोई आपत्ति नहीं है। अब उसका तार मेरे पास आ गया ह कि वह नहीं जा सकता। आपके सवालों का जवाब देने की आवश्यकता नहीं रही और न मैं पूरी तौर से दे ही सकता हूं। मैं नई जगह जा रहा हूं और कुछ मालूम नहीं वहां क्या करूंगा और कितना खर्चा होगा। वहां एक महीना रहने का इराद है। शुरू अक्तूबर में वापस आऊंगा।

आशा है, आपकी टांग की तकलीफ अब अच्छी हो रही होगी।

आपका भाई,

जवाहरलाल

: ४४ :

दिल्ली ८-७-४०

प्रिय जमनालालजी,

नंदनजी ने मुझसे कहा है कि वह वर्धा जा रहे हैं, इसलिए मैं उनको यह रुक्का आपके लिए देता हूं। यहां आपसे अलग बातें करने की फुर्सत नहीं मिली। अब, जैसा आपने कहा है, बंबई में मौक निकाला जायगा। पूना में २५—२६ को वर्किंग कमेटी होगी। इसके दो दिन पहले मैं बंबई जाऊंगा, यानी बंबई २३ के सुबह पहुंचूंगा और २४ की रात तक रहूंगा। अगर आप इन दिनों वहां रहें तो मिलूंगा। मेरी अपनी बातें तो मैं आपसे कर लूंगा और जो कुछ कागज वगैरह हैं वे ले आउंगा।

मैं चाहता था कि आप नंदनजी से 'नेशनल हेराल्ड' के बारे में बातचीत कर लीजिए। वह उसके डाइरेक्टर हैं और सब हाल बखूबी जानते हैं।

मैं एक रुक्का उमा के लिए भेजता हूं। यह उसको दीजियेगा।

आपका भाई,

जवाहरलाल

: ४५ :

इलाहाबाद, २६-१-४२

प्रिय जमनालालजी,

आपका पत्र मिला। स्टेटस पीपल्स कान्फ्रेंस के खर्च के बारे में बगैर बजट देखे मेरा कुछ कहना कठिन है। जो रकम आपने लिखी है, उसमें मालूम नहीं कि साप्ताहिक का खर्च भी है कि नहीं। छापने का खर्च आजकल बढ़ा हुआ है, अगर हम कुछ छोटी पुस्तकें या रिपोर्ट निकालें तो उसमें काफी खर्च होगा।

इंदू के बारे में यहां सब जनों की राय है कि आनंद-भवन ही में शादी

करनी चाहिए। बापू से मैंने कहा था इसलिए अब यही निश्चय समझना चाहिए। तारीख शायद मार्च के तीसरे या चौथे सप्ताह में होना चाहिए। इसके पहले तो नहीं होगी।

ब्रजलाल की राय है कि हमें वैदिक रीति से शादी करनी चाहिए, जैसे उन्होंने अपने लड़के की की थी। इसमें कुछ दिक्कतें जरूर हैं, खासकर कानूनी। बापू ने इस राय को पसंद किया। मुझे भी कुछ ठीक मालूम होती है। फिरोज के खानदान वालों से मैंने कहा है। उनको बहुत पसंद नहीं है। लेकिन सोच कर जवाब देंगे, ५–६ दिन बाद। जब कुछ तय होगा, मैं आपको लिखूंगा।

आपका भाई,
जवाहरलाल

: ४६ :

जनवरी; १९४२

भाई जवाहरलालजी,

आशा है, आप सब इंदू कुशलपूर्वक पहुंच गये होंगे। श्री बलवंतरायजी का एक पत्र आया है। उन्होंने लिखा ह, वल्लभभाई से मिलकर अगर कोई महत्व की बात हुई तो लिखेंगे। उन्होंने साथ में, जिनसे पैसे लेने बाकी हैं, उनकी फेहरिस्त भेजी है। वह रकम १५००) है, जोकि यहां से ज्यादा-से-ज्यादा १०००) सोची गई थी। आफिस के खर्च का बजट भी १२०००) का उन्होंने भेजा है। मेरी राय में फिलहाल आफिस का बजट ५००) मासिक से अधिक नहीं होना चाहिए। आप इस बारे में अवश्य विचार करेंगे। चि. इंदू का कार्यक्रम निश्चित हो जाने पर मुझे सूचित करेंगे ही।

जमनालाल बजाज के वंदेमातरम्

: ४७ :

वर्धा, ९-२-४२

प्रिय भाई जवाहरलालजी,

आपका पत्र तो समय पर मिल गया था। इंदू का विवाह आनंद-भवन में करने का निश्चय रहा सो ठीक। विवाह की निश्चित तारीख की मुझे

सूचना भेज देवेंगे ।

विवाह वैदिक रीति से करना तो मुझे भी पसंद है, परंतु कानूनी अड़चन के कारण मेरी राय तो है कि विवाह रजिस्टर कराके बाद म वैदिक विधि भी करा ली जाय । देवीदास-लक्ष्मी का विवाह इसी प्रकार पूना में हुआ था। आप जो भी निश्चय करेंगे, मुझे लिखेंगे ही।

मेरा फरवरी के आखिरी तक तो यहीं रहना संभव है। बाद में बंबई जयपुर जाना पड़े।

जमनालाल बजाज के वंदेमातरम्

: ४८ :

इलाहाबाद, ६-३-२१

प्रिय जमनालालजी,

मैं इस पत्र के साथ दो पत्रों की नकलें भेजता हूं, जिनमें एक तो है श्री बोमनजी का महात्माजी को लिखा हुआ और दूसरा है महात्माजी का मेरे नाम । मुझे श्री बोमनजी द्वारा श्री गंगाधरराव देशपांडे को दिये गये १००००) रुपये के बारे में कुछ भी पता नहीं है। श्री बोमनजी का इस प्रकार रुपया देना उचित नहीं था। उन्हें वह रुपया आपको भेजना चाहिए था जिससे वह वर्किंग कमेटी के आदेशनुसार मेरे द्वारा खर्च होता। अ० भा० तिलक स्वराज्य फण्ड को दी गई इस रकम में विद्यापीठ को दिया हुआ दान शामिल करना बिल्कुल उचित नहीं है। महात्माजी चाहते हैं कि मैं इस स्थिति का विरोध करूं, पर उसे असरकारक रूप में कैसे किया जाय यह मैं नहीं समझता। मैं तो सिर्फ यही कर सकता हूं कि श्री बोमनजी को लिखूं और यही मैं कर रहा हूं। आप भी क्या कृपया ऐसा करेंगे ? [1]

आपका,
मोतीलाल नेहरू

---

[1] अंग्रेजी से अनूदित

: ४९ :

इलाहाबाद, ४-८-२५

प्रिय जमनालालजी,

मुझे आशा है कि आप डा. चोइथराम का स्टेट कौंसिल का चुनाव संपन्न कराने के लिए जरूरी कदम उठा रहे हैं। हमें मौजूदा मेंबर को अपदस्थ करने की पूरी कोशिश करनी चाहिए। आप जानते हैं कि वह सरकार के सबसे पक्के साथियों में से हैं। डा. मुंजे, श्री अभ्यंकर और अन्य लोग हमें इसमें भरसक मदद देंगे।

स्टेट कौंसिल के चुनाव के सिलसिले में मैं आपको एक और तकलीफ देना चाहता हूं। बनारस के राजा मोतीचंद और कानपुर के मेजर रामप्रसाद दूबे के खिलाफ हमने इलाहाबाद के डा. कैलासनाथ काटजू को स्वराज्यवादी उम्मीदवार खड़ा किया है। राजा तो स्टेट कौंसिल की बैठकों में लगातार गैर-हाजिर रहते हैं और उनकी मनोवृत्तियां पूर्णतः सरकार के पक्ष में हैं। इस चुनाव-क्षेत्र के अधिकांश मतदाता इन्कमटैक्स (आय-कर) देनेवाले आपके समाज के लोग हैं और उनका आपके प्रति ऊंचा सम्मान भाव हैं राजा मोतीचंद बहुत-कुछ उन्हींपर निर्भर करते हैं। इस चुनाव-क्षेत्र में निम्नलिखित जिले शामिल हैं —

बनारस डिवीजन—बनारस, मिर्जापुर, जौनपुर, गाजीपुर, बलिया। गोरखपुर डिवीजन—गोरखपुर, बस्ती, आजमगढ़। इलाहाबाद डिवीजन—इलाहाबाद, कानपुर, फतेहपुर, इटावा, फर्रुखाबाद। झांसी डिवीजन झांसी, बांदा, हमीरपुर, जालौन।

इनमें से कानपुर, फर्रुखाबाद, मिर्जापुर और गोरखपुर मारवाड़ी-केंद्र हैं। इन जिलों के विशेष प्रमुख लोगों को आप जानते हैं और शायद अन्य जिलों के भी। मेरा अनुरोध है कि आप जरा मेहरबानी करके उन्हें लिख दें कि वे अपने और अन्य समाजवालों के मत डा. कैलासनाथ काटजू को दें और दिलायें।

मेजर रामप्रसाद दुबे इंदौर राज्य के मेजर हैं और राज्य ने उनकी

जायदाद जब्त कर ली है। वह कानपुर के पुराने बाशिंदे हैं और हाल ही में हाईकोर्ट में वकालत करने लगे हैं। वह बड़े महत्त्वाकांक्षी हैं और सरकारी अधिकारियों से उनका गहरा दोस्ताना है।

इसमें शक नहीं कि हम अपना उम्मीदवार खड़ा करने में कुछ पिछड़ गये हैं और विरोधी उम्मीदवारों ने कुछ मतदाताओं से संपर्क भी स्थापित कर लिये हैं और संभवतः उन्होंने उन्हें मत देने के वादे भी कर दिये हैं। किंतु ऐसा करने में उन्होंने उन दो व्यक्तियों के बीच अपनी पसंदगी की है जो पहले से चुनाव-क्षेत्र में खड़े हैं और ऐसे मामले में चुनाव-वादा कोई मतलब नहीं रखता, जबकि अधिक योग्य और देशभक्त अंत में मुकाबले में आ जाय। कृपया जिन मतदाताओं को आप लिखें उन्हें यह बात बतला दें।

मुझे आशा है कि आप भोमबल को भूले नहीं होंगे। क्या महादेव ने आपको उन दरवाजों और खिड़कियों के नकशे और तफसील दी है, जो मुझे अपने नये मकान के लिए चाहिए।

मैं ८ तारीख को तीन दिन के लिए कलकत्ता जा रहा हूं और कलकत्ते से लौटते ही शिमले के लिए रवाना हो जाऊंगा।

आप यह जानकर खुश होंगे कि अब मैं पहले से बहुत अच्छा हूं। दमा के दौरे अब नहीं आते हैं और मैं अच्छी नींद ले सकता हूं, लेकिन अब भी मैं बहुत कमजोर हूं।

जवाहर ५ तारीख को कलकत्ता जा रहा है और वहां से महात्माजी के साथ जमशेदपुर जायगा, जहां मजदूरों के झगड़े का समझौता कराना है।[1]

आपका,
मोतीलाल नेहरू

---

[1] अंग्रेज़ी से अनूदित

: ५० :

वर्धा १२-८-२५

श्रद्धेय पंडितजी,

जमशेदपुर से १० तारीख को यहां लौटने पर आपका ४ अगस्त का पत्र मिला। मेरा अनुमान है कि 'डा. चोइथराम' लिखने से आपका मतलब है नागपुर के डा. चोलकर। मैं डा. चोलकर को व्यक्तिगत रूप में अच्छी तरह जानता हूं और उनके देश-प्रेम और कार्य का सम्मान करता हूं। मैं उनके चुनाव के लिए अपनी भरसक कोशिश करूंगा। फिर भी मैं आपके विशेष विचारार्थ इस संबंध में कुछ सुझाव पेश करना चाहता हूं। दुर्भाग्य-वश हमारे प्रांत में ब्राह्मण, अब्राह्मण और महाराष्ट्रीय और गैर-महाराष्ट्रीय भावनाए हाल में दिखाई देने लगी हैं और ऐसा लगता है कि प्रभावशाली अब्राह्मण उम्मीदवार हो तो उसे सफलता मिलना अधिक आसान है। यह तो एक सुझाव मात्र है, बाकी इस मामले में स्वराज्य पार्टी ही सबसे अच्छा फैसला कर सकेगी।

जबलपुर के श्री जमनादासजी ने अपने लिए समर्थन का अनुरोध किया है। उसका जो जवाब मैंने भेजा है, उस खत की नकल मैं आपको भेज रहा हूं। आपके प्रांत के अन्य उम्मीदवारों के बारे में मुझे इसमें संदेह है कि मैं आपकी अधिक मदद कर सकूंगा। आपके प्रांत में मेरे समाज के लोगों में मेरा नाम परिचित होने पर भी, मुझे भय है कि, मैं उनसे इतना परिचित नहीं हूं कि जिससे उन्हें ऐसे मामले में पर्याप्त रूप से प्रभावित कर सकूं। फिर भी मैं कानपुर के सेठ रामकुमार नेवटिया (जिनकी गाजीपुर जिले में कुछ संपत्ति भी है) को लिखता हूं कि वे अपना संपूर्ण समर्थन स्वराज्य पार्टी के उम्मीदवार को प्रदान करें और ऐसे मतदाताओं के नाम सूचित करें, जिन्हें में सम्भवतः प्रभावित कर सकूं। उनका पत्र आने पर मैं ऐसे मतदाताओं को व्यक्तिगत रूप में लिखूंगा। इस बीच यदि आप ऐसे मतदाताओं के पतेसहित सूची भेज दें, जिन्हें मैं प्रभावित कर सकता होऊं तो, उस दिशा में मैं कुछ काम कर सकता हूं। कानपुर के सेठ रामकुमारजी

को मैंने जो पत्र भेजा है उसकी नकल आपको भेज रहा हूं। आप ठीक समझें तो उनसे सीधा पत्र-व्यवहार कर सकते हैं।

मुझे यह जानकर खुशी हुई कि आपका स्वास्थ्य अब पहले से बेहतर है। मुझे भोमबल की बात अवश्य याद है, पर मैंने उसके बारे में खास विचार नहीं किया; क्योंकि मेरा यह खयाल रहा कि आप जब अच्छी तरह उसकी इच्छाओं और योग्यताओं को जान लेंगे तब जरूरी समझने पर ही मुझसे सलाह लेंगे।

आपको जिन दरवाजों और खिड़कियों की जरूरत है, उनका विवरण मैंने महादेवभाई से प्राप्त किया है। मैंने इस काम की सारी जिम्मेवारी श्री खेतान पर डाल दी, जिन्होंने आवश्यक वस्तुएं खरीदकर इलाहाबाद भेजने की व्यवस्था करली है। आप कलकत्ते जानेवाले थे, तब वे आपसे स्वयं ही मिलना चाहते थे और मुझे आशा है कि अबतक आपको उनसे इसके बारे में सबकुछ मालूम हो गया होगा?

मैं आपको यह पत्र हिंदी में लिखता तो खुशी होती, लेकिन मैंने आपको अनावश्यक रूप में कष्ट देना ठीक नहीं समझा।[1]

आपका,
जमनालाल बजाज

: ५१ :

इलाहाबाद, १६-८-२५

प्रिय जमनालालजी,

आपके पत्र के लिए धन्यवाद। हां, मेरा मतलब डा. चोलकर से ही था, डा. चोइथराम से नहीं। आपका यह कहना ठीक है कि पार्टी की ओर से सिर्फ एक उम्मीदवार खड़ा होना चाहिए। मैं जबलपुर के सेठ जमनादासजी को लिख रहा हूं और श्री राघवेंद्र राव तथा डा. मुंजे को भी कि वे आपसे सलाह करें। रहे मेरे प्रांत के अन्य उम्मीदवार, सो उनके बारे में

---

[1]अंग्रेजी से अनूदित

आपने जो कदम उठाये हैं, मेरी समझ में, इस समय तो वही काफी हैं, मैं डा. कैलासनाथ को कह रहा हूं कि वह आपको अन्य मतदाताओं के नाम और पते भेजें, क्योंकि आज मैं शिमले के लिए रवाना हो रहा हूं। मैं कलकत्ते गया था। वहां से लौटने के पहले श्री खेतान का कोई संदेश आदि कुछ नहीं मिला। लेकिन मुझे उम्मीद है कि वह आवश्यक कार्रवाई करेंगे।

मैं सितंबर के अंतिम सप्ताह में आपसे पटने में मिलने की आशा करता हूं।[1]

आपका,

मोतीलाल नेहरू

: ५२ :

बंबई, २३-७-३६

प्रिय जमनालालजी,

सस्नेह सविनय वंदे। वर्धा से जाने के बाद आपको कोई पत्र मैंने अबतक नहीं भेजा। आपको और श्रीमती[2] को धन्यवाद देने में संकोच होता है। आपका अनुपम अनुग्रह है। थोथे शब्द क्या लिखूं? यह उदारता मेरे ऊपर बनी रहे यही विनम्र निवेदन है।

चंद्रदत्त का विद्यापीठ खुल गया था। इस कारण वह इस समय न आ सका। फिर अवसर मिलने पर आपको कष्ट देगा।

इसके साथ मलखानसिंह की चिट्ठी-मय उसके भाई की अरजी के आपको भेज रहा हूं। मलखानसिंह को अभी दो वर्ष की सजा इस अपराध में हुई है कि उसने एक क्रांतिकारी युवक को रात में पानी और मिठाई दी और इस तरह उसे सहायता पहुंचाई। इस हुक्म पर अपील हो रही है। मैंने उसे लिख दिया है कि मैं उसके पत्र को आपके समक्ष भेज रहा हूं और आप, यदि जगह अब भी खाली है और उनका भाई इस काम के योग्य और उपयुक्त है, तो इस अर्जी पर विचार करेंगे।

---

[1] अंग्रेजी से अनुदित [2] श्रीमती जानकीदेवी बजाज

बापूजी को साष्टांग प्रणाम और सबको वंदे।

मैं ता. २८ तक यहां रहूंगा। इस बीच आपके यहां आने की कोई संभावना है?

विनीत,
गोविंद वल्लभ पंत

: ५३ :

कैंप दिल्ली १-१०-३८

प्रिय श्री पंतजी,

शेखावाटी बीकानेर की तरफ इस वर्ष बहुत ज्यादा अकाल सुना है। आज तक यहां की गौओं को झाड़ के पत्ते आदि खिलाकर वहां के लोगों ने किसी तरह संभालने की कोशिश की। परंतु अब वे लोग वर्षा से पूरी तरह निराश हो गये हैं। फलतः पशु हजारों की तादाद में बाहर जा रहे हैं। युक्त प्रांत के बुलंदशहर, मेरठ और मथुरा इन तीन जिलों में चराई के बन काफी हैं, ऐसा सुना है। यदि इन जानवरों के चराई का आप इन जिलों के बनों में कोई प्रबंध करा सकें तो कृपया सूचित कीजिएगा। पत्र वर्धा देवें।

जमनालाल बजाज के वंदेमातरम्

: ५४ :

बंबई, ५-१-३९

प्रिय जमनालालजी,

सस्नेह सादर वंदे। मैंने आपसे फैजपुर में जिक्र किया था। गोरखपुर में कई खांड के कारखाने हैं। उनसे, यदि आप वहां आने का कष्ट कर सकें, तो अच्छी रकम मिल जायगी, यह मेरा विश्वास है। आपको असुविधा अवश्य होगी और आपको कभी अवकाश भी नहीं मिल सकता। निरंतर कामों का तांता बंधा रहता है। परंतु हमारे आर्थिक संकट को मिटाना भी आप ही के हाथ है। आप यदि इस समय तीन दिन भी दे देंगे तो हमारा बोझ अवश्य हलका हो जायगा। आशा करता हूं कि आप इस निवेदन को स्वीकार करेंगे।

विनीत,
गोविंद वल्लभ पंत

: ५५ :

प्रयाग, चैत्रकृष्ण १, १९७६ (अप्रैल, १९२०)

प्रिय जमनालालजी,

अनेक आशीष। मैं आपको इतने दिनों तक पत्र नहीं लिख सका, इसका कारण केवल कार्यों का बाहुल्य था। आपसे मिलने की बहुत इच्छा हो रही है और मैं आशा करता हूं कि मैं दो महीने के भीतर आपसे मिलूंगा।

चि. राधाकांत को आप जो बड़े भाई के समान प्रेम से उपदेश करते और रोकते हैं इससे मुझको बहुत प्रसन्नता होती है। मैंने भी उन्हें वही सम्मति दी है जो आपने दी है, मुझसे उन्होंने कहा है कि वह आपकी राय के विरुद्ध कोई व्यापार का काम नहीं करेंगे।

मैं चाहता हूं कि आप काशीजी आवें और जो कुछ कार्य हो चुका है उसको देखकर प्रसन्न हों। इस कार्य के लिए मुझे इस वर्ष चालीस लाख रुपये आवश्यक हैं। इसके संग्रह करने के लिए मैं १५० दिन की यात्रा अप्रैल में प्रारंभ करूंगा। बंबई, कलकत्ते में १५–१५ दिन रहूंगा। आपको वहां मेरे साथ देश और धर्म की रक्षा और उन्नति के लिए भिक्षा मांगने में सहायता देनी पड़ेगी। समय से आपको सूचना दूंगा।

और सब यहां कुशल है। अभी दिल्ली जाता हूं। कुशल समाचार लिखियेगा।

आपका हितचिंतक,
मदनमोहन मालवीय

: ५६ :

बंबई, ३०-१-२६

पूज्य श्री बाबूजी,

सविनय प्रणाम।

आपका पत्र ता० २७ जनवरी का मिला। शुद्ध खद्दर के दुपट्टों की व्यवस्था करके शीघ्र भिजवाने का प्रबंध कर रहा हूं। सोमवार तक भिजवा सकूंगा। एकदम बढ़िया इतने महीन तो तैयार नहीं है। श्री

जैराजनीजी, खादी-भंडार प्रिंसेस स्ट्रीटवाले आपसे पत्र-व्यवहार करके तलाश कर लेवेंगे। उस मुताबिक माल भेजने का खयाल रखेंगे।

श्री पूज्य ध्रुवजी का पुस्तकों के बारे में पत्र आज आया है। उनके लिखे मुताबिक व्यवस्था कर देने का विचार है।

आपने मुझे इस समय दिल्ली आने के लिए लिखा, सो मुझे दूसरे कामों की रुकावटें हैं; तथापि आपका तथा भाई घनश्यामदासजी का वहां रहना संभव हो, तो मुझे अवश्य तार कर देवें। वर्धा में १०-१२ रोज के लिए आने का प्रयत्न करूंगा। आपको थोड़ा समय देना ही पड़ेगा।

जमनालाल बजाज का प्रणाम

: ५७ :

बंबई, १५-१२-३०

श्रीयुत पूज्यवर भाईजी को प्रणाम,

प्रयाग में पूज्य बाबूजी की तबियत अब अच्छी है। अब वह जेल के अहाते में घूमने लगे हैं। जेल का अधिकारी वर्ग उनका बहुत ज्यादा खयाल रखता है। और जितना अधिक-से-अधिक शक्य है, उतना उन्हें आराम पहुंचाने का प्रयत्न करता है। चि. गोविंद वहीं साथ में ही रहते हैं। इससे बाबूजी को बहुत सुभीता है। भाई जवाहरलालजी दूसरे ब्लाक में हैं, पर दिन में आपस में मिलने की सुगमता है। बाबूजी से हमने आपकी सब बातें कह दी थीं। आपको उन्होंने हार्दिक आशीर्वाद दिया है। घनश्यामदासजी को उन्होंने खूब बड़ा एक पत्र लिख दिया था। जेल में उन्होंने ५०–६० रामायण, हनुमान-चालीसा मंगाकर सब कैदियों को बांटी हैं। सुबह-शाम वे लोग पढ़ते हैं। स्वयं भी प्रायः रोज बैठकर सबको पढ़ाते हैं। इससे सब लोग बड़े प्रसन्न हैं। बाबूजी खुद भागवत, रामायण, महाभारत व उपनिषद् का पाठ खूब करते हैं। और उससे बड़े प्रसन्न हैं।

मैं अभी यहां काम करूंगा। यहां की स्थिति बड़ी शोचनीय है, आपस में झगड़ा बढ़ रहा है। जहांतक होता रहा है, दोनों पक्ष की सुनकर कुछ ठीक

करने का प्रयत्न कर रहा हूं। मैं यहीं रह सकूंगा या यू. पी जाना पड़ेगा, यह अभी निश्चित नहीं कर सकता। काम के ऊपर निर्भर रहेगा। ईश्वर की दया से और आप सब वड़ों के आशीर्वाद से जब जो काम जहां भी करता हूं, उसमें संतोषजनक परिणाम निकलता है और प्रायः सभी खुश होते हैं। जब और जहां काम करना पड़ेगा वहां उत्साह से करूंगा। आगे ईश्वर मालिक है।

मैं यहीं दुकान पर रहता हूं। शेष बातें फिर लिखूंगा। आशा है, आप आसन रोज करते होंगे।

आपका,
मुकुंद मालवीय

: ५८ :

लखनऊ, ५-२-३६

प्रिय जमनालालजी,

आपने जो कुछ सहायता 'गोला-मिल' से दिलवाई उसके लिए मैं बहुत शुक्रगुजार हूं और श्री रामेश्वरजी को भी हम लोगों ने कष्ट दिया। उन्हें गोरखपुर में एक जगह मिलवालों के पास ले गये। वहां से भी थोड़ी-बहुत सहायता मिली। मगर खर्चा ऐसे कामों में बहुत ही होता है। जैसे हालात यहां हैं, उनमें जो किफायत हो सकती है वह भी नहीं होने पाती। साथ ही कांग्रेस का भविष्य कायम रखने के लिए जो कुछ मुझसे हो सका, मैं कई महीनों से कर रहा हूं और आशा करता हूं कि जो कुछ सहायता आपसे हो सकती है आप पूरे तौर से हमारी सहायता कीजिएगा।

मेरा यह खयाल है कि अगर महात्माजी की सेहत इस काबिल हो कि वह प्रदर्शिनी का उद्घाटन स्वयं कर सकें तो हमको बहुत मदद पहुंचेगी। और जैसे हालात मैंने उनकी तंदुरुस्ती के बारे में सुने हैं, मुझे पूरी आशा है कि वह इस कार्य को बगैर किसी हानि के कर सकेंगे, बशर्ते कि आप उनको और

कामों में मेहनत करने से रोक सकें। मैंने सुना है कि वह दूसरे कामों में अब कुछ पड़ने लगे हैं। इस बारे में आपकी सहायता से पूरी कामयाबी हो सकती है।

मैंने एक खत महात्माजी को स्वयं लिखा है—आज की ही डाक से, जिसकी नकल इस खत के साथ आपके पास भेजता हूं। मेरी यह दरखास्त है कि आप जल्द-से-जल्द महात्माजी से मिलकर इस बारे में सिफारिश कर दें। नहीं तो मुझे डर है कि उनके दूसरे लिफ्टेनेंट्स, जो यहां के हालात से आपके जितनी भी वाकफियत नहीं रखते हैं, और मेरी कठिनाइयों से जानकार नहीं हैं, इस कार्य को बहुत जरूरी न समझकर, कहीं महात्माजी को उल्टी सलाह न दे दें।

आशा है, आप इस पत्र का जवाब शीघ्र ही देंगे, क्योंकि अगर यह बात जल्द तय हो जाय कि महात्माजी उद्घाटन करेंगे तो हमको हर तरह की मदद हर तरफ से मिलेगी।

हमको झण्डे के लिए अभी तक कोई बल्ली वगैरा अच्छी नहीं मिली। गोला-मिल में पचास-साठ फिट एक ऊंची बल्ली मौजूद है। मगर चूंकि रामेश्वरजी कलकत्ते गये हैं और मालूम नहीं वे वहां कबतक पहुंचेंगे, इसलिए आपसे दरखास्त है कि आप वहां तार कर दें कि वह बल्ली हमें १५ अप्रैल तक के लिए फौरन दे दें।

मैं स्वयं आपसे और महात्माजी से एक साथ उद्घाटन के बारे में मिलना चाहता हूं, इसलिए लिखिए कि जल्द-से-जल्द कहां और कब मौका मिल सकता है।

आपका दर्शनाभिलाषी,
मुरारीलाल डाक्टर

: ५९ :

कलकत्ता, ३-११-३४

पूज्य काकाजी,

आपको पत्र का तीसरा नंबर मिला ही होगा, चौथा आज भेज रहा हूं।

यद्यपि विज्ञापन भी कुछ नहीं किया जा सका, फिर भी लोगों ने पत्र की काफी कदर की है। करीब-करीब हर अंक के बारे में अखबारवाले कुछ-न-कुछ निकाल ही देते हैं।

कंपनी अभी तक रजिस्टर नहीं हुई है। कुछ देर लगेगी। विज्ञापन और बिक्री-संबंधी संगठन अभी ठीक नहीं है।

विज्ञापनों की हमें जरूरत है।

उसके साथ-साथ अगर अभी शुरू में हमें रुपये नहीं मिले तो पत्र को टिका नहीं सकते हैं, बढ़ाना तो दूर रहा। १०० रुपये प्रति अंक में खर्च होता है। तीन महीने में, मुझे पूरा विश्वास है, पत्र स्वावलंबी हो जायगा। लेकिन अभी ही अगर मर गया तो मर गया।

मैं आपको इस संबंध में अभी नहीं लिखना चाहता था। कंपनी बन जाती तो आप स्वयं ही जो ठीक समझते करते। लेकिन अब आखिरी हद पर हम लोग पहुंच गये हैं, तो आपको अपना आखिरी सहारा समझकर मैं लिख रहा हूं।

१००० कापियों के सिर्फ कागज, प्रिंटिंग और बांधने में ९० रुपये देने पड़ते हैं। पिछले दो अंक उधार पड़ गये हैं।

जो कुछ आप करें शीघ्र ही करें और पत्रोत्तर जल्दी दें तो अच्छा होगा। पूज्य माताजी को प्रणाम।

आपका,
राममनोहर लोहिया

: ६० :

कलकत्ता, ३१-७-३९

पूज्य जमनालालजी,

बच्छराज जमनालाल की तरफ से मेरे पास ७१० रुपये ४ आने का एक प्रामिसरी नोट दस्तखत करने के लिए आया है। जहांतक मुझे याद पड़ता है, यह वही रुपया है जो आपने मुझे १९३४ में यानी पांच साल पहले दिया था, लेकिन वह रकम तो या तो ४०० रुपये या ५०० रुपये थी। संभव है कि व्याज लगाकर इतने रुपये हो गये हों। लेकिन अगर आपको याद पड़े तो यह रुपया आपने मुझको एक खास हालत में दिया था। आपने खुद पूछा था कि क्या मुझे कुछ रुपयों की जरूरत है। तब आपने यह रुपये दिये थे। बाद में इन रुपयों का बड़ा हिस्सा मैंने कलकत्ते में अखबार वगैरा में खर्च किया था। आपको मैंने यह बात बनारस में बताई थी। आपने इसे पसंद नहीं किया था। आपने कहा था कि मैंने जिस काम के लिए रुपये लिये थे उसी काम पर खर्च करना था। लेकिन मेरी राय में तो, क्योंकि वह काम मेरा खुद का था, किताब छपवानी थी, इसलिए मैं उस रुपये को दूसरी तरह भी खर्च कर सकता था। लेकिन अगर आपकी राय है कि मैं प्रामिसरी नोट परं दस्तखत करूं तो मैं कर दूंगा, लेकिन कब आपको रुपये मिलेंगे यह कहना मेरे लिए मुश्किल है। अखबारों में आपकी तबियत के बारे में अक्सर पढ़ने को मिल जाता है। लेकिन इन दिनों की खबरें बहुत अच्छी नहीं थीं। आशा है, अब आप मजे में होंगे?

आपका,
राममनोहर

: ६१ :

जयपुर स्टेट कैदी, ८-८-३९

प्रिय राममनोहर,

तुम्हार पत्र मिल । मुझे पता नहीं कि तुम्हारे खाते का व्याज लगाया गया है या किस प्रकार का है। वर्धा से हिसाब मंगवा लेना। मेरी समझ से बिना

ब्याज मुद्दल रुपयों पर सही करना ठीक समझो तो सही करके भेज देना। नहीं तो यह वात खयाल में रखना कि जब कभी तुम रुपये कमाने के चक्र में संयोगवश आ जाओ या कोई लाटरी वगैरह आ जावे तो रुपये भिजवा देना। क्यों तुमने वे रुपये दूसरे काम में लगा दिये, इसलिए थोड़ी जिम्मेवारी तुम्हारे ऊपर रखना चाहिए। तुम्हारा कलकत्ते कोर्ट का स्टेटमेंट मैंने देखा था। खुशी हुई थी। मेरा गाड़ी ठीकठाक चल रही है। पांव का घाव तो भरता जा रहा है, दर्द भी एक वार तो कम हो गया है। अगर कलकत्ते से मुक्त हो जाओ, जो कम संभव मालूम देता है, तो आकर तुम्हें मेरा काम करना चाहिए। खाली लुधियाने के ठहराव पास कराने से तुम्हारी जिम्मेवारी पूरी नहीं हो जाती है। बिना काम किये प्रस्ताव पास कराने से तुम्हारी जिम्मेवारी पूरी नहीं हो जाती है।

जमनालाल बजाज के वंदेमातरम्

: ६२ :

कानपुर, १४-१२-२७

प्रिय सेठजी,

सप्रेम वंदे। आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। मैं सम्मेलन की बैठक में नहीं जा सका, किंतु यहां से जो कर सका उसे मैंने कर दिया। उसका नतीजा यह हुआ कि श्री इंद्र नारायण द्विवेदी ने अपना प्रस्ताव वापस ले लिया। लोगों के मन में जो विकार हैं, वे दूर किये जा सकते हैं और यदि आपकी सेवा में कोई ऐसी वात पहुंचे, जिससे इन लोगों के मन का विकार सहज में दूर किया जा सके तो आप उसे अवश्य दूर कर देने या करा देने की कृपा करें। मतभेद होतें हुए भी हमें अपने विरोधियों को व्यर्थ के लिए असंतुष्ट रहने का अवसर न देना चाहिए। मैं शायद ही मद्रास पहुंच सकूं। इस समय बहुत-से चक्करों में फंसा हुआ हूं। इसलिए यह असमर्थता है। यदि महात्माजी की सेवा में इस प्रांत में आने की प्रार्थना पहुंचे तो उस प्रार्थना के करनेवालों में आप मुझे भी एक अवश्य समझें। महात्माजी यदि आवें तो यह सौभाग्य होगा। मैं कुछ समय उनकी सेवा में अवश्य रहूंगा। अभी तक मैं सदा दूर

रहा, इसलिए नहीं कि महात्माजी के चरणों में मेरी भक्ति कम थी, किंतु इसलिए कि मुझे यह प्रिय न था कि मैं दूसरों को धक्के मारकर आगे बढ़ने के लिए अपना मार्ग निकालूं। अब ऐसा करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि अब काम करनेवालों की वह भीड़ ही नहीं है।

मुझे स्वार्थवश आपसे मिलने की बहुत आवश्यकता है। शायद उस समय जब महात्माजी यहां आवें आपके भी दर्शन हो जायं। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि पहले मैं अधिक आजाद था किंतु अब अधिक साधनों के होते हुए भी उस आजादी का दशांश भी शेष नहीं है और इसीलिए कहीं जाना-आना कठिन हो रहा है। मैंने अपने ऊपर एक मूर्खता का बोझ कौंसिल की मेंबरी के रूप में भी लाद लिया है। उसपर न मेरा विश्वास है और न उससे मुझे कोई लाभ होता दीखता है। मैं हर समय उसे छोड़ने के लिए तैयार हूं। यदि आप या महात्माजी मुझे किसी और काम के लिए इस मेंबरी के अत्यंत अनुपयोगी काम से तनिक भी उपयोगी समझें तो मैं आपका पत्र पाते ही इस बोझ से छुट्टी पा जाऊं। आशा है, आप इसपर अवश्य विचार करेंगे। आप परिवारसहित सानंद होंगे?

विनीत,
गणेशशंकर विद्यार्थी

: ६३ :

कानपुर, २३-८-२८

प्रिय सेठजी,

सप्रेम वंदे। मैं काशी में फिर आपसे मिल न सका। इसका खेद रहा। ज्वर कई दिनों तक रहा, उससे छुट्टी पाते ही 'तरुण राजस्थान' के संबंध में अजमेर जाना पड़ा। वहां का झगड़ा बहुत बड़ा है। किसी प्रकार कुछ ठंडा किया गया है, किंतु यदि आगे उसे ठंडा रखना है तो उसके लिए बहुत उद्योग करना पड़ेगा।

'सैनिक' के संबंध में आपसे बातचीत की थी। मैं पहले भी लिख चुका हूं कि सिद्धांतों के साथ काम करनेवाले बहुत कम समाचार-पत्र हैं,

इसलिए जो थोड़े-से हैं, उनकी रक्षा होनी चाहिए। इसलिए 'सैनिक' की सहायता पर मैं जोर देता हूं। मेरी प्रार्थना है कि आप एक हजार रुपये इस काम के लिए दिला दीजिए। सितंबर में 'सैनिक' को कुछ रुपये इस काम के लिए देना है, इसलिए उसके लिए जो कुछ करना है वह शीघ्र ही किया जाना चाहिए। मुझे विश्वास है कि आप मेरे अनुरोध की रक्षा अवश्य करने की कृपा करेंगे।

आशा है, आप सानंद होंगे। मेरे योग्य सेवा का आदेश देने की कृपा करें।

आपका,
गणेशशंकर विद्यार्थी

: ६४ :

कानपुर, ४-२-३८

प्रिय सेठजी,

वंदे। आपका पत्र मिला। मैंने आपके पत्र डाक्टरसाहब और श्रीनारायणजी के पास भेज दिये। हड़ताल के बाद आज समय मिला है। उनसे तथा प्रकाश-पुस्तकालय से बातें कर लूंगा। मुझे भी आपके इतने स्वल्प सत्संग से संतोष नहीं हुआ। ईश्वर की कृपा से इस प्रकार का सुअवसर शीघ्र ही प्राप्त हो।

श्रीमती सेठानीजी को प्रणाम, कमलाबाई और बच्चों को आशीष।

विनीत,
गणेशशंकर विद्यार्थी

: ६५ :

कानपुर, १९-२-३८

प्रिय सेठजी,

वंदेमातरम्। इधर श्रीचंद्रभालजी के पत्रों से महात्माजी के स्वास्थ्य के संबंध में जो समाचार मिले उनसे यहां के मित्रों को बहुत चिंता हुई है। महात्माजी ने जो कुछ 'यंग इंडिया' में लिखा है और डाक्टरों की राय लिखी

प्रकाशित हुई है, उससे कुछ धैर्य होता है, किंतु साथ ही मन सदा सशंकित रहता है। आपको बहुत काम है तो भी यदि आप कुछ इस विषय में लिखने की कृपा करेंगे तो यहां के मित्रों को बहुत संतोष होगा। इस समय हम लोगों में कई ऐसे हैं जिनके चित्त की दशा विचित्र है। महात्माजी के चित्त की तनिक-सी प्रसन्नता के लिए जो कुछ उनसे कहा जाय उसे वे सहर्ष करने के लिए तैयार हैं। क्या आप कोई बात बतलावेंगे ? आपकी धारणा के अनुसार खद्दर के काम को महात्माजी का सर्वप्रिय काम मानकर हम चर्खा-संघ के सदस्य बने जाते हैं, और यदि हमारे लिए यहां और कोई ऐसा काम हो जिससे महात्मा-जी के चित्त को तनिक भी संतोष हो, तो उसकी सूचना आप मुझे दीजिए। इस पत्र को मैं अपने तथा बालकृष्ण के अतिरिक्त कुछ और युवकों की ओर से भी लिख रहा हूं।

विनीत,
गणेशशंकर विद्यार्थी

: ६६ :

बनारस छावनी, १-४-३०

प्रिय जमनालालजी,

नमस्कार। आशा है, आप प्रसन्न होंगे। आपका कार्ड मिला। अनेक धन्य-वाद। मुझे अभी ही कानपुर का पत्र मिला, जिसमें केवल इतना लिखा है कि तहकीकात करके फिर लिखूंगा। जैसा शायद मैंने आपसे कहा भी था, वह बातचीत कानपुर के प्रताप-प्रेस के श्री शिवनारायण मिश्र द्वारा हो रही थी। उनका उत्तर आते ही आपको सूचित करूंगा।

जो कुछ बात होगी, मैं फौरन ही आपको लिखूंगा। इसी पत्र में यह भी प्रार्थना कर लूं कि हमारे प्रांत का नेशनल सर्विस फण्ड का रुपया जो महात्माजी के दौरे में एकत्र किया गया था उसे कृपया भिजवा दीजिए। आपके दफ्तर में मैं कई बार लिख चुका। ब्यौरा भी दे दिया है।

आपका सस्नेह,
श्रीप्रकाश

: ६७ :

बनारस, २५-२-३६

श्री सेठ जमनालालजी,

सादर नमस्कार। आगे आपका पत्र पिताजी के नाम आया था। आपने शायद सुना हो कि उन्होंने अब एक प्रकार का वानप्रस्थ ले लिया है। काशी भी छोड़ दिया है। चुनार में विन्ध्या पर्वत के पास और गंगाजी के तीर पर उन्होंने एक स्थान ले लिया है और अब वह वहीं रहते हैं। काशी विद्यापीठ वर्तिकोत्सव में काशी आये थे और यहीं एकाएक बहुत बीमार पड़ गये। इस कारण आपका पत्र उन्हें यहीं मिला। उनकी बड़ी अभिलाषा हुई कि इस शुभ अवसर पर कन्या के विवाह[1] में जायं। पर बिल्कुल चारपाई पर पड़े हैं। घुटनों में बड़े-बड़े फोड़े हो जाने के कारण उठ-बैठ भी नहीं सकते। इस कारण उन्होंने आपसे क्षमा मांगी है और वह वर-वधू के चिरायु और चिरस्वस्थ और सुखी रहने की ईश्वर से बहुत शुभ कामना करते हैं। मुझे पूरी आशा है कि आप उनकी अनुपस्थिति क्षमा कीजियेगा।

आपका,

श्रीप्रकाश

: ६८ :

शिमला १०-८-३९

प्रिय जमनालालजी,

वंदे। आशा है, आप प्रसन्न होंगे। सीकर के संबंध में आपके सत्कार्य को पढ़कर बड़ा संतोष हुआ। आपको बधाई है। वास्तव में आपने बड़ी कठिन समस्या को सहज में हल किया।

आपका,

श्रीप्रकाश

: ६९ :

लखनऊ, १५-९-२७

प्रिय जमनालालजी,

प्रणाम। आपका कृपा-पत्र मिला। आपकी सहानुभूति के लिए मैं

---

[1] कमलाबाई के विवाह पर

हृदय से धन्यवाद देता हूं। मेरा स्वयं यह विचार था कि काकोरी-षड्यंत्र के मुकदमे के बाद कुछ दिन वंबई और कलकत्ते रहकर यह देखता कि किसी तरीके से मैं व्यापार में लग सकता हूं। यह मैं जानता हूं कि आजकल व्यापार की स्थिति अच्छी नहीं है और ऐसे व्यक्ति के लिए, जिसको व्यापारिक अनुभव कुछ न हो और न व्यापार में व्यय करने के लिए रुपये हों किसी व्यापार में लगना बहुत कठिन है, परंतु फिर भी यह आशा थी कि आप-जैसे प्रतिष्ठित व्यापारियों की कृपा तथा असर से कोई ऐसा सुभीता निकलना शायद ज्यादा कठिन न हो, जिससे कुछ थोड़ी-बहुत आय भी हो सके और व्यापारिक अनुभव भी प्राप्त हो।

आपने जो लिखा है कि अगर आगे-पीछे पूज्य पं. मोतीलालजी के साथ रहना हो सके तो ठीक है। मैं स्वयं इसी विचार का हूं, परंतु उनका आगे के लिए कोई कार्यक्रम अभी तक तय नहीं हुआ है, इस कारण उसके ऊपर कोई भरोसा नहीं किया जा सकता। पण्डितजी की जो कृपा मेरे ऊपर है, उससे मुझे पूर्ण आशा है कि वह अगर किसी तौर से भी मेरे लिए कुछ कर सकते होंगे तो अवश्य करेंगे, परंतु अभी विलायत जाते समय भी उनसे मेरी जो बातचीत हुई, उससे यही मालूम हुआ कि अभी वह स्वयं यह नहीं तय कर सके हैं कि वह आगामी वर्ष कहां होंगे और क्या करेंगे। उन्होंने मुझसे चलते समय यह भी कहा था कि अगर आपके जरिये से कोई उपाय निकल सके तो मैं उसे स्वीकार कर लूं। आगे देखा जायगा। खैर, आपने जो अपने साथ रखने की बात लिखी है सो मैं उससे बिल्कुल सहमत हूं। मेरा विचार है कि मद्रास-कांग्रेस जाने से पहले एक मास या १५ दिन आपके साथ रहूं। तबतक मेरी स्त्री का स्वास्थ्य भी ठीक हो जायगा और आपको भी इस मामले में विचारने का समय मिल जायगा। आशा है, आप भी इसे पसंद करेंगे। अगर आप इससे पहले मेरा आना आवश्यक समझें तो लिखें। आशा है कि आप परिवारसहित कुशलपूर्वक होंगे।

कृपा करके मेरे लिखने की त्रुटियों को क्षमा करियेगा। मुझे हिंदी लिखने का अनुभव कम है।

आपका,
मोहनलाल सक्सेना

: ७० :

बंबई, १०-८-१८

प्यारे सेठ जमनालालजी,

वंदे। आपका कृपा-पत्र तीन अगस्त को मिला, जिसे पढ़कर और अपनी ओर आपके भावों को देखकर चित्त अत्यंत प्रसन्न हुआ। कृतज्ञ हूं।

आपका पत्र पढ़ने से वही पता लगा जो मैं पहले से समझता था अर्थात मूल तथा सिद्धांतों के विषय में हम दोनों में कुछ भी भेद नहीं और छोटी बातों के मतभेद की बात करनी ही व्यर्थ है। तथापि आपकी यह इच्छा है कि भविष्य में कोई गैर-समझ होना ठीक नहीं, इसलिए कुछ विस्तृत उत्तर देना आवश्यक समझता हूं। आपकी तीनों शर्तें आपके शब्दों में ये हैं—

१. श्री गांधीजी के सत्याग्रह तथा पालिसी के प्रचार में यह पत्र पूर्ण सहायता करता रहेगा।

२. हिंदी राष्ट्रभाषा हो—इसका प्रचार भी पूर्णतया करता रहेगा।

३. मारवाड़ में जो अन्याय होते हैं, उसकी पूर्ण आलोचना तथा वहां शिक्षा का प्रचार अधिक हो इसके लिए सब तरह से प्रचार करते रहना, यह भी इस पत्र का मुख्य उद्देश्य होगा।

मेरे उत्तर ये हैं—

१. सहर्ष स्वीकार है। सत्याग्रह का मैं भक्त तथा सेवक हूं। अपनेको एक विनीत सत्याग्रही ही मानता हूं और देशोद्धार के पथ पर अधिकतर गांधीजी का पदानुकरण करना ही मेरे भावी जीवन का एक मुख्य लक्ष्य है। केवल यदा-कदा गांधीजी की पालिसी से अन्य किसी नेता का मतभेद होना संभव है, जैसे आजकल रिक्रूटिंग—फौज भरती—पर तिलक तथा गांधी में मतभेद है। यद्यपि इस बात में मैं गांधीजी के साथ हूं, तिलक के साथ नहीं, तथापि ऐसे कठिन अवसरों पर मुझे अधिकार होगा कि चाहे जिस नेता का अनुकरण करूं, अथवा अपनी आत्मा की आज्ञानुसार अपनी पालिसी का निश्चय करूं।

२. सहर्ष स्वीकार है। इस विषय में मेरे विचार बिल्कुल वही हैं

जो गांधीजी के और जो उन्होंने अपनी इंदौर की वक्तता में प्रकट किये थे।

३. सहर्ष स्वीकार है। किंतु इस बात का प्रबंध करने में कि वहां के अन्यायों, अवस्था इत्यादि का हमें बराबर पता चलता रहे, आपको हमारी सहायता करनी पड़ेगी। मैं चाहता हूं कि हमारा वहांपर कोई योग्य तथा स्थायी संवाददाता हो, जिसे यदि आवश्यकता हुई तो, हम वेतन भी देंगे।

मुझे विश्वास है कि अब आपकी शंका दूर हो गई होगी। यदि मेरा विश्वास ठीक है तो कृपया अब वापसी डाक से अपना १००० रुपया मेरे पास रवाना करें। मैं प्रेस इत्यादि मोल ले रहा हूं, इस कारण अब देर न कीजिए।

उत्तर अवश्य और कृपया शीघ्र दें।

आपका,
सुंदरलाल (पंडित)

पुनश्च :

यदि किसी समय भी कोई बात पत्र के संबंध में आपके सामने उपस्थित हो तो अवश्य लिखते रहें। पत्र जैसा मेरा होगा वैसा आपका। आपकी शंका तथा इच्छा का यथा-संभव पालन करना मेरा एक प्रेमपूर्ण कर्तव्य होगा।

सुंदरलाल

: ७१ :

बंबई, २४-४-३१

प्रिय श्री सुंदरलालजी,

आपने कराची में १-४-३१ को जो पत्र मुझे लिखकर दिया था और जो समक्ष में आपसे बातचीत हुई थी उसके मुताबिक व्यवस्था वर्तमान में मित्रों द्वारा होनी मुश्किल है क्योंकि जिन दो-चार मित्रों से मैं मिलकर बात करना चाहता था उनमें से कुछके तो यहां नहीं होने के कारण मैं उनसे मिल तक नहीं सका; तथापि वर्तमान में एक वर्ष के लिए पहली अप्रेल १९३१

से ३१ मार्च, १९३२ तक एक सौ रुपये मासिक के हिसाब से व्यवस्था में करवा देना चाहता हूं, जिससे आपकी इच्छा के मुताबिक प्रति मास या साल में तीन वार करके आपको रुपये भेजे जा सकेंगे। और इस रकम को आप और श्री मंजूर अलीजी सोखता जैसे उचित समझें काम में ला सकेंगे। परंतु यह रकम किस खाते में लिखी जाय इस संबंध में मुझे पूज्य बापूजी या गांधी-सेवा-संघ के ट्रस्टियों की स्वीकृति लेनी होगी। मुझे आशा है, इसमें आपको कोई आपत्ति नहीं होगी। आपका पत्र आने पर, आप लिखेंगे उस मुताबिक, उपरोक्त रकम भेजने की व्यवस्था कर दी जायगी। मेरा अभी इधर ही रहने का विचार है।

जमनालाल बजाज के वंदेमातरम्

: ७२ :

आगरा, २-६-३६

प्रियवर श्री जमनालालजी,

मैं अभी तक पिताजी की बीमारी के कारण यहीं हूं। बीच में उनकी हालत बहुत चिंताजनक हो गई थी। वर्षों से मेरा संबंध तो टूटा हुआ-सा ही था, किंतु ऐसे समय में मैं थोड़ी-बहुत उनकी सेवा न करूं, यह ठीक नहीं जंचा। अब हालत कुछ अच्छी है।

आपका ४-५ का कृपापत्र मुझे यहां मिला। पिताजी की अवस्था के कारण उत्तर में देर हुई, क्षमा कीजियेगा।

आप जिस मित्र से उचित समझें बात करें, आपको पूर्ण अधिकार है। जैसा मैंने वर्धा में आपसे कहा था, हिसाब मैंने पीछे तो कभी रखा नहीं। आज तक तो इसकी आदत नहीं रही। इसलिए पिछला कोई हिसाब भेज सकना तो असंभव है। आगे के लिए मुझे आपकी सलाह पसंद है, और ठीक मालूम होती है। उसके अनुसार आगे कार्य भी करूंगा। रही मेरी आवश्यकता, सो अब जिस समय मैं निश्चित होकर प्रयाग में बैठ सकूं, उस समय से दो वर्ष के अंदर मुझे पुस्तक के पूरे होने की आशा है। इस बीच मुझे ३०० रुपये की एक इंसाइक्लोपीडिया और चाहिए। लगभग २००

रुपये की और फुटकर किताबें खरीदनी होंगी। करीब ६० रुपये मासिक के हिसाब से १४४० रुपये मेरा और एक और सज्जन का जो लिखने और मसाला जमा करने में मुझे लगातार सहायता देते रहे, रहने, खाने, कपड़े आदि का खर्च और कुछ और सफर इत्यादि को फुटकर, कुल कम-से-कम २००० रुपये का प्रबंध हो जाने पर मैं निश्चित होकर फिर से अपने काम में लग सकता हूं। बीच में मसाले के लिए मुझे एक बार शांति-निकेतन और एक बार मैसूर तो जाना ही होगा। इसमें जो आप उचित समझें, अपनी ओर से करें और जो चाहें, दूसरे मित्रों से करायें। मेरा यह अनुमान अवश्य है कि जबतक आप अपना कुछ भाग निश्चित न कर लेंगे, दूसरों से आसानी न होगी। किंतु मैं इस बारे में बिल्कुल दखल नहीं देना चाहता। आप जिस तरह उचित समझें करें। हां, आपका धन आने के समय से जैसा मैंने कहा था, मैं अपनी आर्य और व्यय दोनों का ठीक-ठीक हिसाब रखूंगा, जिसे आप जब चाहें देख सकेंगे। किंतु आपका अंतिम उत्तर न मिलने तक मैं अनिश्चित रहूंगा। इसलिए मेरी प्रार्थना है कि आप जहांतक हो जल्दी, हो सके तो लगभग एक महीने के भीतर, मुझे ठीक-ठीक सूचना दें कि आपके मार्फत मेरा क्या कुछ प्रबंध हो सकता है और क्या कुछ नहीं, ताकि उसीके अनुसार मैं अपना कुछ फैसला कर सकूं। मेरी यह प्रबल इच्छा अवश्य है कि यह प्रबंध आप ही के द्वारा हो। और इसीमें मेरी निश्चितता है। शेष स्नेह। आशा है, आप सकुशल होंगे।

आपका भाई,
सुंदरलाल

: ७३ :

इलाहाबाद, १०-५-३८

प्रियवर श्री जमनालालजी,

शायद आपने समाचार-पत्रों में पढ़ा हो, 'भारत में अंग्रेजी राज्य' पुस्तक छप रही है। दो-तिहाई फर्मे छप चुके, एक तिहाई बाकी हैं।

इधर श्री रामरखसिंह सहगल ने मेरे ऊपर और ओंकार प्रेस, जिसमें

पुस्तक छप रही है, उसके मुद्रक और प्रकाशक पं. विश्वम्भरनाथ वाजपेयी और पं. त्रिवेणीनाथ वाजपेयी के ऊपर फौजदारी में मुकद्दमा दायर किया है। उनका दावा है कि किताब का कापी राइट उनका है; यह बात सत्य नहीं है। मैंने कभी उन्हें कापी राइट नहीं दिया—न जबानी दिया और न लिखकर दिया। उनके पास कोई तहरीर मेरी नहीं है। अब उन्होंने यह रुख लिया है कि उन्होंने इस पुस्तक के लिखने के लिए मुझे नौकर रखा था। यह भी बिल्कुल असत्य है। खैर, अब इस मामले में मुझे आपकी थोड़ी-सी मदद की जरूरत है। वह यह है—

सन् १९२६ में जब मैंने इस पुस्तक को लिखना शुरू किया था, तब मैंने एक पत्र आपको इस मजबून का लिखा था कि यदि आप इस पुस्तक के प्रकाशन के लिए धन का प्रबंध कर सकें, तो मैं मशकूर होऊंगा। जहांतक मुझे याद है, मैंने सन् २६ ही में लिखा था। संभव है, सन् २७ में लिखा हो। आपने मुझे उत्तर दिया था कि मैं इस विषय में, 'सस्ता साहित्य मंडल' वालों को लिखूंगा। फिर यह मामला यहीं पर अंत हो गया। उन पत्रों की नकलें मैंने नहीं रखीं।

क्या मेरे उस पत्र की नकल या इस पत्र या आपके उत्तर की नकल आपके यहां कहीं होगी? यदि नहीं, तो क्या आपको इस बात की कुछ भी याद है? बस मुझे इतना ही जानना है। इससे मुझे बड़ी मदद मिलेगी। कृपया उत्तर जहांतक हो सके, जल्दी भिजवाने का कष्ट कीजिए।

आपका भाई,
सुंदरलाल

दिल्ली

: ७४ :

दिल्ली, २७-२-२८

प्रिय महाशय,

रु० ५०००) (पांच हजार) का चेक नं. Z.Y. १०९९४४ ता० १६-३-२८ सेंट्रल बैंक, बंबई पर सधन्यवादपूर्वक प्राप्त हुआ जोकि जामिआ मिल्लिया के लिए इस्तेमाल करने को कर्ज के रूप में मुझे पेशगी भेजा गया है।

जामिआ ने प्रिंसिपल की ओर से बाकायदा रसीद मैनेजर, साबरमती आश्रम, बंबई को भेज दी है।[1]

आपका,

एम० ए० अन्सारी

: ७५ :

दिल्ली : ३-८-२९

प्रिय जमनालालजी,

मुझे बड़ा अफसोस है कि आपके पिछली बार यहां आने पर जामिआ के आर्थिक प्रबंध के बारे में बातचीत करने का मौका नहीं मिला। मैंने डा. जाकिर हुसैन का वह पत्र पढ़ लिया है जो आपने मुझे भेजा है और अब मैंने उनसे बातचीत भी कर ली है। मैं महसूस करता हूं कि हमें आर्थिक मामलों के नियमों को पूरे विवरण के साथ तैयार कर लेना चाहिए जिसमें बजट, हिसाब, तथा हिसाब की जांच आदि सभी हों, और एक स्थानीय आदमी, जो जामिया और उसके आदर्शों में दिलचस्पी रखता हो, इन मामलों की देखभाल करें और कार्यकर्ताओं को अपनी सलाह का लाभ दें। मैंने डा० जाकिर हुसैन से ऐसे स्थानीय आदमी के मिलने की संभावना के

---

[1] अंग्रेजी से अनूदित

बारे में मशविरा किया तो उन्होंने मुझे सुझाया कि वह व्यक्ति मैं ही हो सकता हूं। आप अच्छी तरह सोच सकते हैं कि मैं काम के बोझ से इतना दबा हूं कि मैं अपनी असुविधा बढ़ानेवाली विविध जिम्मेदारियों के बीच एक और नहीं बढ़ाना चाहता। मुझे यह भी मालूम है कि आप स्वयं समय के बोझ से कितने दबे हुए हैं। आपने मेहरबानी करके जामिआ का खजांची होना मंजूर कर लिया है इसके लिए हम सब आपके कितने अहसानमंद हैं यह बताने की मुझे आवश्यकता नहीं है। लेकिन मैं आपपर बहुत ज्यादा बोझ नहीं डालना चाहता। जामिआ-जैसी संस्था जहांकि हर महीने कोई-न-कोई उलझन पैदा होती रहती है, उसके मामलों में हम नियमों ही पर निर्भर कैसे रहें यह मेरी समझ में नहीं आता है, इसलिए अगर आप यह जरूरी समझते हैं कि ऊपर बताये काम यहां के किसी आदमी को ही करने चाहिए तो मैं उन्हें करने के लिए किसी तरह समय निकाल ही लूंगा, क्योंकि मैं जामिआ के काम को बहुत जरूरी और महत्वपूर्ण मानता हूं।

इस बारे में आपकी राय जल्दी-से-जल्दी जानकर मुझे खुशी होगी ताकि हम इस विषय में जल्दी निर्णय कर सकेंगे।[1]

बहुत आदरपूर्वक

आपका,

एम० ए० अन्सारी

: ७६ :

वर्धा, ६-८-२९

प्रिय डाक्टरसाहब,

जब मैं दिल्ली में था मुझे आपका ३ अगस्त का कृपापत्र मिला। डा० जाकिर हुसैन से जामिआ के आर्थिक इंतजाम के बारे में बातचीत करना चाहता था। पर डा० जाकिर हुसैन बाहर गये हुए थे और आप व्यस्त थे, इसलिए बातचीत नहीं हो सकी। जामिआ हमारी राष्ट्रीय संस्था है और मेरी

---

[1] अंग्रेजी से अनूदित

इच्छा है कि उसका हिसाब ठीक तौर से रखा जाय। मुझे यह जानकर खुशी हुई कि आप और डा० जाकिर हुसैन की भी राय यही है। आपका यह प्रस्ताव कि आर्थिक व्यवस्था (वजट) हिसाव और हिसाबी जांच आदि वहीं के किसी आदमी को सौंपी जाय, अच्छा है। अगर वहां का कोई प्रभावशाली व्यक्ति, जो इस काम को करने की कावलियत रखता हो, जामिआ में दिलचस्पी रखता हो, इस काम के लिए मिल सकता हो, तो यह काम उसे सौंप दिया जाय। लेकिन डा. जाकिर हुसैन के कहने के मुताबिक इस तरह का कोई आदमी वहां अभी मिला नहीं है, इसलिए उनके सुझाव पर यह काम अपने अपने ऊपर ले लिया है। इसमें संदेह नहीं कि आपपर काम का बोझ बहुत ज्यादा है, फिर भी जामिआ का हित और काम भी कम जरूरी व कम महत्व का नहीं है। मेरे ऊपर पहले से ही अधिक काम है, इसलिए मेरी इच्छा इससे मुक्त होने की है, क्योंकि मैं अपनी इच्छानुसार खजांची का काम संभालने की स्थिति में नहीं हूं। दिल्ली मेरे कार्य-क्षेत्र से बहुत दूर है। मैं तो यह अनुरोध करूंगा कि यह जिम्मेदारी भी आप कृपया अपने कंधों पर ले लें। मुझे उम्मीद है कि आप और डा० जाकिर हुसैन इसपर विचार करके मुझे अपने फैसले की सूचना देंगे।

मैं १० तारीख को वर्धा से बंबई जा रहा हूं और वहां लगभग २० दिन तक रहकर पहले साबरमती जाऊंगा और फिर राजपूताना[1]

आपका,

जमनालाल बजाज

: ७७ :

दिल्ली, ११-८-२९

प्रिय जमनालालजी,

आपके ६ अगस्त के पत्र के लिए धन्यवाद। मुझे अफसोस है कि जब आप यहां थे तब मैं काम के बोझ के कारण आपसे जामिआ के आर्थिक

---

[1] अंग्रेजी से अनूदित

इंतजाम के बारे में कोई बात नहीं कर सका। मैं डा. जाकिर हुसैन की इस बात से सहमत हूं कि अगर किसी स्थानीय व्यक्ति को ही यह काम करना है तो वह मैं ही हूं। मैं भरपूर कोशिश करूंगा। मैं तो आपका यह सुझाव भी स्वीकार करने को तैयार हूं कि अगर आप ठीक समझते हैं तो मैं खजांची की पूरी जिम्मेदारी अपने कंधों पर ले लूं। लेकिन सिर्फ एक शर्त पर कि जामिआ और उसके प्रति आपकी दिलचस्पी सतत जारी रहेगी। हालांकि इसका मुझे पक्का भरोसा है।

किसी भी हालत में मामले का फैसला कार्यकारिणी (एवजीक्यूटिव) समिति करेगी। अगर आप समझते हैं कि इंतजाम हमें करना चाहिए तो मैं सुझाव दूंगा कि आप इस आशय का प्रस्ताव डा० जाकिर हुसैन के पास भेज दें जिससे अगली मीटिंग में उसकी कार्रवाई हो जाय।

आशा है, आप स्वस्थ होंगे।[१]

आपका,
एम० ए० अन्सारी

: ७८ :

दिल्ली, सितंबर, १९२३

जमनालाल बजाज,
वर्धा।

"आपकी रिहाई पर तथा आपके द्वारा किये गये झंडा-आंदोलन के उत्साहवर्धक नेतृत्व पर बधाई देता हूं।"[२]

अजमलखां

: ७९ :

वर्धा, २५-१२-३८

प्रिय श्री अजमलखां सा०,

आपको अच्छी तरह याद होगा कि मौलाना अबुल कलाम आजाद

---

[१] अंग्रेजी से अनूदित। [२] तार का अनुवाद

ने कुछ दिन पहले जमनालालजी बजाज को गढ़ाकोटा के मुसलमानों की शिकायतों की जांच करने के बारे में पूछा था।

दो जिम्मेदार व्यक्तियों को इसके बारे में गहराई से छानबीन करने के लिए कहा गया और मैं उनकी रिपोर्ट इस खत के साथ भेज रहा हूं। इन रिपोर्टों से मौलानासाहब वहां के हालात ठीक तौर से समझ सकेंगे और उससे मुनासिब नतीजे पर पहुंच सकेंगे।

शुभेच्छा के साथ।[1]

आपका,
सेक्रेटरी, जमनालाल बजाज

: ८० :

दिल्ली, सितंबर, १९२३

जमनालाल बजाज
वर्धा

"मेरे बहादुर बनिया, खूब किया। तुम्हारे पैर चूमने को तरस रहा हूं—इसे किचलू की तरफ से भी जानना।"[2]

मुहम्मद अली (मौलाना)

: ८१ :

दिल्ली, १३-७-३८

श्रीमान पू. सेठजी,

सादर प्रणाम। आपका कृपापत्र मिला। बहुत धन्यवाद। मुझे अफसोस है कि अलवर के विषय में पूरा विवरण आपको अबतक नहीं भेज सका। मेरा खयाल था कि आपको समाचारपत्रों के मार्फत कुछ मिला ही होगा। इसके साथ जो बयान मैंने पत्रों को भेजा था वह आपकी ज़ानकारी के लिए भेज रहा हूं। उसके बारे में श्रीयुत हरिभाऊजी, जयनारायणजी व्यास, आदि

---

[1] अंग्रेजी से अनूदित। [2] तार का अनुवाद

राजस्थान के मान्य कार्यकर्ताओं को भी मैंने पत्र लिखा था। श्री व्यासजी ने यहांपर आकर एक बचाव-समिति बनाकर कुछ पैसा इकट्ठा करने का काम शुरू किया और अलवर भी एक दफा हो आये। हरिभाऊजी का पत्र आया था और उन्होंने कहा था कि आपको तथा श्री वल्लभभाई को इस बारे में लिखना चाहिए और गिरफ्तार हुए बंदियों की मदद के लिए कोशिश करनी चाहिए।

जब मैं अलवर गया था तब एक-दो बड़े अफसरों से मिला था। उन लोगों का कहना था कि तमाम लोग बाहर के आदमियों से बहकाये हुए हैं और उत्तेजनापूर्ण व्याख्यान देने के सबब से गिरफ्तार किये गये थे। ये दोनों इलजाम बिल्कुल गलत हैं। हमारी पार्टी भी अलवर में इन लोगों की गिरफ्तारी के बाद गई थी। उसके पहले कम-से-कम एक साल तक दिल्ली से कोई भी नहीं गया। जितने भी आदमी गिरफ्तार हैं वे सब अलवर की प्रजा हैं। उन लोगों में काफी जागृति आ रही है। लेकिन इस वक्त मैदान में आने के लिए ज्यादा लोग नहीं हैं। जेल में गये हुए सब लोग सुशील तथा देशभक्त हैं। उनके ऊपर जेल के अंदर काफी दमन हो रहा है। डंडा-बेड़ी की वजह से कई भाई अब भी अनशन में हैं। गिरफ्तारी के अब दो सप्ताह हो गये हैं, फिर भी पुलिस रिमांड ही लेती जाती है। मुकदमा लड़ने को कोई स्थानीय वकील तक नहीं मिलता। बाहर के लोगों को वहां लाकर वकालत करने का हक नहीं है। उसके लिए हम कोशिश कर रहे हैं। गिरफ्तार लोगों के दो कुटुंबों के लिए सहायता भी पहुंचानी है। यह सब हम किसी-न-किसी प्रकार से कर लेंगे। लेकिन रियासती अफसरों का रवैया बदलना मुश्किल है। कैदियों की डंडा-बेड़ी कटवाने के लिए अगर आप कुछ कोशिश करें तो बहुत अच्छा होगा। विद्यार्थियों में अब कुछ जीवन है।

आपका सेवक,
कृष्ण नायर

: ८२ :

दिल्ली ९-८-३८

श्रीमान सेठजी,

आपका कृपापत्र और अलवर के मंत्रीजी के पत्र की कापी दोनों प्राप्त हुए। धन्यवाद। अब क्योंकि आपने रास्ता दिखाया है, इसलिए मैं भी अलवर प्रधान मंत्री को लिखूंगा। वहां से पत्र आते रहते हैं, जिनमें कैदियों के ऊपर की जानेवाली सख्तियों का बयान रहता है।

आपको शायद मालूम होगा कि अबतक श्री लक्ष्मणस्वरूप त्रिपाठी प्रधान, कांग्रेस कमेटी, श्री हरनारायण शर्मा, मंत्री, प्रजा-मंडल और श्री राधाचरण गुप्त, मंत्री, कांग्रेस कमेटी, इन तीनों सज्जनों को दो-दो साल की सख्त कैद का हुक्म सुनाया गया और श्री इंद्रसिंह आजाद और श्री नत्थूराम मोदी को एक-एक साल की सजा हो गई। श्री नत्थूरामजी हरिजन तथा खादी के काम करनेवाले हैं। बाकियों पर मुकदमा चल रहा है। मुकदमा बिल्कुल बंद कमरे में हुआ और बाहर के वकीलों को बचाव करने की इजाजत भी नहीं मिली। इसी कारण अपील में भी कुछ फायदा दिखाई नहीं थ रहा है। आज चार ही दिन हुए जब कि श्रीयुत हरिभाऊजी उपाध्याय अलवर गये थे। मैंने उनको तमाम हालात से वाकिफ कराया था। उनके पत्र का इंतजार कर रहा हूं। पत्र आने पर आपको भी इत्तिला दूंगा। श्रीमती सुशीला त्रिपाठी का एक पत्र मैं राष्ट्रपतिजी (कांग्रेस-सभापति) को भेज रहा हूं। उसमें उन्होंने प्रार्थना की है कि वह अलवर के प्रधान मंत्री से पत्र-व्यवहार करके उन लोगों की तकलीफ को दूर करने की कोशिश करें।

आपका सेवक,
सी. कृष्ण नायर
जनरल सेक्रेटरी, प्रा. कां. कमेटी, दिल्ली

: ८३ :

नई दिल्ली, २७-३-३५

पूज्य काकाजी,

आपका पत्र मिला। आप लोगों को क्यों ऐसा विचार आया कि मेरा

स्वास्थ्य अच्छा नहीं। स्वास्थ्य तो खूब अच्छा है।

आपको कई दिनों से लिखने की सोच रही थी, परंतु समय नहीं मिल रहा था। कुछ समय पहले मैंने आपको मिस राम के पत्र भेजे थे, जिसमें उसने मुझे अपने पिता के साथ काम करने को कहा था। उस समय मैंने नहीं कर दी थी। पीछे उसके पिता की मृत्यु हो गई। उनका दवाखाना वह लोग एक हिंदुस्तानी मित्र को बेच रहे थे। परंतु कागजात पक्के होने से एक-दो दिन पहले उनकी मृत्यु हो गई। पीछे से उस मित्र ने कई मुश्किलें खड़ी कर दीं। सो मिस राम और उसकी मां बहुत चिंतित तथा दुखी थे। मिस राम ने फिर मुझे बुलाकर उनके यहां जाकर काम करने को कहा, ताकि दवाखाना बना रहे। उसका भाई तीन वर्ष में डाक्टरी पास कर लेगा और फिर वह सम्भाल लेगा। उसने यह भी कहा कि तुम्हारा किराया जाने का हम दे देंगे। तीन सौ साठ रुपये तुम्हें और दे देंगे ताकि पीछे से वहां कुछ समय पाने पर लौटने का सामान भी तुम्हारे पास हो जायगा।

आपको यह सब कैसा लगता है ? जाने में उनकी सहायता होती है। मुझे स्कालरशिप इत्यादि की खोज करने से छुट्टी मिलती है। विदेश का अनुभव मिलता है, पर आज की परिस्थिति में इतनी दूर जाना मुझे अच्छा नहीं लगता। आप अपनी राय जल्दी लिखिएगा, ताकि मैं डा. होल्टन—प्रिंसिपल से भी यदि आप उचित समझें तो बात कर सकूं। वह ५ या ६ जनवरी को चली जावेंगी।

सुशीला (नायर) का प्रणाम

: ८४ :

मिला, २८-७-२४

प्रिय जमनालालजी,

प्रणाम। आपका पत्र मिला। मैं तो चाहता हूं कि समाज में क्रांति होकर हम-जैसों को जातिच्युत कर दिया जाय। बड़े भाईजी एवं पिताजी कुछ

भयभीत हैं। इसलिए मेरी सलाह नहीं मानते हैं। भाईजी दिल्ली में हैं। उन्होंने लिखा है कि लोगों की वहियों में कई सामग्री हमारे बड़ी अनुकूल मिली हैं। प्रिय जाजूजी को यह समाचार दे दीजिए। मैंने इस कार्य में दिल-चस्पी लेना छोड़ दिया है; क्योंकि मेरी सलाह भाईजी को पसंद नहीं है। देखें क्या होता है। मेरी इच्छा वर्धा आने की नहीं है। संभव है, कार्तिक तक बंबई जाऊं। उस समय वर्धा आ सकूंगा। हमारे विरोधी जितना आंदोलन बढ़ावें, उतना अच्छा है। क्रांति से ही लाभ होता है।

विनीत,
घनश्याम (बिड़ला)

: ८५ :

२७-१०-२४

प्रिय जमनालालजी,

आप मिल में ठहरने का बंदोवस्त कर लीजिएगा। आदमी द्वारा पूज्य महात्माजी के वास्ते संतरे भेजे थे। पहुंच गये होंगे?

मैं व्यापार में फंसा हूं।

पूज्य पिताजी एवं पूज्य बड़े भाईजी व्यापार छोड़ने के नाम से असंतुष्ट होते हैं। उन्हें प्रसन्न करने के लिए सवकुछ करता हूं। यह भी धर्म ही है। केशवराम काटन मिल भी भाईजी ने ले ली। इसलिए काम और भी बढ़ गया।

इतना होने पर भी पू. महात्माजी आर्थिक या शारीरिक सेवा जो आज्ञा करेंगे, उसको सहर्ष स्वीकार करूंगा। मेरी स्थिति बड़ी विचित्र है। जो कुछ चाहता है, करता कुछ और। शायद इसमें भी कुछ संयम होगा।

विनीत,
घनश्याम

: ८६ :

कलकत्ता, २२-७-२५

प्रिय जमनालालजी,

यदि जाजूजी का भतीजा तैयार होगा तो लड़का पसंद आने पर संबंध हो सकता है। लड़का भैयोंवाला आज पहुंच गया। लड़का सुशील जान पड़ता है। क्या इस लड़के से भी संबंध हो सकता है। लिखिएगा। यह लड़का अभी बहुत कम पढ़ा है, मेरी राय में इसे मैट्रिक तक पढ़ाना चाहिए। पीछे काम सीखना अच्छा होता। मैं इसे कहूंगा, यदि इसकी राय होगी तो लक्ष्मीनिवास के साथ पढ़ने के लिए रख दूंगा। नहीं तो मिल्स में काम सीखने का प्रबंध कर दूंगा।

पू० महात्माजी को सविनय प्रणाम के बाद यह पत्र पढ़ा दीजिएगा।

देशबंधु के स्मारक में मैंने अबतक कुछ नहीं दिया। इसका कारण यह है कि इस समय खूब एक्साइटमेंट है। जो देते हैं, उनकी पत्रों में प्रशंसा होती है। फोटो छपते हैं। कोठारीजी वगैरह लोगों को विविध प्रकार से उत्साह एवं यश का प्रलोभन देकर रुपया निकलवाते हैं। इसके माने यह हुए कि जो न देंगे उनकी लोग निंदा भी करेंगे। मुझे पवित्र कामों में निंदा अधिक प्रिय होती, इसलिए चंदे की लिस्ट समाप्त होने पर महात्माजी की इच्छा के अनसार चुपचाप दूंगा जिसे या तो वे ही जानें या मैं ही जानूं। "बिड़ला बहुत दान करते हैं" ऐसा सुनते-सुनते मैं न केवल ऊब गया बल्कि प्रशंसा कम न हो इस खयाल से खुशामदियों को भी हमलोग दे डालते हैं। इसलिए जब मणीलालजी ने मुझे तार दिया तो मैंने सूखा उत्तर दे दिया। उनकी भिक्षा-शैली मुझे पसंद भी नहीं है। आप जब जेल में थे तब किस प्रकार वे मेरे गले पड़े थे कि यह मुझे भलीभांति याद है। इसलिए मेरा विचार अंत में देने का है, किंतु यदि अखिल भारतवर्षीय कोष खोलते हैं तो मैं उसम दूंगा; क्योंकि महात्माजी उसमें ट्रस्टी हैं, इसलिए उसमें मुझे अधिक विश्वास है। ज़ो हो महात्माजी की जैसी आज्ञा होगी वैसा करूंगा। आप उनसे मेरा प्रणाम कहिएगा और कह दीजिएगा कि स्त्री की बीमारी एवं अन्य अनेक

झंझटों के मारे चित्त में शांति नहीं है। आशा है, वे मझे बराबर आशीर्वाद देते रहेंगे।

विनीत,

घनश्याम

पुनश्चः

अखिल भारतवर्षीय कोष के लिए अपील में मैं सही करके पांच सवारों में शामिल नहीं होना चाहता—यह नेताओं का काम है। इसमें मेरी योग्यता नहीं है।

: ८७ :

आश्रम, १-२-२८

प्रिय भाई घनश्यामदासजी,

तार आपका मिल गया था। श्री हीरालालजी के जरिये आपके स्वास्थ्य के समाचार मालूम हुए। स्वास्थ्य व दवा आदि के संबंध में मुझे विशेष अनुभव न होने के कारण मैं इस विषय में लिख नहीं सकता, परंतु मुझे यह लगता है कि आप या तो दवा बिल्कुल छोड़कर मामूली जलवायु विश्रांति आदि से स्वास्थ्य ठीक कर लेंवें, अथवा जिस वैद्य या डाक्टर पर आपका पूरा विश्वास हो उनकी सलाह मुताबिक करें। अधिक फेर-बदल करने से स्वास्थ्य में जल्दी लाभ होने में शायद रुकावट पहुंचे। आप खुद भी वैद्यकी का ज्यादा प्रेम रखते हैं। संभव है, उससे भी देर होती हो। यह तो मेरे मन में आये हुए विचार आपको लिख भेजे हैं। मैंने ऊपर लिखा ही है, इस विषय में लिखने का मुझे अधिकार नहीं है।

पूज्य बापूजी के स्वास्थ्य के समाचार श्री हीरालालजी ने आपको लिखे ही हैं। रात्रि को उनका ब्लडप्रैशर और भी बढ़ गया। २१४ तक चला गया। रात्रि से डाक्टरों के कहने के मुताबिक आराम तो ले रहे हैं। यह तो ऐसी हालत में भी काम करना चाहते हैं।

आज आपको भी पत्र लिखवाया है। उनकी इच्छा है, अब पिलानी में रहकर स्वास्थ्य पहले सुधार लें अथवा आप कुछ रोज के लिए यहा आं

जायं। हकीमजी के स्मारक के लिए आप योग देंगे तो बापूजी को अधिक संतोष होवेगा।

१. आप हकीमजी के स्मारक में देना पसद करते हैं क्या ?

२. अगर पसंद करते हैं, तो क्या देने की इच्छा है।

३. अगर स्मारक में देना पसंद हो और वर्तमान में और रकम निकालने इच्छा न हो तो पूज्य बापूजी के जरिये खर्च करने को जो आपने ७५००) भेजे हैं उसमें से देना पसंद करेंगे, और पसंद करेंगे तो कितना ?

मेरी समझ में ऊपर लिखे मुताबिक प्रश्नों को ध्यान में रखकर आप पूज्य बापूजी को खुलासा लिख भेजेंगे, तो उन्हें संतोष होवेगा।

अगर देना पसंद करें तो खुले नाम से देने में मुझे तो कोई हर्ज नहीं मालूम होता है।

संभव है, यहां कुछ रोज रहना हो, पत्र यहीं दें।

जमनालाल बजाज के वंदेमातरम्

: ८८ :

लंदन, १०-९-२८

प्रिय भाई जमनालालजी,

आपका प्रेम-पत्र मिला। छतरी के कारखाने के संबंध में कपड़ा बाहर से आता है, बेंत और ताड़ियां बाहर से आती हैं। बाकी सिलाई-जुड़ाई कलकत्ते में होती है। कपड़ा अपने यहां आज की मिलों की स्थिति में तैयार होना मुश्किल है। मैंने कुछ प्रयोग किये थे किंतु बिना बड़ी जकात के सफलता नहीं मिल सकती। बेंत का मुझे ज्ञान नहीं—ताड़ियां मैं नहीं जानता। टाटा बना सकते हैं या नहीं। टाटा आदि ताड़ियां बना दे तो फिर कपड़े का सवाल शेष रहे। बेंत का सवाल तो साधारण है। विशेष बातें मिलने पर करेंगे।

मैं १३ सितंबर को प्रस्थान करूंगा।

विनीत,
घनश्याम

: ८९ :

घनश्यामदासजी बिड़ला, (१९३०)
नई दिल्ली।

बापूजी के पास से अभी लौटा। आपके और मालवीयजी के इस्तीफे से बड़ी प्रसन्नता हुई। यदि आप और मालवीयजी विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार की ओर अपना पूरा ध्यान दें तो बापू बहुत खुशी होंगे। नमक के एकाधिकार को दूर करने के लिए भी स्वतंत्र रूप से काम करें।[1]

जमनालाल

: ९० :

लंदन, दिसंबर, १९३१

प्रिय जमनालालजी,

नमस्कार। बापू को यहां परिश्रम काफी पड़ा है। प्रायः ४ घंटे से ज्यादा सोने को नहीं मिला है। भोजन भी कम होगया है। वजन करीब १०० पौंड रह गया है। किंतु अब इस सारे परिश्रम की समाप्ति होने को आ गई है। जहाज पर आराम मिलेगा। किंतु मेरा ऐसा खयाल है कि भोजन इनका सदा के लिए घट गया है। यह चिंता की बात है।

इनके काम करने के ढंग में, पंडितजी की तरह इनमें भी यह त्रुटि है कि सारा काम स्वयं करते हैं। सेनानायक की तरह हर मनुष्य का संचालन नहीं करते हैं। बहुत-कुछ काम जहां हम लोगों से ले सकते थे सो भी नहीं लिया है। जो कुछ अपने-आप मैंने किया सो किया, इनकी तरफ से कोई संचालन नहीं मिला। संचालन करने से एक छोटा-सा गुट्ट यहां बन सकता था, किंतु वह नहीं बना और जहां एक ही मनुष्य रोजमर्रा २० घंटे काम किया करे, वहां काम की किस्म भी कुछ हल्की हो जाती है।

विचार करने को भी समय नहीं मिलता। इस तरह से काम यही कर सके। दूसरा मनुष्य तो बीमार पड़ जाता। परिषद की असफलता के ये

---

[1] अंग्रेजी तार से अनूदित

कारण हैं :—

१. सरकार की वेईमानी—प्रधान

२. हिंदू-मुस्लिम-समस्या—दोयम

३. यहां लोगों का अनैक्य

४. बापू का अत्यधिक कार्य-भार—यह वहुत गौण है

सत्याग्रह अवश्यंभावी मालूम होता है। हालांकि यहां लोग सत्याग्रह के नाम से ही विचलित हैं किंतु अनुदार लोगों का राज्य है, इसलिए मौका पड़ने पर खूब लड़ लेंगे और निर्दयता से लड़ लेंगे। किंतु शायद एक या दो साल के वाद फिर आपस गें संदेशे चलने लगें। अबकी वार जो यहां अनुभव हुआ है, उससे भविष्य में लाभ उठाना चाहिए। एक तो भविष्य में समझौते के समय भिन्न-भिन्न विचार के लोगों को कोई स्थान नहीं मिलना चाहिए। यहां की हालत यह है कि फेडरेशन के प्रतिनिधियों को छोड़ और किसीने बापू का साथ नहीं दिया है। हिंदू और सिख-प्रतिनिधियों ने काफी रोड़े अटकाये। पंडितजी ने भी उन्हींका साथ दिया।

मुसलमानों ने तो दुश्मनी की ही। अछूत-प्रतिनिधि ने काफी धृष्टता की। एक वापू बोलते थे तो वीस विरोध करनेवाले हमारे ही आदमी उछल पड़ते थे। उनका व्याख्यान हो चुकने के वाद अफसरों के सामने उनकी दिल्लगी उड़ानेवालों की कमी न थी। हमारे मित्र-दुश्मन सभीने एक-सा बर्ताव किया। दोस्त दुश्मनों का साथ देते थे। मेरे हृदय की दशा पूछो तो रो पड़ता हूं। बापू ने एक रोज कहा कि यहां मेरे साथ कोई नहीं है। तव मैंने विरोध किया कि मैं तो हूं। पुरुषोत्तमदास ने कहा हम तीन आपके साथ हैं किंतु जब मुंजे को मैंने बुलाकर आरजू-मिन्नत की तो कहने लगा, मैं उनका हर्गिज विश्वास नहीं कर सकता। यही लोग हिंदुस्तान आने पर उनकी प्रशंसा के पुल बांधेंगे। पंडितजी उनका गुणगान करेंगे। किंतु यहां सबलोगों ने उनपर छुरी चलाई है। यह मैं इसलिए लिख रहा हूं कि भविष्य में कांग्रेस में भी ऐसे ही आदमियों को स्थान मिले जो काबिले एतबार हों। जगतनारायणलाल-जैसे आदमी जेल भी चले जाते हैं और कांग्रेस या

बापू पर छुरी भी चलाते हैं। हमें घर की एकता कर लेनी चाहिए।

सुना था, आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं है। क्या हाल है ? लक्ष्मीनिवास को स्वतंत्र रखने से ही लाभ होगा। इसीलिए आपके साथ रहने को नहीं कहा, किंतु वर्धा-जैसी जगह बापू का खेमा लगे तब जा सकता है।

स्नेहास्पद,

घनश्याम

: ९१ :

कलकत्ता, २८-४-३२

प्रिय भाई जमनालालजी,

आपका पत्र मिला। समय-समय पर लिख दिया करें। आप "सी" क्लास में हैं, इससे मुझे भय नहीं हुआ था; क्योंकि मैं जानता था कि आपको कष्ट नहीं होगा। भोजन के संबंध में मेरी प्रकृति भिन्न है। दूध तो थोड़ा मिलना ही चाहिए और कुछ चाहे न मिले।

फेडरेशन का प्रस्ताव आ गया होगा। हम लोगों का व्यावहारिक रुख तो वही रहा है, किंतु असहयोग की बुनियाद बदल दी है। कुछ मित्रों को यह पसंद नहीं था किंतु मेरे आग्रह के कारण सर्व-सम्मति से पास हो गया। इसका कुछ हेतु तो था ही।

भविष्य अच्छा है। शायद दिसंबर तक हम लोग मिलें। बापू की भलमनसी की छाप पड़ती जा रही है। हम लोगों से जो बन पड़ता है, बापू को असली रूप में समझाने का प्रयत्न करते हैं। लंदन से मित्रों के पत्र आते रहते हैं और एंडरूज भी चले गये हैं। बापू के पत्र आते रहते हैं।

मन तो मेरा आपके पास याने भीतर पड़ा है। "मांहे रह्या ते महा सुख माणे" यह आप लोगों की स्थिति है। मैं भी प्रसन्न हूं। व्यापार तो खराब ही है, किंतु अपने तो कुछ करते नहीं हैं। लक्ष्मीनिवास प्रसन्न है, दिल्ली है। चंदा भी वहीं है और सब प्रसन्न हैं। और कुछ लिखियेगा।

घनश्याम

: ९२ :

प्रिय जमनालालजी,

आपका पत्र मिला। मैं आजकल खूब प्रसन्न हूं। इन महीनों में खूब आत्मशोधन किया है और उससे अत्यंत लाभ हुआ है। बापूजी के पत्र आते रहते हैं। श्री जानकीबाई मुझसे कलकत्ते में दो बार मिली थीं। मैंने उन्हें यही सलाह दी कि कलकत्ते के बजाय ग्रामों में अधिक काम करना चाहिए। ग्रामों में स्वदेशी एवं खद्दर को अधिक सफलता मिलेगी।

पू० मालवीयजी अभी ठीक हैं। आशा है, दो-एक महीने तक बिल्कुल स्वस्थ हो जायंगे।

आप प्रसन्न होंगे। मैं दिल्ली १-२ महीने रहूंगा।

और सब मंगल है।

विनीत,
घनश्याम

: ९३ :

वर्धा, २४-९-३३

प्रिय भाई घनश्यामदासजी,

मेरा पत्र 'सस्ता साहित्य मंडल' के बारे का आपको मिल गया होगा। पूज्य बापूजी कल यहां पहुंच गये। चि. गोपी (गजानन की स्त्री) व चंपाबाई भी उनके साथ आई हैं। वह मेरे पास ही ठहरी हैं। सोना, खाना मेरे पास है, बाकी का समय पू० बापू के पास जाने में बिताती रहती हैं। पू० बापू का और मेरा खयाल है कि गोपी को यहां ठीक आराम व फायदा मिलेगा।

पू० बापूजी ने आज मुझसे साबरमती-आश्रम की जमीन व इमारतों के बारे में बातचीत की थी। सरकार ने उस जमीन व इमारतों का कब्जा नहीं किया तो फिर क्या किया जाय, इसपर अहमदाबाद में कई मित्रों ने कई प्रकार की योजना उनके सामन रखीं। आश्रम की जमीन व इमारतों को जब सरकार के हवाले करने का निश्चय किया था तब तो यह विचार था कि जब कभी सरकार से समझौता हो जायगा तब, या स्वराज्य मिलने पर इस जमीन तथा इमारतों का आश्रम के काम के लिए उपयोग किया जाय, परंतु अब

बापू का यह विचार हुआ है कि इनसब जमीन व इमारतों का स्थायी तौर से हरिजन लोगों की सब प्रकार की उन्नति के काम में उपयोग किया जाय। अब सवाल यह पैदा हो रहा है कि यह सब जमीन, इमारतें, अहमदाबाद के मित्रों के, जो इस काम में रस लेते हैं, अधीन की जावें या हरिजन बोर्ड के। मैंने तो यही राय दी कि वह स्टेट हरिजन बोर्ड (जनरल) के सुपुर्द करना ज्यादा ठीक रहेगा। इस चर्चा के बाद यह विचार हुआ कि श्री अमृतलालजी ठक्कर यहां तारीख २९ को आनेवाले हैं ही। अगर उस समय कुछ रोज के लिए आप भी यहां आ जावें तो इसका पूर्ण तथा संतोष-कारक खुलासा हो सकेगा। सो अगर आप यहां इस मास के आखिर या अक्तूबर प्रथम या दूसरे सप्ताह में आ सकें तो समक्ष म संतोषकारक निश्चय हो जायगा। इससे पूज्य बापू व हम सबों को पूरा संतोष रहेग । कानूनी लिखा-पढ़ी भी होना जरूरी है। पू० बापू इसका जल्दी ही फैसला कर लेना चाहते हैं। उनकी आज्ञा से ही यह पत्र मैं आपको लिख रहा हूं। आपको यहां आये भी बहुत दिन हो गये हैं। आप यहां आवेंगे तो चि. गोपी तथा अन्य बालकों से व मित्रों से भी मिल सकेंगे। आप किस तारीख को आ सकेंगे इसका पत्र पहुंचते ही तार कर देना।

जमनालाल बजाज के वंदेमातरम्

: ९४ :

नई दिल्ली, १९३४

प्रिय भाई जमनालालजी,

आपका पत्र मिला। आश्रम के बारे में बापू का खत मिला है। मुझे जो बाधा मालूम पड़ती थी वह अब नहीं है। जिन दो सज्जनों का नाम बापू ने लिखा है, वे सम्हाल लेंगे और वे अच्छे तो होंगे ही। दिल्ली के छात्रावास के संबंध में मनसूबा ढीला नहीं पड़ना चाहिए। मैं तो यह चाहता हूं कि दौरे में बापू जो धन संग्रह करें वह सारा दिल्ली-आश्रम में लगे। दौरे का प्रोग्राम कल तक यहां से भेज देंगे।

मिर्जा इस्माइल ने बापू के बारे में खूब अच्छा कहा। इससे लाभ ही होगा। बापू का अहमदाबाद का व्याख्यान बड़ा सुंदर था।

बंबई में तो भूकंप हो रहा है । फाजल भाई गये, हुकमचंद का डर है। न मालूम कितना भारतीय उद्योग हस्तांतर हो जाय। मैं चाहता हूं कि हम लोग कुछ आदमी मिलकर उद्योग करें कि जिसमें भारतीय उद्योग हमारे हाथों से बाहर न जाय, किंतु मेरी कितनी शक्ति और कहां सहयोग ! यह ईश्वर की इच्छा होगी तो होगा।

बापू को मेरा प्रणाम कहना और खत पढ़ा दीजिएगा ।

गोपी का हाल लिखिएगा। भगवान करे यह घर बस जाय । बापू के आशीर्वाद से भला ही होगा।

विनीत,

घनश्यामदास

: ९५ :

नई दिल्ली, २४-८-३६

प्रिय भाई जमनालालजी,

जब-जब मैं वर्धा आता हूं, तब-तब आप और ही कहीं रहते हैं। सिर्फ एक बार मैं आया तब आप वहीं थे और तब भी आपको नेतागिरी के काम से ही फुरसत नहीं मिलती। कम-से-कम इस बार मैं आऊं तब तो नेतागिरी से आपको फुरसत रहनी चाहिए। इस नेतागिरी के काम को वैसे तो आप कुछ कम कर दें तो अच्छा, क्योंकि नेताओं की सप्लाई आजकल बहुत है, इसलिए दाम गिरते जा रहे हैं। खैर इस बार मैं आऊं तब आप और कमल की मां दोनों ही वहां हों तो कुछ दिन शांति के साथ बैठकर गप-शप करने का भी मौका मिल जाय और आपको भी इससे आमोद-प्रमोद और विनोद मिल जायगा।

एक और शिकायत है। कमल की सगाई हुई। उसमें मेरा भी कुछ हाथ था। कुछ मिठाई भेजना तो दूर आपने इसकी खबर तक नहीं की।

इसका बदला भी वहां आने पर लूंगा। कमल की मां के लिए भी यही शिकायत है।

आपका,

घनश्यामदास

: ९६ :

वर्धा, २९-८-३६

प्रिय भाई घनश्यामदासजी,

आपका पत्र मिला। पू० बापू के पास आपका पत्र आया था, उससे मालूम हुआ कि आप मेरी असुविधा-सुविधा को नजर में रखते हुए यहां मीटिंग नहीं रखना चाहते हैं। वास्तव में मुझे तो कोई असुविधा हो ही नहीं सकती थी। १२-१५ मेहमानों के उतरने व रहने आदि का प्रबंध तो यहां हमेशा ही रहा करता है। और आपका मेरा जो संबंध है उसको देखते हुए यदि मुझे कोई असुविधा होने की संभावना होती तो मैं आपको स्पष्टतया कह देता। वैसा करने में मुझे कोई संकोच नहीं रहता। पहले श्री ठक्करबापा का पत्र भी सितंबर मास में सभा करने के बारे में आया था और उसके अनुसार मैंने उनको लिख दिया था कि यहां सभा रखने में मुझे तो प्रसन्नता ही होगी। मैंने अपना प्रोग्राम भी उसीके अनुसार बना लिया था और श्री ठक्करबापा के पत्र का इंतजार कर रहा था। आपके बापू के नाम के पत्र से मझे कुछ बुरा तो लगा। आपका वह पत्र पढ़ने पर फिर मैंने आपको कल तार किया था जिसके उत्तर में आपका भी तार मिल गया था। आज फिर इस आशय का तार किया है कि हो सके तबतक मीटिंग यहीं करें।

अगर किसी प्रकार मीटिंग यहां नहीं हो सकती हो तो फिर आप मीटिंग खत्म करके यहां चले आइएगा। पहले भी मेरी यही कल्पना थी कि मीटिंग के बाद आपके साथ यहां एक सप्ताह रहेंगे। अतः अब मीटिंग समाप्त होने पर आप यहां आ जावें जिससे कुछ दिन यहां साथ रह लेवेंगे। ऐसे तो अक्तूबर के बाद यहां की ऋतु अच्छी होती है, परंतु प्रोग्राम के सुभीते को देखत हुए सितंबर में आना ठीक होगा। बाद में मेरा विचार मकंदगढ़,

सीकर, वनस्थली आदि स्थानों पर जाने का है । अक्तूबर के प्रथम सप्ताह में पिलानी रहने का मेरा विचार है ; क्या आप भी उस समय वहां रह सकते हैं—जिससे वहां भी एक सप्ताह साथ रह सकेंगे । इससे हवा-फेर भी हो जावेगा ।

श्री जानकीदेवी आजकल बंबई में हैं । उसका स्वास्थ्य कुछ ठीक नहीं रहता था । ऐसे तो उसका विश्वास किसी डाक्टरी या वैद्यक इलाज पर नहीं है परंतु सांताक्रुज के श्री गौरीशंकर भाई के इलाज पर उसका विश्वास है । शायद दो-तीन मास और वहीं रहना पड़े । कमल की सगाई का तो आप पहले से ही जानते थे । १।। मास पूर्व किसी पत्र में आपने ही इस संबंध में लिखा था । मिठाई देने का हक तो पू० बापू को है, सो आपको यहां आने पर मिल ही जावेगी ।

जमनालाल बजाज के वंदेमातरम्

: ९७ :

लंदन, २१-६-३७

प्रिय भाई जमनालालजी,

चिरंजीव कमल के विवाह के उपलक्ष में मेरी हार्दिक बधाई और शुभ कामना इस पत्र द्वारा भेजता हूं । यह शिष्टाचार की शुभ कामना नहीं है, क्योंकि मेरा और कमल का संबंध शिष्टाचार के नाते से बाहर निकल गया है । ईश्वर से मेरी प्रार्थना है कि वर-वधू दोनों सुखी और संपन्न हों । उनकी बद्धि सदा धर्म में रहे और वैश्योचित कार्य करते हुए मानव-समाज की सेवा करते रहें । फिर से आशीर्वाद ।

आपका,
घनश्यामदास

: ९८ :

कलकत्ता, ६-११-३७

प्रिय भाई जमनालालजी,

बापू की तबियत पहले से तो अच्छी है, पर जितना विश्राम लेते हैं

उसके अनुसार आराम नहीं है। वर्षों की थकावट एक दिन में कैसे मिट सकती ह ? और अब तो गवर्नर से बात करने के बाद उनका काम भी बढ़ जायगा। उससे थकान भी बढ़ेगी। इसलिए यह आवश्यक है कि सेगांव वापस लौटने पर उन्हें अत्यधिक विश्राम मिले। इस विषय में मैंने बापू से भी बातें की हैं और उन्होंने मेरी राय स्वीकार भी कर ली है।

फ्रंटियर का प्रोग्राम तो अभी स्थगित कर ही दिया है, इसलिए यहां से लौटने पर उन्हें पूर्ण विश्राम देना आपके हाथ में है। सब प्रकार की मुलाकातों पर प्रतिबंध लगा देना चाहिए। बापू की इच्छा भी ह कि पूर्ण विश्राम लें और अगर आप उचित प्रबंध कर देंगे तो उन्हें विश्राम मिल सकता है। और उनकी तबियत भी स्वस्थ हो सकती है।

आपका,
घनश्यामदास

पुनश्च :

यह पत्र लिखने के बाद आपका पत्र मिला है। महादेवभाई को कह दिया है कि एक तार रोज भेज दिया करें।

: ९९ :

नई दिल्ली, १३-२-३८

प्रिय जमनालालजी,

मैं, आपको वेस्टर्न इंडिया लाइफ इन्श्योरेन्स कंपनी लिमिटेडवालों से अपने मिलने के बारे में कुछ लिखा था, उसकी याद दिलाना चाहता हूं। यदि आप मुझे इस परेशानी से नहीं बचा सकते तो आपके नेता होने का क्या उपयोग ? [1]

आपका,
घनश्यामदास

---

[1] अंग्रजी से अनूदित

: १०० :

कलकत्ता, २२-६-३८

प्रिय भाई जमनालालजी,

आपका पत्र आने से पता लगा कि कमलनयन यहां हैं। पता लगने पर लक्ष्मणप्रसादजी के यहां फोन किया तब निश्चिय हुआ। मैंने उससे कहा है कि मैं जमनालालजी को लिखूंगा कि ३ दिन से यहांपर हैं और मुझे खबर भी नहीं दी। आज शायद रात को आवेगा। मुझे तो उसे देखे करीब सात साल हो गये, सो मिलने से पता चलेगा कि कैसा लगता है। कमला की मां को कह दीजिएगा।

आजकल मुझे नेताओं से चिढ़ होती जाती है, पर क्या करें। इनके बिना काम भी नहीं चलता। हमारा विचार भी नेता बनने का है। कांग्रेस में कोई जगह खाली हो तो लिखना। राष्ट्रपति से नीचे की कोई पोस्ट नहीं चाहिए। क्या-क्या शर्तें हैं, सो लिख भेजना।

वर्धा आने का विचार है, जुलाई के अंत तक। तबतक यहीं नेतागिरी करेंगे सो नांध लेना।

भाई,

घनश्यामदास

: १०१ :

वर्धा, २५-६-३८

प्रिय भाई घनश्यामदासजी,

सीकर के मामले में मेरा वक्तव्य व अपील आपने देखे होंगे। सीकर का आंदोलन इस समय जो लोग चलाते हैं मेरे विचारों से सहमत नहीं हैं। मैंने उन लोगों को समझाने की बहुत कोशिश की थी, परंतु वे लोग सीकर के हित की बात भी समझ नहीं सके, इसका दुख है। जयपुरवालों का भी काफी दोष है, पर मैं तो सीकरवालों की दृष्टि से विचार कर सकता हूं, जयपुरवालों को भी मैंने जो कुछ कहना था कहा था। सीकरवाले गलत तरीके पर हैं। इस बारे में मेरा मतभेद नहीं है, परंतु मेरे लिखने का कोई उपयोग होता दिखाई

नहीं देता है, इसलिए मैं उन्हें इस समय कुछ न लिखना ही ठीक समझता हूं।

जमनालाल बजाज के वंदेमातरम्

: १०२ :

कलकत्ता, २५-७-३८

प्रिय भाई जमनालालजी,

सीकर में आपने क्या समझौता करवाया है, यह तो आपका पत्र आने से पता लगेगा। सीकरवालों ने हथियारों का प्रदर्शन करके काफी बेवकूफी की थी और अब हथियार रख दिये यह तो ठीक किया, पर आत्म-समर्पण किस मुद्दे पर किया है ? क्या भविष्य में प्रजा की आवाज को महत्व देने के लिए कुछ तय कर लिया है? यदि नहीं, तब तो आत्म-समर्पण और पब्लिक कमिटी की गिरफ्तारी और अंत में महाराज की जय-जयकार, यह सब प्रजा की शक्ति का ह्रास करनेवाला मालूम होता है। पर आशा है कि यदि आप बीच में रहे होंगे तो कुछ उचित बात ही की होगी। अबतक प्रत्यक्ष में कोई बात बाहर नहीं आई है, इससे थोड़ा डर लगता है। हालांकि जिस बेवकूफी से सीकरवालों ने हो-हल्ला मचाया था और "रावराजा की जय" की चिल्लाहट के पीछे जिस तरह से उत्तेजना फैलाई जाती थी, उसका तो नतीजा यही होनेवाला था। आशा है, प्रजा-मंडल के संबंध में भी आपने महाराज से कुछ बातें की होंगी।

सी. पी. की स्थिति खराब मालूम होती है। खरे को छोड़कर भी यदि उसी पुरानी टोली के हाथ में राज्य का कारोबार रहा तो स्थिति सुधरने की संभावना कम मालूम होती है। बेहतर तो यह हो कि सारा कचरा साफ किया जाय और अच्छे लोगों को संचालन का भार दिया जाय।

आपका,

घनश्यामदास

: १०३ :

वर्धा, २९-७-३८

प्रिय भाई घनश्यामदासजी,

आपका २५-७-३८ का पत्र मिला। सीकर और जयपुर में आपकी

काफी याद आती रही और आपको एक विस्तृत पत्र लिखने की इच्छा भी हुई। परंतु समयाभाव से लिख नहीं सका।

जयपुर में महाराजासाहब तथा सर बीचम से मुलाकातें हुई थीं। सर बीचम का रुख उचित नहीं था। महाराजसाहब की बातचीत में आपका भी जिक्र हुआ था। मैंने जो पत्र उन्हें लिखे हैं, उनमें भी आपका उल्लेख किया गया है।

सीकर के आंदोलन में सीकर की प्रजा के हिस्से में काफी दोष आता है। मैंने यह बात जाहिरा तौर पर भी कही है। परंतु जयपुर के अधिकारियों ने एक के बाद एक दीगर जो गलतियां की हैं वे भी गंभीर रूप की हैं। इस सिलसिले में मैंने महाराजा साहब के नाम जो पत्र लिखे हैं, उनकी नकलें आपकी जानकारी के लिए भेजी हैं।

जमनालाल बजाज के वंदेमातरम्

: १०४ :

कलकत्ता, ७-९-३८

प्रिय भाई जमनालालजी,

यंग से काफी बातें हुई। उसने कहा कि 'मैंने जमनालालजी को इतना ही आश्वासन दिया था कि कैदियों के लिए में भरसक प्रयत्न करूंगा। मेरा प्रयत्न जारी है। थोड़ी सफलता मिलती है, फिर कोई विघ्न आ पड़ता है। जमनालालजी को में क्या लिखूं ? मेरा मालिक मैं स्वयं नहीं हूं। और मैंने तो इतना ही कहा था कि अपनी ओर से मैं कोई चीज उठा नहीं रखूंगा। और उसे मैं कर भी रहा हूं।'

उसे यह पूरा शक है कि आपने सीकर के मामले में गुपचुप रुपये की सहायता दी। मैंने उससे कहा कि उसकी खबर निराधार है। जमनालालजी कोई चीज चोरी-छिपे नहीं करते। और वे बेवकूफ भी नहीं है कि इस तरह रुपया फेंके। उसने कहा कि जमनालालजी ने थोड़ी सहायता तो की पर साथ ही वे सत्याग्रह का बखेड़ा मचवाना चाहते थे। मैंने कहा यह भी गलत है।

इस तरह से अनेक बातें हुई हैं। पिलानी के संबंध में भी बातें हुईं। वे लोग हमें संतोष तो देना चाहते हैं, पर यंग कुछ समय चाहता है। मैंने उसे कहा है कि १५ तारीख के करीब दिल्ली आ जाइए। वहां वह और हम दोनों बैठकर बातें कर लेंगे। मैं दिल्ली २० तारीख तक पहुंचूंगा, तब हम मिलकर सब बात कर लेंगे। अभी तो इतना ही कहना है कि आप कोई वक्तव्य या व्याख्यान इस संबंध में न दें।

आपका,
घनश्यामदास

: १०५ :

बंबई, ८-९-३८

प्रिय भाई घनश्यामदासजी,

आपका ता० ७-९ का पत्र मिला। मैं यहां से ता० १५ को शिमला के लिए रवाना हो रहा हूं। श्री हीरालालजी का पत्र अभी यहां मिला। जयपुर-अधिकारी व वहां की प्रजा जिस प्रकार का प्रचार-कार्य कर रहे हैं, उससे तो ठहरने में किसी भी प्रकार का लाभ दिखाई नहीं देता है। अगर वह निश्चित विश्वास या वचन देते हों तो विचार किया जाना उचित है।

जमनालाल बजाज के वंदेमातरम्

: १०६ :

वर्धा, ९-९-३८

प्रिय भाई घनश्यामदासजी,

आपके देहली व कलकत्ते से दिये हुए तार मिले। देहली के तार में आपने लिखा था कि मि. यंग मिले व उनसे जो बातचीत हुई है, वह सविस्तर लिख भेज रहे हैं। मैं तो आपके पत्र की राह देख रहा था। परंतु आपका दूसरा तार कलकत्ते से आया, उसपर से मालूम होता है कि आपने पत्र लिखने का कष्ट नहीं उठाया। मेरी समझ से उठाना चाहिए था; क्योंकि

मैंने इसी काम के लिए श्री हीरालालजी को यहां बुलवाया था, यह आप जानते हैं। मेरे मन पर सीकर का आम माफी का पूरा भार है। तथापि आप देहली में मिलकर बात करेंगे, वहांतक मैं स्टेटमेंट नहीं निकालूंगा। श्री हीरालालजी को आपके पास भेज रहा हूं। इससे मि. यंग ने आपसे जो बातें कीं, उसका पूरा पता मुझे लग जायगा। श्री हीरालालजी से उसने जो बातें की हैं, उसका पता आपको लग जायगा। मुझे मि. यंग की कही हुई बातों पर अब विश्वास कम होता जा रहा है। मेरी यह समझ हो रही है कि ये लोग ढील देना चाहते हैं। यह तो आपको मालूम ही होगा कि मेरे व प्रजा-मंडल के विरुद्ध स्टेट अधिकारियों की मदद से काफी प्रचार किया जा रहा है। कई प्रकार की झूठी बातें फैलाई जा रही हैं। खैर ता० २० को तो अब विशेष समय नहीं रहा है। मैं कल बंबई जा रहा हूं। वहां से ता० १७ को शिमला पहुंचूंगा व २० को देहली। पू० बापू की गाड़ी साधारण चल रही है।

जमनालाल बजाज के वंदेमातरम्

: १०७ :

रांची, १२-१०-३८

सेठ जमनालाल बजाज,
वर्धा।

आज यंग से फोन पर बात की। सीकर के बाकी कैदी कल छोड़ दिये जायंगे। अन्य बातें संतोषपूर्ण ढंग से रहीं। बीचम शहर में नहीं हैं, इसलिए मामले में देर हो रही है। इसलिए आपको अपना जयपुर जाना दो सप्ताह के लिए और स्थगित कर देना चाहिए। कृपया इसकी पुष्टि करें।[1]

घनश्यामदास

: १०८ :

रांची, १२-१०-३८

जमनालाल बजाज,
वर्धा।

यंग का तार है कि "मामला बहुत ठीक तौर से चल रहा है। कृपया आज

---

[1] अंग्रेजी तार का अनुवाद

फोन करें या तार दें। पत्र का पता आज भेजा है। मेरा सुझाव है कि सेठ जमनालालजी जयपुर आना स्थगित करें। उसके कारणों के बारे में लिखूंगा" .... यंग को आज फोन कर रहा हूं। अब भी मेरी सलाह है कि आप जयपुर जाना स्थगित रखें।[1]

घनश्यामदास

: १०९ :

रांची, १३-१०-३८

श्री दामोदरजी,

यंग से क्या बात हुई, इसके तार तो आपके पास पहुंचते ही रहे हैं। आप पूरी बात से वाकिफ है। बिड़लाजी ने सेठजी को जयपुर जाना और स्थगित करने के लिए तार दिया है, उसका उत्तर अभी आया नहीं है।

एक बात और। सेठजी से मैंने दिल्ली में बातें की थीं, तब मैंने उनके सामने प्रतिज्ञा की थी कि यदि उन्हें सत्याग्रह करना पड़ा तो मैं सहर्ष उनकी जो आज्ञा हो, उसका पालन करूंगा। ईश्वर ने चाहा तो विना लड़ाई ही, सेठजी जो चाहते हैं, वह मिल जायगा। यदि उन्हें जयपुर जाना ही पड़े तो मुझे सूचना मेरे घर के पते से भेज दें। मैं फौरन हाजिर हो जाऊंगा।

आप प्रसन्न होंगे।

आपका,
बजरंगलाल पुरोहित,
(सेक्रेटरी, घनश्यामदास बिड़ला)

: ११० :

कलकत्ता, २९-१०-३८

प्रिय जमनालालजी,

आपका पत्र अभी मिला। जब कि और कैदी छोड़ दिये गये हैं, मुझे यह देखकर अफसोस होता है, कि लादूराम को सज़ा दे दी गई है। ऐसा लगता है कि यंग को अपने तरीके से काम करने की इजाजत नहीं है। मैंने यंग को फिर

---

[1] अंग्रेजी तार का अनुवाद

लिखा ह। मुझे हाल ही में उनका एक पत्र मिला ह कि उन्हें परिस्थिति के बारे में आशा है और उनको उम्मीद है कि मुझे हिज हाइनेस और प्रधान मंत्री से बातचीत करने के लिए आमंत्रित किया जायगा। मैं नहीं कह सकता कि इसका नतीजा क्या होगा, परंतु यदि आप यंग को लिखना चाहें तो अवश्य ही लिखने की कृपा करें। मैं तो आपसे यही कहूंगा कि आप कोई कार्यवाही करने का फैसला करें तो उसकी सूचना मुझे पंद्रह दिन पहले दे दें। मैं नहीं समझता कि मुझे आपपर अनिश्चित रूप से निष्क्रिय बने रहने का दवाव डालना चाहिए, यद्यपि फिर भी मेरा यह सुझाव है कि धीरज का फल आगे चलकर अच्छा होगा।[1]

आपका,
घनश्यामदास

: १११ :

वर्धा, १-११-३८

प्रिय भाई घनश्यामदासजी,

आपसे मिलने के बाद रुक्मिणीजी मुझसे यहां आकर मिलीं और आपसे हुई बातचीत का सार उन्होंने मुझसे बतलाया। आपका २९-१० का पत्र भी मिला। अच्छा है आपको मि. यंग के प्रयत्नों में विश्वास है। खेद है कि मुझको कुछ विशेष होना-जाना नजर नहीं आता। मैं मि. यंग को एक पत्र लिख रहा हूं, जिसकी नकल आपके पास कल तक भेज दूंगा। आपको यह जानकर संतोष होगा कि हमने फिलहाल अकाल के काम में पूरी ताकत लगाने का निश्चय किया है। मेरे विचार में इस काम में भी राज का सहयोग मिलना मुश्किल नहीं होना चाहिए। आप उचित राय करें और जयपुर के पते से लिखें कि वे हमको अच्छाई के काम में आवश्यक सहयोग दें। राज का सहयोग मिले तो अच्छा ही है। नहीं तो हमारा विचार तो उस काम को करने का है ही। इस अर्से म आपके प्रयत्नों का परिणाम भी साफ आ जायगा।

जमनालाल बजाज के वंदेमातरम्

---

[1] अंग्रेजी से अनुदित

: ११२ :

कलकत्ता, ३-११-३८

प्रिय जमनालालजी,

आपका पत्र मिला और साथ ही आपने यंग को जो पत्र लिखा है और प्रेस-वक्तव्य भी मिला।

श्री यंग का विश्वास किया जाय या नहीं, इसके बारे में तो आपको अपना स्वतंत्र विचार रखना चाहिए। जबतक मैं उनसे विचार-विमर्श कर रहा हूं तबतक मुझे अपने स्वभाव के अनुसार भी उनपर विश्वास करना ही चाहिए और मैं वैसा ही कर भी रहा हूं। यह सब होते हुए भी मैं जो भी करूं उसको खयाल किये बिना आप स्वतंत्र रूप से जो चाहें कर सकते हैं। इसलिए मेरे खयाल में इससे कुछ फर्क पड़नेवाला नहीं।

आपने यंग को जो पत्र लिखा है उसके बारे में तो मैं यही कहूंगा कि वह सुंदर है और उससे मेरे अपने हाथ बहुत मजबूत होंगे। मेरा खयाल है कि मंडल को राज्य से बहुत सहयोग नहीं मिलेगा क्योंकि दोनों ओर से अविश्वास है, पर मुझे खुशी है कि आपने यंग को लिखा है और इससे मदद ही मिलेगी।

आशा है, आप अच्छे होंगे।[१]

आपका,

घनश्यामदास

: ११३ :

कलकत्ता, १२-११-३८

प्रिय जमनालालजी,

मैंने वक्तव्य का मसौदा पढ़ लिया। जो हो, यह मुझे बिल्कुल पसंद नहीं है; किंतु मेरी राय में सबसे अच्छा तरीका यह होगा कि बापू जब वहां आयें तब इस बारे में उनसे बात कर ली जाय। मुझे यह भी निश्चय नहीं है कि इस मौके पर वक्तव्य देने की आवश्यकता है भी या नहीं। लेकिन अगर इसकी जरूरत भी है तो यह दूसरे ही ढंग का होना चाहिए।

---

[१] अंग्रेजी से अनूदित

वापू की इजाजत हुई तो मैं भी लगभग १७ को वर्धा आने की सोच रहा हूं और अगर उस वक्त वर्धा में भीड़ बहुत रही तो मैं कभी और आ जाऊंगा। कृपया लिखें कि हालत क्या है ? [१]

आपका,

घनश्यामदास

: ११४ :

वर्धा, ३-१२-३८

प्रिय भाई घनश्यामदासजी,

कल रात को जयपुर से फोन आया था। मालूम हुआ कि श्री हीरालालजी शास्त्री की अकाल-सेवा-कार्य करते हुए शेखावटी में पकड़े जाने की संभावना है। आज कोई फोन या तार आने पर निश्चित रूप से मालूम होगा।

जो कई दिनों से खबरें आ रही थीं कि जयपुर राज किस तरह की कार्य-व ही करना चाहता है, वे सब सत्य निकली मालूम होती हैं। जयपुर राज ने अपना रुख निश्चित कर लिया। इसपर से यह जाहिर होता है कि जयपुर-राज्य प्रजा-मंडल को गैर-कानूनी करार न देते हुए उसमें से चुने हुए लोगों को जेल भिजवाने पर आमादा हुई है। मैंने तो कल फोन पर ही मेरी वहां जाने की तैयारी जाहिर कर दी है। आज तार या फोन आया व वे लोग अगर चाहते हैं तो आज ही चला जाऊंगा। अन्यथा ५-७ दिन में यहांपर संगठन व व्यवस्था करके जाऊंगा। कलकत्ते में तो आप जयपुर की प्रजा का संगठन करते ही होंगे।

भाई रामेश्वरदासजी से बंबई में बातें हुई थीं। वे इस बारे में दिलचस्पी लेना चाहते हैं। उन्हें भी सूचित कर दें ताकि वे बंबई में जयपुर की प्रजा का संगठन करने का खयाल रखेंगे।

अपना कार्यक्रम मुझे लिखें।

जमनालाल बजाज के वंदेमातरम्

---

१ अंग्रेजी से अनूदित

: ११५ :

कलकत्ता, ७-१२-३८

प्रिय भाई जमनालालजी,

आपका पत्र मिला। आपके दो पत्र मिले थे। प्रथम का तो मैंने जवाव नहीं दिया, क्योंकि मैं स्वयं जयपुर से पूछताछ करनेवाला था। मुझे इस बात का विश्वास नहीं हो सका कि इस तरह हीरालालजी को पकड़ लिया जायगा। आपके पत्र से मालूम होता है कि यह खवर निर्मूल थी। मुझे दुःख है कि ऐसी निर्मूल खवर आपके पास भेजी गई।

मेरे खयाल में तो यंग को यह वात पूछना वाजिब नहीं था, क्योंकि इस तरह इन लोगों को हमारी दूरदर्शिता का माप लग जाता है। जो हो, मालूम होता है इस बात का काफी शोर मचाया गया है जिसका फल आज के 'लोकमान्य' की यह खवर है। यह खवर किस आधार पर छपी है, यह मैं नहीं कह सकता; पर मेरा खयाल है कि जिन मित्रों को आपने पत्र दिये हैं उन्हींमें से दिल्ली के किसी सज्जन ने यह खवर 'लोकमान्य' को भेजी है। मेरी राय में आपको इसका प्रतिवाद कर देना उचित है। खामख्वाह गलतफहमी फैलने से काम बिगड़ने की संभावना है।

आपका,

घनश्यामदास

: ११६ :

कलकत्ता, १०-१२-३८

प्रिय जमनालालजी,

आज मुझे यंग का एक पत्र मिला, जिसमें उन्होंने हीरालालजी की गिरफ्तारी की अफवाह के बारे में लिखा है। वह ऐसा कोई काम नहीं कर रहे हैं, फिर भी उन्होंने हीरालालजी के विरुद्ध यह आरोप लगाया है कि वे शेखावटी के जाटों को लगान न देने के लिए उकसा रहे हैं। मैंने यंग को लिखा है कि वे पूरी रिपोर्ट भेजें और मैंने उनसे यह भी कहा है कि मैं यह विश्वास नहीं करता कि हीरालालजी जैसा जिम्मेदार व्यक्ति ऐसा कोई काम करेगा।

यंग से कोई सूचना मिलने पर मैं आपको लिखूंगा। अगर उनके कहने

में कोई सचाई है तो आप प्रजा-मंडल के कार्यकर्ताओं को नियंत्रित करने की जरूरी कार्रवाई करेंगे इसमें मुझे संदेह नहीं है।[1]

आपका,

घनश्यामदास

: ११७ :

कलकत्ता, २२-६-३९

प्रिय भाई जमनालालजी,

आपका वजन कम हो गया, यह प्रसन्नता की बात है। कुछ व्यायाम करना क्यों न शुरू करें? एक ड्रिल मास्टर रखकर ड्रिल भी करें और जिमनेशियम भी करें। कम-से-कम यह तो साबित कर दें कि एक ५५ वर्ष का आदमी भी शरीर को सुडौल बना सकता है। खिचड़ी कम खाना चाहिए और मुफ्त में मिलते हैं तो फल भी काफी खाना चाहिए।

आपका,

घनश्यामदास

: ११८ :

जयपुर, ५-९-३९

प्रिय भाई घनश्यामदासजी,

आपका तार मिला। मैं श्री महाराजासाहब से दो मर्तबा मिल चुका हूं। आगे शायद और मिलना पड़े। उनकी बातचीत पर से तो संतोषकारक परिणाम निकल आने की आशा है। परंतु जबतक कुछ-न-कुछ परिणाम निकल न आवे तबतक कुछ निश्चित तरह से कहना मुश्किल है। संभव है कल और मिलना पड़े।

बिड़ला-कालेज के बारे में तथा श्री विश्वम्भरलाल के हाई स्कूल के बारे में श्री महाराजसाहब से तथा श्री शिक्षण-मंत्री नरेंद्रसिंहजी से बात तो हुई हैं। विश्वम्भरनाथ के हाई स्कूल के बारे में तो कोई विशेष अड़चन दिखाई नहीं देती। कालेज के बारे में जो बात हुई उससे यह मालूम पड़ता

---

[1] अंग्रेजी से अनूदित

है कि शेष में रास्ता आपके इधर आने पर ही निकल सकता है। मैंने श्री महाराजासाहब तथा शिक्षण-मंत्री से बात कर ली है कि वे जब कभी आपको याद कर लेंगे, आप यहां आ जावेंगे। मुझे उम्मीद है, आपको उनकी तरफ से सूचना मिल जायगी।

यदि पूरी कोशिश करके आप यहां एक ऊंचे दर्जे के हिंदुस्तानी दीवान को भिजवा सकें तो बहुत-सी कठिनाइयों का हल हो सकता है। मैं मेरी ओर से तो पूरी कोशिश करता हूं। पूज्य बापूजी को भी लिखा है। सर कुंवर महाराजसिंह यदि यहां आ जावेंगे तो बहुत अच्छा हो। अभी तक दीवान की जगह रिक्त है। आपके खयाल में यह बात रहे, इसलिए लिख रहा हूं।

श्री पाण्डेजी, पिलानी कालेज के प्रिंसिपल को यदि कभी मैं यहां बुलाऊं तो वे आ जायं ऐसा आप उन्हें लिख दें।

मैं आज कर्णावतों के बाग से यहां न्यू होटल में ठहरने आ गया हूं। यहां का फोन नंबर ६७ है।

मेरा स्वास्थ्य साधारण ठीक है।

जमनालाल बजाज के वंदेमातरम्

: ११९ :

वर्धा, १४-१०-३९

प्रिय भाई घनश्यामदासजी,

आपका तारीख़ १०-१० का पत्र मिला। दो रोज पहले रेडियो म पब्लिक सोसायटी एक्ट के बारे में जो खबर आई, थी वह गलत निकली।

अखबारों में खबर थी कि जयपुर में हिंदुस्तानी प्राइम मिनिस्टर की बात हो चुकी है। उनका नाम ज्ञाननाथ है। इसको तस्दीक करने के लिए मैंने कल दोपहर को जयपुर फोन किया था। वहां के अधिकारियों द्वारा पता चला है कि रायबहादुर राजा ज्ञाननाथजी कश्मीरी ब्राह्मण हैं। उम्र ५५ वर्ष की है तथा पोलिटिकल डिपार्टमेंट के हैं। यहां आने के पहले नाभा में थे। मैं तो इनसे परिचित नहीं हूं। यदि आप इनके बारे में कुछ जानते हों तो कृपया लिखें।

सर ग्लान्सी से आप तारीख १० को मिलें। राजा ज्ञाननाथ ता० १० को ही शायद जयपुर पहुंच गये थे। आपका उनका इतना संबंधहोते हुए भी उन्होंने कुछ कहना ठीक नहीं समझा। इससे इन लोगों की मनोवृत्ति का पता लगता है। मेरे पास खबर आ रही है कि आबू से रेसीडेंट जयपुर में गये थे, वहां रहे थे, उन्होंने कुछ गड़बड़ी मचाने की कोशिश की है। देखें क्या सच निकलता है।

जमनालाल बजाज के वंदेमातरम्

: १२० :

कलकत्ता, १६-१०-३९

प्रिय भाई जमनालालजी,

ज्ञाननाथजी से मेरा कोई परिचय नहीं है, पर 'हिंदुस्तान टाइम्स' द्वारा मालूम हुआ है कि यह आदमी अच्छा है। मेरा भी खयाल है कि अच्छा ही होगा।

मैं जब ग्लान्सी से मिला तब ज्ञाननाथजी की नियुक्ति हो चुकी थी। पर सरकारी अफसरों की कुछ ऐसी आदत होती है कि वे अपने दिल की बात नहीं देते, इसलिए उसने मुझे अपना दिल नहीं दिया। बाकी और तरह से ग्लान्सी का रुख अच्छा था। वह इस बात पर भी जोर लगा रहा था कि महाराज को और अन्य मिनिस्टरों को काफी दौरा करना चाहिए।

ग्लान्सी ने दिल की बात नहीं कही, इसमें मुझे कोई एतराज की बात नहीं मालूम होती। इन लोगों म जिस तरह का संयम है, यह हम लोगों में भी होना चाहिए।

आपका,

घनश्यामदास

: १२१ :

वर्धा, १२-११-३९

प्रिय भाई जमनालालजी,

हम और मास्टरसाहब दोनों यहां पहुंच गये हैं। किंतु बड़े खेद के साथ लिखना पड़ता है कि न तो जयपुर दीवान हमको स्टेशन पर लेने को

आये और न कोई जोड़ी, न चौकड़ी न रोल्सरायस गाड़ी स्टेशन पर भेजी। आप जानते हैं कि हमारे साथ कैसे बड़े-बड़े मोअज्जिज लोग हैं, जिनको खाने के लिए कावुली मेवे, वादाम, पिश्ता, किशमिश और विलायती फ्रूट चाहिए। हम कोई जाट तो हैं नहीं, जो खिचड़ा खा सकते हों। इसलिए आदमी की हैसियत के मुताविक और कम-से-कम मास्टरजी की इज्जत के मुताविक फौरन बंदोबस्त करा देना चाहिए। रुपये-पैसे की परवाह न करनी चाहिए।

हमने सुना है कि जयपुरवालों ने आपके सब दांत तोड़ डाले हैं। सो यह वड़ी खुशी की वात है, पर इससे आपका खर्चा बहुत वढ़ जायगा, क्योंकि आपको रोज हलवा खाने को चाहिएगा, सो इस बारे में कमल की मां से सलाह कर लेनी चाहिए कि आपका वजट क्या होगा। और मास्टरजी आपसे वहुत नाखुश हैं, पर अगर आर्य समाज के लिए चंदा यहीं पर भेज दें तो खुश हो सकते हैं। और कमल की मां से नमस्कार और यह भी कहना कि सेठजी ने खर्च के डर के मारे अपने लड़के को घर जंवाई करके कलकत्ता भेज दिया है। सेठजी अपने मतलब के पूरे मालूम होते हैं।

स्नेही,

घनश्यामदास

: १२२ :

पूना, १८-११-३९

श्री घनश्यामदासजी,

आपका पत्र तो पढ़ा ही। इनका मजाक करने में तो मुझे भी खूव आनंद आता है। पर इनपर तो कुछ असर ही नहीं होता। और मास्टरजी को चिढ़ाने को तो कोई शब्द ही नहीं मिलता। पर उनको आजकल सुलतानी माल पचता, तो सूने घर में छिप-छिपकर कैसे आते?

खाने-खिलाने में वजट बढ़ाना इन जाटों को आता तो सीरे की जरूर आशा करते। पर इनसे तो रेल, तार, डाक्टर ने ही मांगत मांग रखी है।

शतरंज के खिलाड़ी हैं। ऊंट गया जिधर गया, दांत १४ अभी बाकी हैं। देखें खुशी मनाने को कितना मौका रहता है।

कमल की मां का नमस्कार

: १२३ :

वर्धा, १२-३-४०

प्रिय भाई घनश्यामदासजी,

मैं कल शाम को जयपुर से लौटा। जयपुर में पांच रोज ठहरा। जयपुर पहुंचा तब तो वहां अधिकारियों में से कोई नहीं थे—न तो प्राइम मिनिस्टर और न महाराजासाहब। मैं गया, उसी रोज बीकानेर से प्राइम मिनिस्टर भी आये। इन लोगों का इरादा कांग्रेस के बाद २५-२६ मार्च को मुझसे मिलने का था। संभव है, इसमें यह भी खयाल हो कि कांग्रेस के बाद देश में जो वातावरण रहता है, उसके अनुसार रुख अख्तियार करें। मैं चूंकि जयपुर पहुंच ही गया था, दो रोज तक प्राइम मिनिस्टर के साथ अच्छी तरह दिल खोलकर बातें हुईं। प्राइम मिनिस्टर पोलिटिकल डिपार्टमेंट का आदमी तो है ही, काफी प्रतिक्रियावादी विचारों का है। घुमा-फिराकर बात यही करते थे कि प्रजा-मंडल की रजिस्ट्री करानी होगी। ९ मार्च का कम्युनिक रद्द कर दिया जाय तो रजिस्ट्री करवाने में भी मुझे उज्र नहीं है, यह बात मैंने उन्हें सूचित करदी है। श्री महाराजासाहेब से मिलना हो सकता तो सारी बात की उन्हें याद दिला सकता। जयपुर का समझौता बिगाड़ने, और, वहां जो प्रेम और पारस्परिक विश्वास का वातावरण निर्माण करने की हम लोगों ने कोशिश की थी, उसमें गड़बड़ी पैदा करने की जिम्मेदारी पोलिटिकल डिपार्टमेंट की ही होनी चाहिए, ऐसा मेरा पूरा खयाल हो रहा है। भरतपुर के समझौते के बाद जयपुर में भी उसी तरह का फैसला होना चाहिए, इस बात का प्रयत्न पोलिटिकल डिपार्टमेंट की ओर से किया गया है—और इसलिए सारा बना बनाया मामला बिगाड़ने की कोशिश की गई है, ऐसा मैं समझता हूं। प्राइम-मिनिस्टर ने बातचीत के सिलसिले में यह भी कहा कि इस वक्त जयपुर में जो फैसला होगा उसकी ओर सारे राजा लोगों का ध्यान लगा हुआ

है। दिल्ली में होनेवाली नरेंद्र-मंडल की सभा का उल्लेख कर उसने यह कहा था। मुझे आशा तो है कि ९ मार्च का कम्युनिक सरकार रद्द कर देगी। २ अप्रैल को फिर प्राइम मिनिस्टर के साथ मेरी बातचीत होना तय हुआ है। मेरा बयान और भाषण तो 'हिंदुस्तान टाइम्स' में आपने देखा ही होगा। मैं यहां से तारीख १३ या १४ को रामगढ़ के लिए रवाना होऊंगा।

जमनालाल बजाज के वंदेमातरम्

: १२४ :

जयपुर, १७-४-४०

प्रिय भाई श्री घनश्यामदासजी,

मैं यहां २ ता० को सुबह पहुंचा था। उसी दिन १ बजे से ५॥ बजे तक प्राइम मिनिस्टर से चर्चा हुई। उसके बाद कई मुलाकातों के नतीजे के रूप में जो समझौता हुआ उसका हाल तो आपको समाचार-पत्रों से समय पर मालूम हो ही गया होगा। कई बार गरमागरम बातें हुईं, और यह भी दिखने लगा कि जैसे समझौता नहीं होगा। पर जब-जब बातचीत टूटने की परिस्थिति होती उस समय प्राइम मिनिस्टर की तरफ से मुझे न टूटने देने की-सी वृत्ति मालूम होती थी। वर्तमान परिस्थिति में अपनी ओर से तो यह प्रयत्न था ही कि अपने मूल सिद्धांतों पर कोई आघात न पहुंचते हुए और आगे के काम में कोई दिक्कत न रहते हुए यदि समझौता हो जाय तो ठीक वही रहेगा। अब जो समझौता हुआ है, उसके फलस्वरूप प्रजा-मंडल का "महाराज की छत्रछाया में वैध और शांतिपूर्ण उपायों द्वारा उत्तरदायी शासन प्राप्त करने" का उद्देश्य स्वीकार कर लिया गया है। और कार्यक्रम में "Educating popular opinion, ventilating the aspirations and requirements of the people and representing their grievences to H.H.'s Govt. in a costitutional manner." का हक भी मान लिया गया है। वैसे राजा ज्ञाननाथजी काफी प्रतिक्रियावादी व्यक्ति मालूम होते हैं और यह भी संभव है कि वर्तमान समझौता तय होने में इधर-उधर के कुछ प्रभावों ने भी काम किया हो, पर मेरा खयाल है कि

यदि संयम और थोड़ी सावधानी के साथ काम चलता रहा तो संघर्ष थोड़े समय तक टल सकता है।

प्रजा-मंडल का काम विधिवत् चालू हो गया है। मैं कोशिश कर रहा हूं कि इसका संगठन अधिक मजबूत बने पर इसके लिए कुछ प्रथम श्रेणी के पूरा समय देकर काम करनेवालों की जरूरत है। आपसे एक बार श्री सिद्धराज ढढ्ढा के बारे में बातचीत हुई थी। मैं चाहता हूं कि उनको आप अब साल-दो साल के लिए यहां के काम के लिए दे दें और उनके खर्चे की जिम्मेवारी अपने पर रख लें। स्टेटवाले तो आपका संबंध प्रजा-मंडल से मानते ही हैं। फिर यही अच्छा है कि आपका सहयोग हमें पूरे रूप में ही मिले। मेरा ऐसा खयाल है कि मंडल की नये वर्ष की कार्यकारिणी कमेटी में आपका नाम रखने की आप स्वीकृति दें। यदि किन्हीं कारणों से आप अभी इसके लिए तैयार न हों तो चि. लक्ष्मीनिवास का नाम शामिल करने के लिए तो आपको लिख ही देना चाहिए। आपका नाम रहने से संस्था को बहुत बल मिलेगा।

प्रजा-मंडल का वार्षिक अधिवेशन मई के तीसरे सप्ताह में करने का विचार है।

जमनालाल बजाज के वंदेमातरम्

: १२५ :

कलकत्ता, ३०-७-४०

प्रिय भाई जमनालालजी,

यह भी तो हो सकता है कि कमल की मां ने झूठ-सच लिखकर भाईजी से ५००रुपये ठग लिये। आप स्वयं ठग हैं, फिर क्या आश्चर्य यदि कमल की मां भी आपकी नकल करने लग गईं हो तो। जो हो ये ५०० रुपये तो आपको वापस लौटा देना चाहिए।[1]

विनीत,
घनश्यामदास

---

[1] किसी स्त्री ने बेगमगंज से श्रीमती जानकीदेवी बजाज की झूठी सही करके श्री जुगलकिशोर बिड़ला को पत्र लिखा, जिसमें हिंदू बच्चों के अपहरण व बालिकाओं के बलात्कार की बात कहकर मदद मांगी थी। बिड़लाजी ने इसे जानकीदेवी बजाज का पत्र समझकर सहायता भिजवा दी।

: १२६ :

कलकत्ता, ७-१-४१

प्रिय भाई जमनालालजी,

आप अच्छे होंगे। खिचड़ी-दाल तो मिलती होगी, पर मुफ्त के बिदाने खान का आपको शौक है, इसलिए ५० अनार का टोकरा हीरालालजी के साथ भेजा है। खाते रहियेगा।

शास्त्रीजी, सीतारामजी और भागीरथ को जयपुर के बारे में मैंने जो सलाह दी है वह इस प्रकार है —

(१) वनस्थली के काम की जिम्मेवारी का बोझ शास्त्रीजी के सर पर से उठाकर उस बोझ को सीतारामजी और भगीरथ को अपने पर ओढ़ लेना चाहिए। संस्था के खर्च का काट-छांट करना हो तो किया जाय पर इसके लिए धन-संचय की जिम्मेवारी शास्त्रीजी के सर पर से उठा ली जाय। इन लोगों की कूत है कि दो साल में करीब ५०,००० रुपये की वनस्थली को आवश्यकता होगी। यह धन-संचय किया जायगा। और आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि इस धन संचय में आपसे भी कुछ सहायता लेने का विचार किया है। आपका किसी भी प्रकार उपकार हो यह हम लोगों की हार्दिक इच्छा रहती है, यह तो आपसे छिपा है ही नहीं। फिर इस पुण्यकार्य में आपके सहयोग की अवहेलना कैसे की जा सकती है।

(२) प्रजा-मंडल के लिए मैंने इन्हें कह दिया है कि इस काम में हम लोग कुछ भी हाथ बटावेंगे तो आपको काफी असंतोष होगा। यह आपकी चीज है और आपकी नेतागिरी छीनने का इन लोगों का कतई इरादा नहीं है। इन लोगों से मैंने कह भी दिया है कि एक पैसा भी यदि वे लोग प्रजा-मंडल के के लिए देंगे तो आपको अत्यंत कष्ट होगा। इसलिए प्रजा-मंडल के लिए यहां से एक पैसा भी जानेवाला नहीं है।

हीरालालजी पूछते थे कि जबतक जमनालालजी जेल में हैं तबतक खर्च का क्या प्रबंध हो? मैंने इनको कह दिया है कि सेठजी जेल से ही हुक्म भिजवा देंगे और कमलनयन तुरंत रकम दे देंगे। अब आप जेल से

कमलनयन को हुक्म भिजवा दीजियेगा।

यहां सब लोगों की शिकायत है कि आप जयपुर का रण छोड़कर सी. पी. की जेल में जा घुसे हैं। पर मुझे विश्वास है कि आप जयपुर को भूले नहीं हैं। इसके सबूत में हीरालालजी को धन की मदद भिजवा दें।

आपकी कोई बदनामी नहीं की है, प्रशंसा-ही-प्रशंसा की है। आप निश्चिंत रहियेगा।

वहां खाना-पीना कैसा मिलता है, यह लिखिएगा। वजन थोड़ा घटे भी तो उसकी चिंता नहीं।

अब समझदारी की बातें तो सारी लिख चुका। एक निकम्मी-सी बात रह गई, वह लिखता हूं।

कमलनयन के संबंध में मैं शीघ्र ही कुछ प्रबंध करनेवाला हूं, आप निश्चिंत रहियेगा।

आपका,

घनश्यामदास

: १२७ :

मसूरी, २६-९-४१

प्रिय भाई जमनालालजी,

मास्टरसाहब एक इंटरव्यू देना चाहते हैं। आपकी अखबारवालों से दोस्ती है। तो इसे सी. पी. के अखबारों में प्रकाशित करा दें। उनका यह शौक आपकी इंटरव्यू देखकर चर्राया है। मास्टरजी नेता बनना चाहते हैं।

दिल्ली कब आइयेगा ?

आपका,

घनश्यामदास

: १२८ :

पिलानी, १७-१०-४१

प्रिय भाई जमनालालजी,

पांडेजी कहते हैं कि आपने लिखा है कि अब आपका इस्तीफा स्वीकार

कर लेना चाहिए। मैंने पांडेजी से कह दिया है कि अब जमनालालजी बूढ़े हो चले हैं, इसलिए उन्हें रिहा कर दिया जाय।

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि आजकल मेरे पास कोई चंदा मांगने आता है तो मैं उसे कह देता हूं कि जमनालालजी ने बहुत पैसा कमाया है, इसलिए उनसे चंदा जरूर मांगें। मैं आपकी इस तरह तारीफ कर-कर इज्जत बढ़ाता रहता हूं।

आशा है, आपका स्वास्थ्य अच्छा होगा।

आपका,

घनश्यामदास

: १२९ :

वर्धा, २१-१०-४१

प्रिय भाई घनश्यामदासजी,

आपका ता० १७-१० का पत्र मिला।

आपके पास चंदा मांगनेवाले आते हैं, तब आप मेरे नाम का स्मरण किया करते हैं, सो ठीक। आप अधिक जप करेंगे तो शायद मुझे भी राम या घनश्याम का जप करने के लिए बाध्य होना पड़े।

आजकल यहां ठीक जंग हो रहा है। सरदार, राजाजी आदि मित्र लोग जमा हो रहे हैं। आपका इधर कबतक आना होवेगा। श्री बृजलालजी बियाणी यहींपर हैं। उनकी दोनों लड़कियां दीपावली की छुट्टी में अकोला आई हुई हैं। ता० १३-१४ नवंबर को वापस पूना जानेवाली हैं। अगर आप मुनासिब समझें तो प्रिय बसंतकुमार को यहां पांच-सात रोज के लिए भिजवा देवें तो पू. बापू की उपस्थिति में लड़की-लड़के आपस में देखकर निश्चय कर लेवें तो ठीक रहे। फिलहाल तो श्री बृजलालजी भी बाहर ही हैं। वह तथा लड़की की माता भी यहां आ जावेंगे। बसंतकुमार किस तारीख को वर्धा पहुंचेंगे, इसकी सूचना पहले मुझे मिल जावेगी तो उन्हें सूचित कर दूंगा।

जमनालाल बजाज के वंदेमातरम्

पंजाब

: १३० :

लाहौर, ४-८-३३

आदरणीय सेठजी,

यहां अ. भा. चरखा-संघ का मामला ऐसी स्थिति को पहुंच गया है कि मैं विवश होकर उससे अलग हो रहा हूं। मैंने अपना इस्तीफा श्री शंकरलाल को भेज दिया है। मैं जानता हूं कि जब आपकी तंदुरुस्ती अच्छी नहीं है और आप अपने निजी कार्यों में व्यस्त हैं, मेरा आपको इन मामलों में तकलीफ देना उचित नहीं है। फिर भी, मैं महसूस करता हूं कि मेरेलिए और कोई रास्ता खुला नहीं रह गया था, इसलिए मैंने आपको सूचित करना फर्ज अपना समझा।

मैं एक और अनुरोध करना चाहता हूं; वह यह कि यहां के मामलों का आप चरखा-संघ के अध्यक्ष की हैसियत से नहीं बल्कि सार्वजनिक नेता के रूप में अध्ययन करें।

सम्मान सहित।[1]

आपका,
गोपीचंद भार्गव

: १३१ :

लाहौर, १७-९-३६

पूजनीय सेठजी,

सादर वंदे। आज मैं आपको अपने लिए यह पत्र लिख रहा हूं, माफ करेंगे। १९२९ की कांग्रेस के वक्त आपस के झगड़ों की वजह से रुपया कम जमा हुआ था। वजह यह कि है जिन भाइयों ने यह काम अपने जिम्मे लिया था, उन्होंने थोड़ा किया। कांग्रेस खत्म होते ही सब काम मुझको करना पड़ा।

---

[1] अंग्रेजी से अनूदित।

उस वक्त ७००० रुपये एक का, २५०० रुपये चर्खा-संघ का और २५०० रुपये गुलाबदेवी अस्पताल का और १००० रुपये फुटकर देना था। अस्पताल वालों ने माल ले लिया और रुपया दे दिया। बाद में माल लेने से, जब मैं जेल में था, इंकार कर दिया। माल मेरे पीछे सब बरबाद हो गया। कुछ माल एक आदमी ने बेचकर पैसा मार लिया। कीमत कम हो गई। वह २५०० रुपये मैंने भर दिये। उसमें से मुझे १३०० रुपये वसूल हुआ है। १२०० रुपये आपने दिये हैं, १००० रुपये फुटकर भी दे दिये। १००० रुपये मुझे सोसायटी के मेंबरों ने अपने अलाउंस में से दिया। २५०० रुपये चर्खा-संघ के तिलक स्टोर में से कमा कर दिया, जिसका पीछे बड़ा झगड़ा था। सो ७००० रुपये एक देना रह गया और १२०० रुपये एक, यानी कुल ८२०० रुपये देना है। १९३० जेल में काटा, १९३१ में मुश्किल से काम संभाला था कि १९३२ में फिर जाना पड़ा। १९३३ में अभी लड़ाई जारी थी, इसके लिए १२००-१५०० रु० तक कांग्रेस के कार्य के लिए अपनी जेब से खर्च करना पड़ा। १९३५ में अपना काम बंद कर दिया, सो यह ८२०० रुपये का कर्जा सिर पर है। बापूजी से भी जिक्र आया था कि जमा कर लो और दे दो। अबतक यहां ही दूसरों पर छोड़ रखा था। यहां कुछ होता नजर नहीं आता। मुझमें अब यह ताकत नहीं है कि कमाकर दे दूं।

इसलिए आज आपको तकलीफ देता हूं कि मेरी मदद करें। खुद दें या किसीसे जमा करा दें। मुझे यहां और कामों के लिए पैसा मांगना पड़ता है। इसलिए अपने लिए मांगना मुश्किल हो जाता है, और किसीका देना नहीं है। अब आपके सिवाय किसको लिखूं या कहूं। आप हमेशा गरीबों की मदद करते ही रहते हैं। मेरा यह कर्जा कोई जाती बेवकूफी या ऐब की वजह से नहीं है।

आशा है कि आप इसपर विचार कर मेरी मदद करेंगे। तकलीफ करेंगे।

आपका,

गोपीचंद भार्गव

: १३२ :

सोलन, १-७-२५

प्यारे जमनालालजी,

आपका पत्र वर्धा से २६ जून का लिखा हुआ मुझको मिला, जिसमें आपने महाशय रामचंद्र के कुनबे की सहायता के लिए सौ रुपये देने की आज्ञा की है। मेरी राय में तो जिस मतलब के लिए डाक्टर सत्यपाल ने आपसे अपील की है उस मतलब के लिए सहायता उसी फंड से मिलनी चाहिए जो अभी तक कांग्रेस के हाथ में है और जो उन लोगों की सहायता के लिए इकट्ठा हुआ था, जिनको मार्शल-ला के सबब से हानि पहुंची। मैं डाक्टर सत्यपाल को इस विषय में चिट्ठी लिख रहा हूं। अगर जरूरत हुई तो मैं आपकी तरफ से एक सौ रुपये दे दूंगा। क्या आप १५ जुलाई को कलकत्ते जायंगे? मेरा स्वास्थ्य आगे से तो किसी कदर अच्छा है। मगर अभी तक संतोषजनक नहीं है।

आपका मित्र,
लाजपतराय (लाला)

: १३३ :

दिल्ली, १२-२-२६

प्यारे जमनालालजी,

आपकी चिट्ठी आई थी, मैं उसका उत्तर नहीं दे सका। आपकी चिट्ठियां ऐसी बारीक लिखी हुई होती है कि मुझको पढ़ने में जरा कठिनाई होती है और कई शब्द पढ़े नहीं जाते हैं, परंतु मतलब तो समझ में आ ही जाता है। मैंने डा. गोपीचंद को लिख दिया है। आशा है कि वह इस काम को स्वीकार कर लेंगे।

श्री महात्माजी की बावत जो कुछ आपने लिखा, उसे पढ़कर दुःख हुआ। एक चिट्ठी उनकी मेरे पास भी आई थी। मैंने उसका उत्तर दिया था और उसमें प्रार्थना की थी कि वह पूरा आराम करें। मेरा जी चाहता है

कि दो-तीन रोज उनके पास जाकर रहूं, परंतु अभी तो कोई अवसर मिलता हुआ नजर आता नहीं। आजकल मैं बहुत मसरूफ हूं और बिल्कुल किसी तरह का अवकाश नहीं मिलता। मैंने सुना है कि अग्रवाल-महासभा का उत्सव दिल्ली में होगा। हिंदू महासभा का अधिवेशन भी उसी समय पर रख दिया गया है। आशा है कि उस समय आपके दर्शन होंगे।

आपका भाई,

लाजपतराय

: १३४ :

दिल्ली, २४-२-२६

प्रिय जमनालालजी,

आपका पत्र मुझे मिला। मेरी तीव्र इच्छा है कि मैं कम-से-कम एक दिन के लिए अहंमदाबाद में आऊं; लेकिन इस समय असेंबली से गैर-हाजिर होना अनुचित मालूम होता है। तो भी अगर हो सका तो मैं आऊंगा। मुझे यह सुनकर अति प्रसन्नता हुई कि बीबी कमला का विवाह-संस्कार साबरमती में होगा। मेरी परमेश्वर से यही प्रार्थना है कि वर और कन्या चिरंजीव और धर्मात्मा हों। मैं यह सुनकर खुश हूंगा कि वह दोनों आपके सुयोग्य बच्चे हैं।

आपका मित्र,

लाजपतराय

: १३५ :

वर्धा, १८-१२-४०

प्रिय मौलानासाहब,

गत १५ दिनों से मैं प्रांत में दौरे पर था। इस दौरे से जनता पर अच्छा असर पड़ा।

मैंने २१ दिसंबर को सेवाग्राम गांव में सत्याग्रह करने का तय किया है। कृपया आप मुझे बतावें कि आपका सत्याग्रह करने का कब का प्रोग्राम है।

श्री वी. एम. जकातदार एम. एल. ए., भंडारा, कल यहां आये हुए थे और बापू से मिले। मिश्राजी के मामले में उनके खिलाफ अनुशासन की कार्यवाही की गई थी। वे यहां बापू से सत्याग्रह करने की आज्ञा लेने आये थे जैसाकि उनके पत्र से स्पष्ट है। सत्याग्रही की अन्य सब शर्तें इन्हें लागू होती हैं। पर बापू ने उन्हें सूचित किया कि जबतक उनपर लगी निषेधाज्ञा न उठा ली जाय तबतक बापू के लिए यह संभव नहीं है कि वे श्री जकातदार को सत्याग्रह करने की आज्ञा दें। बापू के आदेश से श्री जकातदार ने एक पत्र पिछली बार के अनुशासन-भंग के बारे में अफसोस जाहिर करते हुए लिखा था और आपसे अनुरोध किया था कि निषेधाज्ञा हटा लें। उस पत्र की एक नकल मैं इस पत्र के साथ भेज रहा हूं। मूल पत्र मेरे पास है। आपको श्री जकातदार की ओर से भी पत्र मिलेगा। इसलिए मेरा आपसे अनुरोध है कि आप कृपा कर उनपर से निषेधाज्ञा हटा दें, ताकि वे सत्याग्रह कर सकें। वे सत्याग्रह करने को बहुत आतुर हैं और जितनी जल्दी हो सके करना चाहते हैं। कृपया आप मुझे तार द्वारा अपना निर्णय सूचित करें। आपको मेरा पत्र २० तारीख को मिलेगा और अगर आप तुरंत तार देदें तो मुझे उसी शाम को मिल सकता है, ताकि मैं जेल जाने के पहले श्री जकातदार को उसकी सूचना दे सकूं।

सम्मान सहित ।[1]

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

: १३६ :

कलकत्ता २०–१२–४०

सेठ जमनालालजी,

जकातदार का खत मिला। उसका रुख बहुत सुधरा है। माफी मंजूर की जाती है। निषेधाज्ञा हटा रहा हूं।[2]

अबुल कलाम आजाद

: १३७ :

बंबई, ४-३-३८

श्री जमनालाल बजाज,
वर्धा

रविवार को प्रातःकाल नागपुर मेल से पहुंच रहा हूं। स्टेशन से सीधे सेगांव (सेवाग्राम) जाना चाहता हूं। अगर आप चाहते हैं तो सभा शाम को करने में मुझे कोई आपत्ति नहीं है। मेरा विचार सोमवार का दिन नागपुर में बिताने का हो रहा है। कलकत्ते से मंगलवार को रवाना होऊंगा। महादेव-भाई व महात्माजी को सूचना दें।[1]

सुभाष बोस

: १३८ :

वर्धा, २२-१०-३८

प्रिय श्री सुभाषबाबू,

विलासपुर से तारीख १९-१०-३८ का लिखा हुआ आपका पत्र मिला। नागपुर तथा अमरावती में हुई सभाओं का विवरण मुझे मिल गया था।

प्रांत की स्थिति अब तो ठीक है। 'महाराष्ट्र' तथा अन्य दो तीन अखबारों के सिवा अन्य अखबार अब खास कुछ नहीं लिखते हैं। डा. खरे से आप

---

[1]. अंग्रेजी से अनूदित [2]. अंग्रेजी तार का अनुवाद

मिल लिये, यह भी ठीक किया।

पू. बापूजी को आपने पत्र लिखा होगा ? पत्र की नकल मुझे भिजवा दें।

मैंने बंबई से श्री कृपलानीजी को पत्र लिखा था। उसके जवाब की नकल आपकी ओर भेज रहा हूं।

अब्राह्मण-कान्फ्रेंस का अधिवेशन नागपुर में हुआ। इस अधिवेशन की रिपोर्ट आपने पढ़ी ही होगी। उन्होंने भी कांग्रेस में शरीक होना तय किया है।

आप अपने स्वास्थ्य का पूरा खयाल रखें। आसाम जाने का निश्चित होने से या अन्य प्रोग्राम हो उससे मुझे सूचित रखने की कृपा करें।

जमनालाल बजाज के वंदेमातरम्

: १३९ :

वर्धा, २५-१०-३८

प्रिय श्री सुभाषबाबू,

आपका तारीख १७-१०-३८ का पत्र मिला। आपने अमरावती तथा नागपुर की मीटिंगों की सफलता का समाचार लिखा तो इन दोनों मीटिंगों की सफलता के बारे में मेरे पास पहले ही खबर आ गई थी।

आपने ता. २१-१०-३८ के पत्र में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के बारे में लिखा कि वह कांग्रेस-विरोधी संघटन है सो आपका लिखना उचित है। इसमें संदेह नहीं है कि यह संघ कांग्रेस का विरोध करता है। कांग्रेस की तरफ से एक वालंटियर, संघटन, खास करके हमारे प्रांत के लिए, बहुत जरूरी है। लेकिन इस काम के लिए अच्छे कार्यकर्ता, जो पूरी जिम्मेवारी के साथ काम कर सकें, मिलने पर ही वालंटियर संघटन का अधिक विचार किया जा सकता है। पू. बापू को आपने २१-१०-३८ को पत्र लिखा, उसकी नकल मिली। यदि उसका कोई जवाब आया हो तो कृपा करके उसकी नकल मुझे भेज दीजिएगा। आपके प्रेम के लिए धन्यवाद। आप अपने कार्यक्रम से मुझे वाकिफ रखने की कृपा करें। आसाम कब जाना होवेगा ? आपको अपने स्वास्थ्य का भी खयाल रखना चाहिए।

जमनालाल बजाज के वंदेमातरम्

बंबई

: १४० :

बंबई, ३१-१-२५

श्री जमनालालजी बजाज,

सेठ बेलगामवाला की फरमाइश से यह पत्र लिख रहा हूं। ईश्वर की कृपा से 'बंबई क्रोनिकल' आज मि. बेलगामवाला को मिल गया है। शेयर होल्डरों की सभा ने एकमत से प्रस्ताव किया है कि पेपर और छापाखाना चलाने का काम मि. बेलगामवाला को सौंप देना। पेपर बड़ी मुश्किलों से हाथ में आया है, लेकिन यह आप-जैसे मित्र की मदद से ही हो सका है। अब रुपयों का प्रबंध एकदम करना होगा। सो दो दिन में रुपये १०,००० आपकी बंबई की पेडी से हमें मिल जायं, ऐसा बंदोबस्त यह पत्र मिलते ही आप कर लीजिएगा। बाकी के रुपये १५ दिन में चाहिए।

आशा है कि यह खबर पाकर आप जरूर खुश होंगे क्योंकि 'क्रोनिकल' दूसरों के हाथ में जाने के बदले कांग्रेस के अंदर कांग्रेसमैनों के हाथ में ही रह गया है। यदि आप-जैसे मित्रों की मदद न हो तो ऐसा सुंदर नतीजा शायद ही निकलता।[1]

सोराब पा. कापड़िया

---

१. गुजराती से अनूदित

: १४१ :

त्रिवेंद्रम, २८-११-२८

पू. सेठ जमनालालजी,

आपको एक पत्र कोलंबो से लिखा था, वह मिला होगा। फिलहाल मैं मलबार कोस्ट में हूं। इधर-उधर घूमता हुआ मद्रास कोस्ट की ओर जाऊंगा। कल कन्याकुमारी गया था। बहुत आनंद आया। आप इस ओर कभी नहीं आये, ऐसा मालूम हुआ। तिनेवल्ली में खद्दर की दुकान है। दिवाली के अवसर पर रुपये ७०००-८००० की बिक्री हुई, यह आशाजनक है। साधारण लोगों में खादी-प्रेम दिखाई नहीं देता। प्रचार की बहुत ही अधिक जरूरत मालूम देती है। इस ओर कुछ काम करनेवाले ठीक लगते हैं।

हिंदू और मसलिम की हालत (रहन-सहन इत्यादि की) बहुत खराब है। सोशल रिफार्म की बेहद जरूरत है। ख्रिस्ती धर्मवालों का प्रचार ठीक है। साथ ही ये मिशनरी मेहनत भी करते हैं। ख्रिस्ती धर्म स्वीकार किये हुए लोगों की हालत (सब तरह से) बहुत ही अच्छी कही जा सकती है, जिसे देखकर मुझे आनंद होता है। चाहे किसी धर्म का पालन करें, पर सुखी रहें। इस संबंध में मेरा अनुभव प्रत्यक्ष विस्तार से सुनाऊंगा।

ब्राह्मण-अब्राह्मण-संबंध सचमुच कल्पना न कर सकें, इतना खराब है। हिंदू-मुसलिम के बीच मसजिद और गाय का सवाल है, जिसे लेकर जब-तब रास्तों पर चैलेंज दिये जाते हैं। ऐसी कोई तकरारी बात ब्राह्मण-अब्राह्मण में में नहीं है। इससे मार-पीट का प्रसंग नहीं आता, लेकिन हिंदू-मुसलिम संबंध परिमाण में बहुत अच्छा कहा जा सकता है। ब्राह्मण-अब्राह्मण तो एक दूसरे के खून के दुश्मन और सच्चे दुश्मन हैं। वे भी विशेष वर्ग नहीं, लेकिन साधारणतः सब। अब्राह्मण वर्ग का जस्टिस पार्टी से संबंध होने की वजह से

सरकार की ओर अधिक झुकाव है।

कुछ कारणों से मैंने दिल दुख जाने के कारण गोश्त इत्यादिक हिंसा होनेवाली वस्तुएं छोड़ दी हैं। (पर अभी एक साल की ही प्रतिज्ञा ली है।) संभव है बाद में वह जन्मभर के लिए नक्की हो जाय। केवल अंडों की छूट रखी है, पर शायद वह भी छोड़ दूं। अभी मैं यह नहीं मानता कि अंडों से हम जीव-हत्या करते हैं।

बाकी सब कुशल है। मुसाफिरी की आदत है, इससे स्वास्थ्य अच्छा रहता है। आप हाल में किस ओर हैं, यह पता नहीं। कांग्रेस तो जरूर जायंगे, कारण कि महात्माजी जाते हैं। वर्धा कुशल समाचार पहुंचे होंगे।[1]

आबिद जाफरभाई

: १४२ :

बंबई, २८-३-३७

पूज्य जमनालालजी,

आप बंबई जावेंगे ऐसी मुझे आशा थी, लेकिन आप काम के दबाव के कारण हाल में बंबई आ सकें, ऐसी संभावना नहीं लगती। दिल्ली में तो आपसे मिलना असंभव ही होगा, परंतु उससे पहले मुझे आपको खुले दिल से दो बातें कहनी हैं। वे मैं पत्र में लिखूंगी तो मुझे आशा है कि आप उन बातों पर अवश्य ही विचार करेंगे।

मि. राय की पत्नी इस पहली तारीख को विलायत से बंबई आवेगी और ता. ५ तक उनकी कानूनन शादी भी हो जायगी। फिलहाल मि. राय अब्दुल रहमान मीठा के घर रहते हैं और उनकी पत्नी बंबई आकर कहां उतरेंगी, यही एक सवाल है। मेरे घर के द्वार तो खुले ही हैं और अंत में मेरे यहां उतरेंगी, परंतु घर बसा देने की ताकत मुझमें नहीं है। राय के लिए, उनके अत्यंत आवश्यक खर्च के लिए कुछ भी बंदोबस्त जल्दी हो जाय तो अच्छा, क्योंकि उनके समान व्यक्ति के लिए हम स्वतंत्र दो कमरे और जीवन

---

१. गुजराती से अनूदित

की जरूरतें पूरी न कर सकें यह बात अतिशय शोचनीय है। संक्षेप में, मेरी यही प्रार्थना है कि उनको कहीं भी कोई काम अथवा उनके ओहदे को जंचे ऐसा कोई काम देकर मासिक खर्च का बंदोबस्त, आपकी ओर से और आपके स्नेहियों की ओर से हो जाय, ऐसी मेरी खास इच्छा है। आज दिन तक यथा-शक्ति मैंने किया, परंतु उनकी पत्नी के आ जाने पर, अलग गृहस्थी चलाने-जैसी आर्थिक स्थिति में मैं नहीं हूं। यह तो आप भी जानते ही होंगे। जहांतक कुछ बंदोबस्त नहीं होता वहांतक राय एक जगह और उनकी पत्नी ६ साल के वियोग के बाद, अलग जगह रहें, यह योग्य नहीं होगा।

आपको खुले दिल से पत्र लिखा है, इसलिए क्षमा करेंगे; पर आपके सरकल में मैं और किसीको अच्छी तरह नहीं जानती हूं, इसलिए आपको मित्र जानकर यह पत्र लिखा है।[1]

पुत्री,
मणी कारा के पांव धोक

: १४३ :

बंबई, ५-४-३७

पूज्य जमनालालजी,

आपका पत्र पढ़कर अत्यंत निराशा हुई है, फिर भी जीवन के सारे कार्य और सर्व साहस में फतह और सफलता नहीं मिल सकती, ऐसा सोचकर आरंभ किये हुए कार्य में विश्वास रखकर आगे बढ़ने के सिवाय छुटकारा नहीं है। आपने १०००) की मदद देने का लिखा है, उसके लिए मैं अत्यंत आभारी हूं, क्योंकि आपपर हमें मदद करने का किसी प्रकार का बंधन तो है नहीं और फिर भी हमारी तकलीफ और हमारी काम करने की इच्छा को मान देकर वार्षिक रुपये १००० की मदद देने जितनी उदारता आपने

---

[1]. गुजराती से अनूदित

दर्शाई है, उसके लिए सचमुच मैं हृदयपूर्वक आभार मानती हूं।

आपका पत्र लेकर श्री भूलाभाई के पास आज मैं गई थी और १०००) पेटे उन्होंने २००) पहले दिये थे और १००) और देकर ३००) उनकी ओर से मुझे मिलेंगे। बाकी ७००) आप मुझे किस तरह से और कहां पहुंचावेंगे यह कृपया सूचित करें ? मैं तो फिर भी मांग करूंगी कि जहांतक हो सके इस कार्य में राजनैतिक विचारों का खयाल न करके व्यक्तिगत मदद के तौर पर आप मासिक २००) भेज सकें तो आपकी मदद अनुपयुक्त नहीं समझी जायगी, फिर भी आप जो निर्णय करेंगे वह पूरे सोच-विचार के बाद ही करेंगे यह मैं मानती हूं। अधिक ढील न करते हुए अधिक रुपये किस प्रकार और कहां से मिलेंगे यह सूचित करेंगे।

आपकी मदद के बदले में आश्रम में आकर १२ महीने काम करूं तो अपनी इस बेटी को रखेंगे न ? एक बार वर्धा आन की बहुत इच्छा है, लेकिन बड़े-बड़े नताओं के कैंप में जाते हुए बड़ा संकोच होता ह। नागपुर की ओर जाते हुए एक बार वहां जाने की इच्छा थी, फिर भी हिम्मत न हो पाई। क्या किया जाय ?

हो सके तो भूलाभाई शनिवार को जायं उसके पहले बंदोबस्त कर सकेंगे तो कृपा होगी। क्या किया जाय ? पूंजीपति के पास हाथ फैलाये बिना इस पूंजीवाद का नाश नहीं हो सकता। इलाज क्या ? सगे, स्नेही सभी पूंजीवादी हैं, आपके जैसे नेता और बुजुर्ग भी पूंजीवादी हैं। इसलिए जैसे कृष्ण के कहने से अर्जुन को मजबूरन रण-संग्राम में शामिल होना पड़ा वैसे अपने देश के अनेक नौजवान भी कर रहे हैं। क्या ऐसे नौजवान आपकी ओर से सहानुभूति की आशा नहीं रख सकते? पूंजीवाद या साम्यवाद का सवाल आज उपस्थित ही नहीं होता, आज तो एक विदेशी सत्ता के सामने कांग्रेस के अंतर्गत सबको इकट्ठा होना ह, फिर भी आपस म अविश्वास क्यों रहता है, यह समझ में नहीं आता। देश के आजाद होने के बाद परस्पर बंटवारा कैसे करना इस बाबत में मतभेद होने का अधिकार क्या आप नौजवानों को नहीं देंगे ? आप कहेंगे, "हम कहां ना कहते हैं ?" फिर भी आज सत्ता आपके हाथ में है, हमारे

पास काम करने की ताकत, इच्छा और लगन है। देश के लिए, देश की आजादी के लिए सर्वस्व अर्पण करनेवाले नौजवान हैं, किसलिए उनकी ओर आप शंका से देखते हैं ?

खैर। ये सब लिखने के लिए क्षमा करें। हृदय की भाप है। कुछ गलत-सलत लिख गया हो तो क्षमा। बंबई आवेंगे तब जरूर एक दिन आपसे मिलकर आपके साथ खूब झगडूंगी।

गुजराती भाषा में त्रुटियां हुई हों तो क्षमा करें।[1]

मणी बहन कारा के वंदन

: १४४ :

बंबई, २२-४-३७

पूज्य जमनालालजी,

जुहू में आपसे मिलने के बाद और आपके साथ एक साल का संपूर्ण बंदोबस्त होने के बाद दिल्ली में फिर से आपको कष्ट देने की आवश्यकता मुझे नहीं लगी। इसीसे मैं आपसे नहीं मिली। श्री भूलाभाई के साथ बात करने से तो मैं ऐसा समझी हूं कि आपने अपना विचार बदल दिया है, या तो कुछ गलतफहमी हुई है। रु. २०० सिर्फ भूलाभाई की ओर से मिले हैं और बात वहीं रुक गई है।

मैं आपको क्या लिख सकती हूं। आप सारी परिस्थिति जानते हैं। अभी तक मि. और मिसेज राय अपना घर नहीं बसा पाये हैं और मि. मीठा के यहां ही रह रहे हैं। दूसरे के घर पत्नी को लेकर कबतक रहा जा सकता है। बारह महीने में २००० रुपये की मदद राय-जैसों के लिए हम न कर सके, यह अत्यंत दुखकारक बात है। और फिर मैं आपसे अनुरोध करूंगी कि कुछ बंदोबस्त तो आपको करना ही होगा। बिना मेहनत के मदद लेने को तो मैं भी राजी नहीं हूं और २४०० रुपये के बदले में मि. राय, अंग्रजी, फ्रेंच, जर्मन सिखा सकते हैं, या तो आप ट्रांस्लेशन वर्क दें तो वह भी कर सकते हैं। आपसे इतना

---

[1]गुजराती से अनूदित

काम कराने का क्या हमारा अधिकार नहीं है ? यह पत्र मिलते ही बिना ढिलाई के आप उत्तर देने की कृपा करेंगे। इतना ही नहीं बल्कि हर महीने की पांच या दस तारीख तक किस तरह से मुझे पहुंचावेंगे यह भी सूचित करियेगा। इस तरह से भिक्षा मांगना अत्यंत खराव लगता है, पर आप जानते ही हैं कि मैं यह रकम खुद के आराम के लिए नहीं मांगती हूं। और सेवा-धर्म में शरम क्यों ? यदि आप ध्यान नहीं देंगे तो वर्धा आकर आपके द्वार पर बापूजी के सिखाये तरीके पर सत्याग्रह करना पड़ेगा। और क्या ?

सबोंको मेरी नमस्ते और बापूजी मुझे पहचानते हों तो मेरी पांवधोक।[1]

पुत्री,
मणी कारा

पुनश्चः

इस मदद के बदले में मेरे योग्य काम हो तो मैं भी करने को तैयार हूं। फक्त चरका कातने की तैयारी नहीं है।

: १४५ :

वर्धा, २–५–३७

प्रिय श्री मणिबहन,

आपका ता. २२-४-का पत्र मुझे प्रयाग में मिला था। मैंने श्री भूलाभाई से भी बातें की हैं। उन्होंने मुझे कहा है कि जो मित्र उनके पास श्री एम. एन. राय की व्यक्तिगत सहायता के लिए गये थे उनसे उनकी बात हुई है। मेरी समझ में हम दोनों मिलकर कई कारणों से अधिक जवाबदारी नहीं उठा सकते। कितनी जिम्मेवारी उठा सकते हैं, यह भूलाभाई साफतौर से बताने को तैयार न थे। जहांतक मैं समझ पाया वह और मैं दोनों मिलकर ज्यादा से ज्यादा एक हजार से ज्यादा की जिम्मेवारी नहीं ले सकते, और अन्य मित्रों से आशा नहीं रही। उसके कई कारण हैं। वह अगर आप चाहोगी तो जब

---

[1]गुजराती से अनूदित

कभी मिलना होवेगा तभी कह सकूंगा। आपके प्रेम के लिए धन्यवाद।

चर्खे के मजाक से आपको सुख व संतोष हो तो ठीक है।

जमनालाल बजाज के वंदेमातरम्

: १४६ :

दिल्ली, ७-३-२५

श्री जमनालाल सेठजी को

कृ. सा. न. वि. विनय यह है कि मैंने मेरा दो महीने का सूत कांग्रेस-कमेटी को भेज देने की व्यवस्था की है। आपने कबूल किया था उस मुताबिक बाकी का सूत भेजने की व्यवस्था करेंगे, ऐसी आशा है। वह पूना भेजें।

असेंबली का काम ता. २५ को बहुत करके समाप्त हो जायगा व मैं अप्रैल के पहले हफ्ते में पूना जाऊंगा।

उधर के समाचार सूचित करें। स्नेह बनाये रखें।[1]

सविनय,

न. चिं. केलकर

: १४७ :

सा. न. वि. वि.

आपका अभिनंदनात्मक पत्र आया, सो मिला। उसके लिए आपका बहुत आभारी हूं। हाल में राजकीय मतभेद हद से ज्यादा बढ़ा हुआ होते हुए भी आपने स्मरणपूर्वक पत्र लिखा, इसलिए विशेषरूप से आभारी हूं।

हाल की ये दोनों ही पक्षों की फजीहत खतम होकर अपने सारे राष्ट्र-भावना से प्रेरित लोग पहले की तरह एक हो जावें, ऐसा मन में बार-बार

---

[1]श्री केलकर के पत्र पर कार्रवाई के रूप में जमनालालजी ने निम्नलिखित हिदायत श्री धोत्रे को लिखी :

'श्री धोत्रे, इनके सूत की व्यवस्था फिलहाल आप करें, बाद में मैं या कमल की माता २-४ महीने का सूत दे सकेंगे।'

आता है। ईश्वर-कृपा से ऐसा हो पावेगा तो वह सुदिन होगा।

आपका,
नृ. चिं. केलकर

१४८ :

पूना

श्री जमनालाल सेठजी,

आपने जो सूत भेजा वह मिला। आपने मेरे लिए स्वयं सूत कातकर भेजा, इसके लिए मैं आपका बहुत ऋणी हूं। आशा है, आपका स्नेह तथा सद्भाव इसी प्रकार बना रहेगा।

सविनय,
नृ. चिं. केलकर

: १४९ :

पूना

"मैंने बिना कारण सेठजी पर दोषारोपण किया और उनका अनादर किया, जिसका मुझे बडा दुःख और पश्चात्ताप है। पश्चात्ताप से पाप जल जाते हैं, अतः क्या मैं आशा करूं कि वे मुझे क्षमा करेंगे? अज्ञानवश मैंने उनका मन दुखाया; अतः मैं उनसे बिल्कुल क्षमा चाहता हूं। क्या वे मुझे क्षमा का अधिकारी नहीं मानेंगे? मैं उनके क्षमा-पत्र की प्रतीक्षा कर रहा हूं।"[१]

जवाब :

"तुम्हें अपनी भूल नजर आई, यह तुम्हारे हित की दृष्टि से अच्छा ही हुआ। तुम्हें भविष्य में भी इसी तरह सद्बुद्धि प्राप्त होती रहे, यही ईश्वर से प्रार्थना है।"

---

[१] यह पत्र एक महाराष्ट्रीय युवक ने जमनालालजी के लिए लिखा था। उसका जवाब जमनालालजी ने स्वयं लिखा था।

: १५० :

पूना, २७-११-३८

प्रिय बाळा साहेब,[१]

उस रोज जब आप मुझसे मिलने आये थे, इच्छा होते हुए भी मैं आपसे प्राकृतिक चिकित्सा के बारे में बात न कर सका। मुझे विश्वास है कि इस विज्ञान की प्रगति दिन-पर-दिन होती जायगी व निकट ८-१० साल में वह बहुत बढ़ जावेगी। मेरा इस विज्ञान पर विश्वास हो रहा है।

डा. मेहता ने इस विषय का अच्छा अभ्यास किया है। मेरी इच्छा है कि इस दवाखाने को बड़ा रूप दिया जावे व इसका काम ट्रस्टी बनाकर उन्हें सौंप दिया जावे। इसके लिए कुछ जगह की जरूरत है। पूना में बंबई गवर्नमेंट की बहुत-कुछ जगह है। यदि १०-१२ एकड़ जगह किरकी में या कोई अन्य अच्छी तरफ या तो दान के बतौर या वाजवी कीमत पर मिल जाय तो ठीक रहेगा। क्या आप इस विषय में कुछ कर सकेंगे। मैंने श्री गुलजारीलाल को भी लिखा है।

मैंने यह भी सुना है कि डेक्कन कालेज की जगह गवर्नमेंट बेचना चाहती है। यदि आप इस बारे में कोशिश करेंगे तो कृपा होगी।

मेरा इलाज ठीक चल रहा है, धीरे-धीरे आराम होगा।

जमनालाल बजाज के वंदेमातरम्

: १५१ :

बंबई, २९-११-३९

श्री जमनालालजी की सेवा में सादर प्रणाम—

आपका २८-११-३९ का खत आज ही मिला। मौजूदा राजकीय परिस्थिति में बंबई गवर्नमेंट से जगह की व्यवस्था मेरे हाथ से होना असंभव है। मैं तो बात तक नहीं कर सकता हूं और कुछ रास्ता भी नहीं समझ में आता है।

आपकी तबीयत, उम्मीद करता हूं, जल्दी से सुधर जायगी।

आपका,
बाळ खेर

---

[१] बाळ गंगाधर खेर

: १५२ :

बंबई, ३–२–४०

श्री जमनालालजी की सेवा में सादर प्रणाम—

मैं यवतमाल गया था तब श्री हरीहर देशपांडे मिले थे। उन्होंने अमरावती हनुमान व्यायामशाला के पास से आपके पैसे आनेवाले हैं उसकी बात की थी, उनका खत साथ में रखा है। मेरी अपेक्षा आप इन बातों को अधिक अच्छी तरह समझते हैं, किंतु देशपाण्डेजी को कहा था, इसलिए यह चिट्ठी भेज रहा हूं। आपकी तबीयत ठीक होगी ?

आपका नम्र,
बाळ खेर

: १५३ :

बंबई, ६–११–३३

पू. श्री जमनालालजी,

मेरी इस बहुत लंबी खामोशी के लिए आपको अत्यंत उदारतापूर्वक मुझे क्षमा करना होगा। मुझे आशा तो थी कि मैं घर पहुंचते ही आपको लिखूंगी, परंतु दुर्भाग्यवश मैं ऐसा न कर सकी और मुझे इस विलंब के लिए अत्यंत खेद है। मुझे विश्वास है कि मेरे इससे पहले न लिखने के लिए आप विशेष उदारतापूर्वक क्षमा करेंगे।

आपने मेरी गिरफ्तारी और जमानत पर छूटने की बात सुनी होगी। मेरे साथ जो दो अन्य व्यक्ति गिरफ्तार हुए थे वे अपने बचाव की कोशिश करनेवाले हैं और इसलिए उन्होंने जमानत के लिए दरखास्त दी है। इस सुविधा का लाभ उठाने या न उठाने की स्वतंत्रता मुझे थी। कुछ ऐसी अनिवार्य परिस्थितियां थीं जिनकी वजह से मुझे बाहर आने का निर्णय करना पड़ा; हालांकि अपने-आपका बचाव करने का मेरा कोई इरादा नहीं है।

जैसाकि आप जानते हैं, यह मामला अभी तय नहीं हुआ है, इसलिए मेरे लिए यह जरूरी था कि लोगों के साथ सलाह-मशविरा सतत जारी रखूं, परंतु यहां मुलाकातों और पत्रों पर कठोर प्रतिबंध लगे थे और मेरे लिए

यह बहुत ही मुश्किल था कि मैं कोई जरूरी बातों के बारे में भी कुछ कर सकूं। मुझे अपने बेटे तक को संदेश भेजने में भी दो दिन लग गये। इसका मतलब यह हुआ कि मैं या तो बच्चे के लिए कुछ भी करने का विचार छोड़ दूं या फिर जमानत पर न छूटने के आदर्श की बात छोड़ूं। बच्चे को एक बार फिर निराधार छोड़ देना कुछ उचित नहीं लग रहा था और वह भी अनिश्चित काल के लिए। इसका मतलब तो यह होता कि इतना आगे बढ़ जाने के बाद फिर से आफतों में फंसना। इसीलिए मैंने बाहर आने का तय किया कि देखूं कुछ कर पाती हूं या नहीं? मेरा मामला कुछ लंबा तो जायगा, क्योंकि अन्य दोनों व्यक्ति अपना बचाव कर रहे हैं, इसलिए मैं अपने मामले पर अलग विचार किये जाने की मांग करना चाहती हूं, जिससे कि गलतफहमियों से बचा जा सके। मैंने यहां श्री नरीमान से मशविरा किया और उन्होंने मेरे लिए यही रास्ता ठीक बताया। मुझे मालूम नहीं कि मुझपर किस धारा के अंतर्गत अभियोग लगाया जा रहा है। चार्जशीट (अपराधपत्र) अभी तैयार नहीं हुआ है। फिलहाल मुझे १५ तारीख को हाजिर होने को कहा गया है।

मेरी मां और मेरा बच्चा दोनों यहां हैं। इस केस के समाप्त होने तक उनके यहां ठहरने की संभावना है, जिसमें कि मेरे बेटे के भाग्य का फैसला होनेवाला है।

आपकी सतत कृपा और हितैषिता के लिए मैं आपकी और प्रिय जानकी-बहन की अत्यंत कृतज्ञ हूं। मैं आपकी सहानुभूति से बहुत प्रभावित हुई हूं। आपने जितना कुछ किया उसके लिए मैं धन्यवाद देकर उऋण नहीं हो सकती।

मैं बापू को भी लिख रही हूं। मेरा बेटा पहले से ठीक है। लेकिन बहुत अधिक मेहनत नहीं कर सकता। वैसे वह ठीक है, पर अभी दौड़-धूप नहीं सकता।

कृपया मेरी कमियों और कमजोरियों के लिए क्षमा करें। आपको और

जानकीवहन को सपरिवार मेरे सादर वंदे ।[1]

आपकी वहन,
कमलादेवी चट्टोपाध्याय

: १५४ :

महाराष्ट्र प्रांतिक कांग्रेस कमेटी,
पूना, ६–२–३६

सप्रेम नमस्कार ।

विनय विशेष । नई महाराष्ट्र प्रांतिक कांग्रेस कमेटी की थाना में जो सभा हुई उस सभा में आगामी वर्ष की कांग्रेस महाराष्ट्र में बुलाई जाय, ऐसा प्रस्ताव पास किया है । आज कितने ही वर्षों से महाराष्ट्र कांग्रेस को निमंत्रण दे रहा है और महाराष्ट्र में कांग्रेस को हुए युग वीत गये । इतना लंबा समय गुजर गया है । १८९५ साल में एक बार ही गत पचास वर्षों में कांग्रेस पूना में हुई थी । आज ४० साल हो गये । कांग्रेस की सेवा करने का अवसर महाराष्ट्र को नहीं मिला है । कै. गोखले और लो. तिलक दोनों ने कांग्रेस की यथा-शक्ति सेवा की है । परंतु इन दोनों नेताओं में से किसीको उनकी मौजूदगी में महाराष्ट्र में कांग्रेस-अधिवेशन कराकर उसकी सेवा करने का सुअवसर नहीं मिला । लोकमान्य के निधन के वाद की महाराष्ट्र की परिस्थिति से आप पूर्ण परिचित हैं । १९२० से १९३० तक महाराष्ट्र कांग्रेस-निष्ठ रहा और महाराष्ट्र में फिर से कांग्रेस के लिए विश्वास और प्रेम निर्माण करने के लिए मित्रों ने जो कुछ खटपट की, उसमें आपकी पूरी मदद थी, इसलिए अंत में उसे यश मिला । १९३० साल के वाद कांग्रेस के इतिहास में जो एक महत्व की घटना घटित हुई उसमें अन्य प्रांतों पर बराबरी में महाराष्ट्र ने अपना कार्य-भाग उठाया हुआ है, यह आप जानते ही हैं । कारण आप भी हममें से ही एक हैं और महाराष्ट्र की अवतक कामयावी (सफलताओं) के लिए जैसे हमें अभिमान होता है वैसा ही आपको भी

---

[1] अंग्रेजी से अनूदित

होता है। महाराष्ट्र के बहुजन समाज में कांग्रेस-निष्ठा की भावना दिनों-दिन कैसे अधिकाधिक उत्पन्न हो रही है, इसकी आपको कल्पना है ही। यह भावना अधिक गहरी जाकर हमेशा के लिए उसकी जड़ें महाराष्ट्र की जनता के अंतःकरण में जम जावें इसके लिए कांग्रेस का अधिवेशन महाराष्ट्र में होना अत्यंत आवश्यक है, ऐसा मुझे लगता है। महाराष्ट्र में कांग्रेस का अधिवेशन करने का आग्रह इसलिए है कि महाराष्ट्र को और हमको कांग्रेस की सेवा करने का सुअवसर मिले और महाराष्ट्र-कांग्रेस का संगठन सुसंगठित हो कार्यकर्ताओं में आत्म-विश्वास उत्पन्न हो और उनकी कर्तव्य-शक्ति को योग्य अवसर मिले और वह बढ़े। नये सुधारों के विरुद्ध राष्ट्र को और विशेषतः कांग्रेस को जो लड़ाई (आंदोलन) करनी है उसमें महाराष्ट्र की ओर से शोभा दे, ऐसी विशेष प्रयत्न होने में कांग्रेस का अधिवेशन महाराष्ट्र में होने से बहुत मदद होगी, ऐसा मुझे लगता है। आपको अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं है। आप मन में धारते तो इसके भी पहले महाराष्ट्र को ऐसी सेवा का मौका मिल जाता। खैर! इस वर्ष तो भी आप हमें इस बारे में सहायता करें और अपनी सारी शक्ति हमारे लिए आप उपयोग में लावें ऐसा आपको अनुरोध है। शायद सावली में आपसे भेंट होगी ही तब अधिक बातें करेंगे।[1]

सविनय आपका,

शं. द. देव

: १५५ :

महाराष्ट्र प्रांतीय कांग्रेस कमेटी,

पूना, ३-८-३६

सप्रेम नमस्कार। कांग्रेस-अधिवेशन का समय ज्यों-ज्यों नजदीक आ रहा है, काम की जबवादारी और मार्ग की अड़चनें अधिकाधिक ध्यान में आ रही हैं। खासकर पैसे की दृष्टि से महाराष्ट्र में काफी करना होगा, ऐसा

---

[1] मराठी से अनूदित

दीखता है। इस बार महाराष्ट्र में बारिश भी ठीक नहीं है, इसलिए लोगों के मन उदास हो गये हैं। तब भी यथासंभव प्रयत्न करना और परमेश्वर पर विश्वास रखना उचित है। आप वर्किंग कमेटी के लिए बंबई आनेवाले हैं तब एक-दो दिन खान्देश में रुककर जैसाकि आपने कहा था कि श्री राजमल सेठ और श्री प्रतापसेठ को इस काम में सहायता करने के लिए कहें, ऐसी प्रार्थना है। कारण अब इस काम में तत्काल लगना चाहिए, तभी हम अपनी अल्पशक्ति के परिमाण में उसे निबटा पावेंगे। आप आवेंगे उस दिन की सूचना आप श्री अण्णासाहेब अथवा श्री देवकीनंदन को दे रखेंगे तो वे आपकी सब व्यवस्था करेंगे। पत्रोत्तर अवश्य प्राप्त हो। बाकी विशेष तो बंबई में जब आप मिलेंगे तब बातें होंगी ही।

विदित हो।[1]

आपका,

शं. द. देव

: १५६ :

पूना १४–१–३८

सविनय नमस्कार। निवेदन है कि आप ता. २१ को धारवाड़ कर्नाटक हिंदी-शिक्षक-विद्यालय का उद्घाटन करने जानेवाले हैं, ऐसा मालूम हुआ। धारवाड़ जाते हुए रास्ते में ता. २० को दोपहर में पूना उतरकर हमारे काम के लिए कुछ घंटे दें तो हम हिंदी-प्रचार के लिए जो धन-संग्रह करने की कोशिश कर रहे हैं, उसमें आपकी मदद होने की संभावना है और आपका भी ज्यादा वक्त नहीं जायगा।

तो कृपा करके इस पत्र का अनुकूल उत्तर देकर उपकृत करेंगे। ऐसी आशा है।[2]

आपका,

शं. द. देव

१–२ मराठी से अनूदित

: १५७ :

बेलगांव फाल्गुन शु. ७।१८४७
(१८-२-२६)

श्रीयुत सेठ जमनालालजी,

सेवा में कृतज्ञतापूर्वक सविनय साष्टांग नमस्कार।

आपकी बालिका चि. कमला के विवाह की जानकारी पाकर बहुत आनंद हुआ। आपके उदाहरण का अनुकरण अनेक लोग, कम-से-कम अनेक गरीब लोग, यदि करेंगे तो सचमुच में उनका और देश का कल्याण होने वाला है। मेरे एक स्नेही (भाई) भी अपनी लड़की की शादी ८-१५ दिन में करनेवाले हैं। आपके घर के विवाह की हकीकत सुनकर उन्हें बहुत संकोच महसूस हुआ; फिर भी अपने घर के विवाह में कम खर्च करने का साहस उनमें नहीं है। आगे-पीछे उनके मन पर असर होना संभव है।[1]

आपका,
गंगाधरराव देशपांडे

: १५८ :

नंदी २८-४-२७

पू. श्री जमनालालजी,

कृतानेक सा. न. वि. वि.। पू. बापूजी का स्वास्थ्य सुधर रहा है। यहां आने के बाद दो-तीन दिन तक कमजोरी मालूम दी। प्रवास के परिश्रम से ऐसा हुआ होगा पर अब उन्हें बहुत ही अच्छा लग रहा है। सुबह और शाम टहलने जाते हैं। बाकी कार्यक्रम चालू है। उन्हें भी अच्छा लग रहा है। मई के अंततक यहां रहने का विचार है। उसके बाद बंगलौर जाने का इरादा है। बंगलौर की हवा जून से उत्तम होती है। मैं आज वापस बेलगांव जा रहा हूं। ५-६ तारीख तक वहां रहकर फिर लौट आऊंगा। श्री राजाजी यहीं हैं। मेरे लौट आने के बाद वे जावेंगे। दोनों में से एक को यहां

---

[1] मराठी से अनूदित

उपस्थित रहना है, ऐसा अभी तो तय हुआ है। दोनों को ही यहां रहना जरूरी नहीं है। बापूजी की बीमारी की वजह से खादी-कार्य को काफी धक्का लगा है। हम सबको मिलकर भावी कार्यक्रम का विचार करना चाहिए। बापूजी पर प्रत्यक्ष काम का बोझ ज्यादा नहीं डाला जा सकता।

इस वर्ष बापूजी के दौरे की वजह से एक लाख रुपये हमारे प्रांत में मिल जाते। इसमें से काफी रकम खादी-केंद्र में डालकर सारा खर्च खादी में से ही निकालने का मेरा विचार था। सेवा-संघ पर कुछ बोझ न डाला जाय, ऐसा मैंने तय किया था। लेकिन इस साल यह सधेगा या नहीं, संदेह होता है। कर्नाटक में खादी-उत्पत्ति की खूब गुंजाइश है। यह हालत श्री शंकर-लालजी ने प्रत्यक्ष देखकर मुझे काम का विस्तार करने को कहा। उस मुताबिक योजना तैयार करके मैंने उन्हें भेज दी और कुछ लोगों को काम पर भी ले लिया। लेकिन आगे काम कैसे निभाना है, यह सवाल है। निपाणी और बेलगांव मिलाकर ५०० रुपये मिले। ये रुपये लगाने से कुछ काम होगा, पर हमारी योजना पूर्णरूप से अमल में आना कठिन है। इनसब बातों पर आपके साथ विचार करना है। आप नंदी आनेवाले हैं क्या? यह मुझे सूचित करने की कृपा करेंगे। आनेवाले हों तो कब आवेंगे? पत्र का उत्तर यहां देवें।

बाकी समाचार ठीक है। आपकी स्वस्थता सूचित करें। यहां की व्यवस्था सब ठीक है। स्नेह बनाये रखें।[1]

गंगाधर देशपांडे

: १५९ :

नंदी, ३०-४-२७

पू. श्री जमनालालजी की सेवा में,

कल मेरा पत्र डाक में डाल देने के बाद आपका पत्र मिला। समाचार जाने। श्री वल्लभभाई को श्री राजाजी का इसी आशय का पत्र मिला है। श्री राजाजी को आपने भी एक पत्र लिखा ही है। पू. बापूजी को अब किसी

---

[1] मराठी से अनूदित

भी प्रकार की परेशानी न होने पावे, ऐसी खबरदारी हम सबको लेनी चाहिए। इस बारे में मतभेद हो ही नहीं सकता। लेकिन उनका स्वभाव हम जानते ही हैं। उनके स्वभाव में अभी तक पूर्ण निश्चितता नहीं आ पाई है। अपने से जो कुछ होना संभव था वह हम सबने कर लिया, ऐसा अभी भी उन्हें नहीं लगता है। इसलिए यहां कुछ भी काम निकालो, ऐसा आज ही सुबह वे कहते थे। यदि यहां काम का मोह न हो तो मैं यहां रहूं ही क्यों, ऐसा कहने लगे। हम सब अपने-अपने कामों में पूर्ण रूप से रम गये हैं, ऐसा उन्हें दीख पड़े तो उन्हें उससे निस्संदेह समाधान होगा। इसलिए पू. बापूजी की अस्वस्थता के कारण जो परिस्थिति पैदा हो गई है, उसका विचार करके आगे का कार्यक्रम जमाना जरूरी है। आप और श्री शंकरलाल यहां होते तो इनसब बातों का विचार अच्छी तरह से हो जाता। आप प्रत्यक्ष में पूज्य बापूजी का स्वास्थ्य देखकर और उनकी मनःस्थिति जानकर सब तय कर लेते। आप सबके विचारों के विरुद्ध होकर पूज्य बापूजी को किसी भी प्रकार का श्रम होने देना कोई नहीं चाहता, लेकिन उनका मन ही ऐसा है कि हर रोज कुछ-न-कुछ नये-नये प्रश्न उपस्थित होते हैं और उन प्रश्नों का निराकरण करने की चिंता हमें करनी पड़ती है।

उदाहरण के लिए फिर से उपवास क्यों नहीं करना चाहिए, ऐसा एक विचार उनके सामने है। नंदी में आश्रम के सारे बीमार लोगों को लाकर अपने साथ रखना और उनकी सुश्रूषा खुद करना, यह दूसरा प्रश्न है। मैसूर के महाराज खादी-कार्य के अनुकूल हैं। इसलिए अपने इस प्रदेश में रहने तक उस दृष्टि से थोड़ा-बहुत कार्य हो पावे, ऐसा उन्हें लगता है। योगाभ्यास की ओर उनका ध्यान है ही। उन्होंने कुछ योगासनों का प्रारंभ भी किया था। उसे बंद करने के लिए हम सबको बहुत परिश्रम करना पड़ा। आज ही लोणावला से कुवलयानंद नाम के एक सज्जन आनेवाले हैं। और दो-तीन दिन में औंध से सातवलेकरजी आने वाले हैं। ऐसी हालत है। इस हालत में आश्रम में वापस जाने पर वहां की परेशानी कम होगी

क्या ? यह भी एक विचार है।

कुल मिलाकर उन्हें आराम किस प्रकार मिलेगा, यही प्रश्न सबके सामने है। आप दूर हैं, इसलिए आपको अधिक घबराहट होना स्वाभाविक है।

हम दोनों का एकदम वहां आना संभव नहीं है। दोनों में से एक को तो यहां रहना चाहिए। मेरे बनिस्बत राजाजी की यहां आवश्यकता अधिक है। आपको व शंकरलालजी को यहां आने में कुछ अड़चन है क्या ? सूचित करें। आपके आने से बापूजी को तकलीफ नहीं होगी। मुझे आप बंबई बुलावेंगे तो मैं आ सकूंगा।

और सब समाचार ठीक है। क्षेत्र-समाचार के पत्र सतत देते रहें। यही निवेदन है। स्नेह बनाये रखें।[1]

आपका नम्र सेवक,
गंगाधर

: १६० :

कुमरी, ३०–६–३६

श्री जमनालालजी,

सादर सविनय नमस्कार। आपके पत्रानुसार आपसे मिलने के लिए चि. मोहन आज यहां से रवाना हो रहा है। वहां चि. कमलनयन से भी मिलना ही जायगा।

हाथ में लिये हुए काम में सफलता प्राप्त कर चि. कमलनयन सुरक्षित रूप से स्वदेश लौट आवे, ऐसी मैं परमेश्वर से प्रार्थना करता हूं।

मोहन के बारे में मुझे एक तरह की चिंता रहती थी। आपके सहवास में रहने का अवसर मिल रहा है, यह उसका अहोभाग्य है। उसका लाभ उठाकर अपना भविष्य बना पावेगा तो उसका कल्याण होगा। उसका स्वभाव, उसकी रुचि और उसकी लियाकत आदि का अंदाजा आप शीघ्र

---

[1]. मराठी से अनूदित

ही लगा लेंगे।

मेरा स्वास्थ्य ठीक है। स्नेह बनाये रखें।[1]

सविनय आपका,
गंगाधर देशपांडे

१६१ :

बेलगांव, ३१-५-३७

श्री सेठ जमनालालजी,

सेवा में कृतानेक साष्टांग नमस्कार। विनय यह है कि आपका कृपा-पत्र मिला। मेरी तबियत डाक्टरों को दिखाने के लिए मैं आज यहां आया हूं। इन आठ-दस दिनों में तबियत सुधरी है। आपके लिखे अनुसार किसी भी तरह की चिंता किये बगैर विश्राम ले रहा हूं और कुछ दिनों बाद डा. भड़कमकर, अथवा बंबई में किसी भी अच्छे डाक्टर को तबियत दिखानेवाला हूं। आप मेरी चिंता न करें।

कुछ अखबारों में आपके केस की उलट-जांच मैंने पढ़ी। कुछ तो बेहूदापन हो रहा है। स्वभाव की दवा कहां? आपके जवाब में आरोपी (वादी) के अनुकूल कुछ होने-जैसा नहीं दीखता। सारी ही इमारत बेपेंदे की होने पर उसमें से निष्पन्न भी क्या होगा। चि. मोहन अभी तक बंगलौर नहीं गया है। दो-एक दिन में जावेगा। उसके बारे में मैं आपको विस्तार से लिखनेवाला हूं। उसके पहले उसके संबंध में आपका अभिप्राय सूचित करेंगे तो अच्छा होगा। वह तो पूर्णरूप से आपपर अवलंबित है, ऐसा उसके कहने से मालूम देता है। उसका आलस्य दूर होकर उसमें नियमितता लाने का मैं प्रयत्न करता हूं। इस दोष के अलावा उसमें और कोई दोष हो तो मुझे वैसा सूचित करने की कृपा करें।

आपके स्वास्थ्य की जानकारी देते रहें।[2]

आपका सेवक,
गंगाधर देशपांडे

१-२. मराठी से अनूदित

: १६२ :

बेलगांव, २–११–४१

सेठ जमनालालजी की सेवा में—

सादर नमस्कार। आपका कृपापत्र मिला। चि. सौ. प्रभा के लिए आपने जो उद्गार प्रकट किये उससे उसको धन्य महसूस होना स्वाभाविक है।

मैं आपसे उम्र में भले बड़ा हूं, फिर भी और सब गुणों में आप ही मुझसे कहीं अधिक बड़े हैं, इसलिए आपको आशीर्वाद देना मेरे अधिकार की बात नहीं है।

खूब उम्र प्राप्त करें और सुखी रहें, यह परमेश्वर से प्रार्थना करता हूं।[1]

आपका,
गंगाधर देशपांडे

: १६३ :

इंदौर, ८–१२–३१

पूज्यवर,

आपके अस्वस्थ होने के समाचार मिले, तबसे बहुत चिंता हो रही है। आशा है, अब आप स्वस्थ होंगे।

कुछ समय से भंडारी और स्टेट मिल में हड़ताल चल रही है, अतः मैं इसमें व्यस्त हूं। अभी इस झगड़े का कोई अंत नहीं दिखाई देता है और परिस्थिति कुछ गंभीर होती जा रही है।

इच्छा थी कि आपको परिस्थिति से वाकिफ रखता, किंतु आपको अस्वस्थ दशा में क्या तकलीफ दूं, यह विचार रहा, इसलिए इस संबंध में अबतक आपको कुछ लिखकर तकलीफ न देने में हिचकिचाता रहा।

किंतु अब परिस्थिति ऐसी हो गई है कि आपको सब बातों से वाकिफ

---

[1] मराठी से अनूदित

करना आवश्यक जान पड़ता है।

अस्वस्थ अवस्था में भी आपको कष्ट देने का एक हेतु यह भी है कि हड़ताल बहुत समय से चल रही है। समझौते के अनेक प्रयत्न करने पर भी श्री सेठ कन्हैयालालजी अभी उचित फैसले के लिए तैयार नहीं हैं और अपनी आन पर डटे हुए हैं। हड़ताल लंबी होने से मजदूर और व्यवसाय दोनों की बहुत हानि हो रही है। गरीब मजदूरों को तो बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है।

दूसरे, संघ के प्रतिनिधि-मंडल ने भी आपको सारी स्थिति से वाकिफ रखने और आपके परामर्श से कार्य करने का आग्रह किया है। अतः परिस्थिति को ध्यानपूर्वक विचारकर भविष्य के लिए सलाह दें और हड़ताल का जिस प्रकार शीघ्र और उचित अंत आवे वैसा प्रयत्न करें।

इस पत्र के साथ आपकी जानकारी के लिए यहां की स्थिति के संबंध में एक स्टेटमेंट भेज रहा हूं और आगे जो कुछ परिवर्तन होगा, सेवा में लिखता रहूंगा।

भवदीय,
गुलजारीलाल नंदा

: १६४ :

बंबई, २–८–३८

पूज्य भाईजी,

आपका कृपापत्र मिले कई दिन हो गये। आपने लिखा था कि संभव है, वहां के मजदूर-प्रश्न के बारे में शायद मेरी सहायता लेनी पड़े। मुझे तैयार रहने के लिए भी आपने लिखा था और यह भी लिखा था कि इस बारे में अधिक फिर लिखेंगे। शायद आप सीकर के आंदोलन और वर्किंग कमेटी के काम में मशगूल होने के कारण और ज्यादा नहीं लिख सके। मैं भी अहमदाबाद में दारू-निषेध काम में लगा रहा और अभी वहां से बंबई आया हूं।

कल मैंने श्री खेर से इस संबंध में बात की थी। उन्होंने मुझे सी. पी.

के मजदूर-आंदोलन में, आपने जो जिम्मेदारी ली है, उसके संबंध में जो हो सके वह करने की इजाजत दे दी है। वहां का वायु-मण्डल इस प्रकार का हो रहा है कि आप मुझसे जो सेवा इस संबंध में लेना चाहते हैं उसकी शायद आवश्यकता ही न रहे। फिर भी मैं यह लिख देना अपना कर्तव्य समझता हूं कि भविष्य में यदि पगार आदि के संबंध में मेरे अभिप्राय की आवश्यकता हो तो कृपया मुझे आप इस प्रश्न के बारे में रिपोर्ट तथा अन्य सामग्री भिजवाने का कष्ट करें। यदि आप इन्क्वायरी कमेटी की रिपोर्ट की दो प्रतियां भिजवा दें तो बहुत ही ठीक होगा।

भाई कमलनयन के यहां पुत्र होने की खुशखबरी कुछ दिन हुए मुझे मिली थी। मेरी आपको तथा जानकीबहन को बधाई स्वीकार हो।

भवदीय,

गुलजारीलाल नंदा

: १६५ :

बंबई, ७-१२-३९.

पूज्य भाईसाहब,

आपकी दोनों चिट्ठियां मिलीं। मुझे यह पढ़कर बहुत खुशी हुई कि आप वहां नेचर क्योर की पद्धति से बाकायदा इलाज करा रहे हैं और इस इलाज से आपको फायदा हो रहा है। बड़ी अच्छी बात है कि नेचर क्योर पर जो पुस्तकें आपको भेजी गई थीं, वे आप पढ़ रहे हैं। नेचर क्योर को उत्तेजन देने का आपने जो विचार प्रकट किया है उसे पढ़कर मुझे बहुत हर्ष हुआ। मैं इस बारे में जो भी सेवा कर सकूं, उसके लिए हाजिर हूं; क्योंकि मेरी दृष्टि में यह प्रश्न बहुत महत्व रखता है। मगर आज के हालात में गवर्नमेंट से जमीन मिलना आसान नहीं होगा। ये लोग तो इन बातों को मानते ही नहीं। जब हालात बदलेंगे तब इसमें जरूर सफलता मिलेगी।

मैं रमण महर्षि के दर्शन के लिए तिरुवन्नामलाई इस महीने के आखिर में जाने का इरादा रखता हूं। उस वक्त आपसे पूना में मिलने का विचार है।

आशा है कि आप इलाज बराबर जारी रखेंगे; जबतक कि पूरी तौर

से आराम न हो जाय। जानकीवहन को मेरा नमस्कार।

आपका,
गुलजारीलाल, नंदा

: १६६ :

अहमदाबाद १७–९–४१

पू. भाईसाहब,

आपका शिमला से लिखा पत्र मुझे बंबई में मिला था। मुझे अहमदाबाद से बाहर कुछ अधिक दिन लग गये, इसलिए अहमदाबाद आकर सर चिनुभाई से मिलने का अवसर अभी मिला है। कल उनके बंगले पर जाकर मिल आया हूं। वे ऐसा कहते हैं कि डा. बतराकी स्कूल के लिए वे अपना बंगला देने को तैयार नहीं हैं। उनके पिता का वह बंगला सवा लाख में खरीदा हुआ है और फिलहाल उन्होंने वह जगह किसी दूसरे स्कूल को किराये पर दी हुई है। वह मकान बेचने को तैयार नहीं हैं।

अखिल भारत चरखा-संघ के पैसों के बारे में जो गड़बड़ हुई है वह अत्यंत खेदजनक है। पू. शंकरलालभाई ने बंबई में महीना भर रहकर अधिक-से-अधिक जो हो सकता है वह कराने का प्रयत्न किया है। साठ हजार करीब प्राप्त करने की इस वक्त आशा है। इससे अधिक प्राप्त करने का प्रयत्न चालू है। पू. बापू को इस संबंध में अधिक जानकारी भेजी गई है। अभी जो हो सका है, उस संबंध में विस्तृत पत्र दो दिन में लिखूंगा। आपका स्वास्थ्य अब बिल्कुल ठीक हो गया होगा। स्वास्थ्य के बारे में आप जानकारी देने की कृपा करें, ताकि संतोष हो।

पत्र जल्दी में लिखा गया है।[1]

गुलजारीलाल नंदा के प्रणाम

: १६७ :

संगमनेर, १२–१–३७.

श्री जमनालालजी को अनेक सप्रेम प्रणाम।

मैं हमारे जिले की चुनाव-समिति की ओर से आपसे प्रार्थना करना

---

१. गुजराती से अनूदित

चाहता हूं कि आप एक-दो रोज के लिए हमारे जिले में आ सकेंगे तो हमारे कार्य में बहुत मदद मिलने की उम्मीद है। हमारे यहां से एक कांग्रेस-विरोधी महेश्वरी मारवाड़ी सज्जन वर्णाश्रम स्वराज्य संघ की तरफ से खड़े हुए हैं। उनके प्रचार से हमारे कार्य में काफी रुकावटें आती हैं। मैं आशा करता हूं कि आप एक-दो रोज के लिए तकलीफ करके हमारे यहां आने की कोशिश कीजिएगा।

साथ-साथ यह भी मैं आपसे अर्ज करना चाहता हूं कि अबकी बार आप आवें तो हमारे ही यहां रहें। इसकी कई वजहें हैं। आप भी बहुत-से कारण तो समझ ही लेंगे। मगर आपको यह सुनकर खुशी होगी कि पू. गांधीजी ने भी हमारे यहां एक वक्त आने का वायदा किया है।

आशा करता हूं कि आपका स्वास्थ्य अब ठीक है। आपको कौन-सी तारीख को इधर आने की सुविधा होगी वह कृपाकर लिखिएगा।

आपका नम्र,

अच्युत पटवर्धन

: १६८ :

अहमदाबाद, १८–८–२४.

प्रिय वल्लभभाई

मराठी म. प्रां. के कांग्रेस के निर्वाचन में हमारे पक्ष के लोग चुने जावें, इसलिए प्रयत्न करना या न-करना, इस विषय में आपकी सलाह मिले, इसलिए मैं यह पत्र लिख रहा हूं। बिल्कुल सीधे सत्य के मार्ग से और किसी प्रकार दांव-पेंच न करके कुछ प्रयत्न करने से अपने पक्षवाले चुने जायंगे, इसमें किसी प्रकार की शंका मालूम नहीं होती। परंतु बहिष्कार वंचक और अखिल भारत कांग्रेस कमेटी के सूत-संबंधी-प्रस्ताव का पालन करने-वाले और साथ ही कांग्रेस-कमेटियां चलाने की भी योग्यता रखनेवाले सज्जन बहुत ही थोड़े हैं। इस प्रकार के सज्जनों की पूरी कांग्रेस-कमेटी बनना असंभव है। हमारे चार जिलों में से वर्धा जिले की स्थिति अन्य जिलों की अपेक्षा बहुत अच्छी है। अन्य कारणों के साथ-साथ सत्याग्रहाश्रम और सेवा-

संघ का यहां होना भी इस सुस्थिति का विशेष कारण है। सत्याग्रह-आश्रम और संघवालों ने अपनी शक्ति वर्धा तालुका के सुधार के काम में लगाने का निश्चय कर लिया है। उसके अनुसार अच्छे-अच्छे काम करनेवाले गांव में गये हैं और वहां काम कर रहे हैं। इस काम में बाधा पहुंचाये बिना हम उनका उपयोग कांग्रेस की संस्थाओं में नहीं कर सकते। दूसरे जिले में ऐसे कोई योग्य सज्जन नहीं दीखते कि जो कांग्रेस के प्रस्तावों का पालन करते हुए कांग्रेस-संस्थाओं का काम कर सकें। वर्धा की शहर-तालुका और जिला-कांग्रेस-कमेटी तथा प्रांतिक कमेटी के सेक्रेटरी का काम करने की योग्यता रखनेवाले दो-तीन सज्जन भी नजर में नहीं आते। इस हालत में कांग्रेस-संस्थाएं अपने हाथ में लेना या न-लेना, इसका बड़ा विचार खड़ा हुआ है। कांग्रेस-संस्थाएं हाथ में रखने से कांग्रेस की प्रतिष्ठा के कारण काम करने में सहूलियत अवश्य हो सकती है। यह महाराष्ट्र प्रदेश है। यहां के लोगों में आपके मतों के लिए श्रद्धा नहीं। इसलिए आम जनता में कुछ काम करना हो तो उनको कांग्रेस की तरफ अंगुली बतलाये बिना उनके मनों पर कम असर होता है। इसलिए कांग्रेस-संस्थाएं अपने हाथ में रखने की आवश्यकता तो मैं समझता हूं, पर उनको चलाने लायक अपने सिद्धांत पालन करनेवाले और साथ में कांग्रेस-संस्थाएं चलाने की योग्यता रखनेवाले सज्जन नहीं हैं। सत्याग्रह-आश्रम तथा सेवा-संघ के कुछ सदस्यों का इस काम में उपयोग कर लेवें तो वर्धा जिला तथा प्रा. कां. कमेटी का काम निभा सकते हैं। परंतु जो खेड़े गांव का काम करना प्रारंभ कर दिया गया है, उसमें बाधा पहुंचेगी। इतना करें भी तो वर्धा को छोड़कर अन्य जिलों की कांग्रेस-कमिटियां निर्बल ही बनी रहेंगी। कांग्रेस-संस्थाएं हाथ में न रखें तो भी हम अपनी शक्तिभर कांग्रेस-संस्थाओं से अलग रहकर रचनात्मक कार्य करने को भी तैयार हैं। वह काम वर्धा तालुके में विशेष कर सकेंगे।

राष्ट्रीय शिक्षण, अस्पृश्यता-निवारण तथा खादी इन बातों में हम काम कर सकेंगे। इधर मुसलमानों का झगड़ा केवल नागपुर में है। उसे जल्दी

सुलझाना संभव नहीं है, तथापि उसके लिए प्रयत्न करते रहेंगे। कांग्रेस-संस्थाएं हाथ में न रहने के कारण यह काम कुछ मर्यादित रूप में कर सकेंगे। आम जनता की हमारे पक्ष पर श्रद्धा अवश्य है, परंतु जैसी सब जगह केवल जबानी श्रद्धा दिखाई देती है उसी प्रकार स्थिति यहां की है। "अच्छा है, अच्छा है," कहने को सब तैयार हैं, परंतु बात अमल में लाने के लिए कष्ट उठातें नहीं। इस कारण वे यद्यपि हम लोगों को चुन देवें तथापि हम उनको कहेंगे सो काम बन ही जावेगा, ऐसा नहीं कहा जा सकता। इसलिए कांग्रेस में हम उनका ठीक-ठीक प्रतिनिधित्व कर सकते हैं, यह भी कहना कठिन है।

ऐसी हालत में कांग्रेस की संस्थाएं अपने हाथ में रखना या न-रखना, इस बात का विचार करके आप सलाह दीजिये।

जमनालाल बजाज के वंदेमातरम्

: १६९ :

बंबई, ११-११-२९.

प्रिय भाई जमनालालजी,

दो-तीन दिन हुए दांत में दर्द है, उसकी दवा करने आया हूं। मुरब्बी विट्ठलभाई भी यहीं हैं।

आप इलाहाबाद वर्किंग-कमेटी की मीटिंग में जानेवाले होंगे। बापू को मैंने पत्र तो लिखा है, लेकिन पत्र मिले या न-मिले, फिर भी यदि आप जानेवाले हों तो मेरी ओर से इतनी सूचना करें कि दिल्ली मेनीफेस्टो पर सब पक्षों के दस्तखत हैं, उन सबकी एक बार मीटिंग बुलाने के पहले उस मेनीफेस्टो में हेरफेर हो, ऐसा प्रस्ताव फिलहाल न हो तो अच्छा। अंत में हमें जो करना है वह कर सकेंगे। परंतु जिन्होंने अबतक हमारा साथ दिया है जल्दबाजी में उनकी बेकदरी जैसी न हो, इसलिए फिलहाल जल्दी नहीं करनी चाहिए। आप जानेवाले हों तो मुझे खबर दें।

वल्लभभाई के वंदेमातरम्

: १७० :

नासिक रोड, १-४-३४

प्रिय भाई जमनालालजी,

आप तो बिहार में ही जंम गये हैं, ऐसा बापू के पत्र से विदित हुआ। ठीक हुआ, वहां एक अनुभवी व्यक्ति की जरूरत तो थी ही। वहां का काम कैसा चल रहा है ? बाहर के लोग यदि वहां बराबर काम न देते हों तो ऐसे सबों को वहां से हकां (निकालं) देना। अपनी वहां पक्की परीक्षा होने वाली है। देखना कहीं हमें शर्मिंदा न होना पड़े। कोई आबरू खो देनेवाला दिखाई दे तो उसे वहां खड़ा न रहने देना। सहयोग दिया है तो उसे भी पूरी तौर से सुशोभित कर देना अपना काम है। और यह तो आपको बताने की जरूरत ही कहां है ? यह काम आपके योग्य ही है। इसलिए वहां आपकी बराबर जमेगी और आपकी बुद्धि का और कुशलता का पक्का उपयोग होगा।

आपकी तबियत अच्छी रहती है न ? आपका सदर मुकाम कहां रहने-वाला है ? बीच-बीच में मुझे समाचार लिखते रहें। श्री जानकीदेवी कहां हैं ? उनका स्वास्थ्य कैसा है ? बच्चे सब कहां हैं, कैसे हैं—सबके समाचार लिखें।

वल्लभभाई के वंदेमातरम्

: १७१ :

१८-४-३५

प्रिय भाई जमनालालजी,

आपका खत मिला। कल महादेवभाई को मिलने के लिए अहमदाबाद गया था, तब सुना था कि आप भुवाली पहुंच गये और यह भी सुना कि श्री कमलाजी यूरोप जानेवाली हैं। उनका स्वास्थ्य कैसा है और कब जाने-वाली हैं ? वे मुझे जयपुर में खत मिल जायं, इस रीति से आप लिखें, क्योंकि मैं २१ तारीख को तो बोरसद को छोड़ूंगा।

कान का दर्द कम होता है, यह जानकर आनंद हुआ। चि. कमलनयन डाक्टर खानसाहब के साथ गया है क्या ? जवाहरलालजी का

स्वास्थ्य कैसा है ? आप मिल सकते हैं क्या ? मुझे इधर दो या तीन रोज बुखार आया। इससे मित्रों में कुछ चिंता भी हो गई। अब तो अच्छा हो गया हूं। श्री सुव्रतादेवीजी का दिल आगे न चल सके तो कोई चिंता नहीं। आप क्या करें ?

लिखित,

वल्लभभाई

: १७२ :

भुवाली, २२-४-३५

प्रिय भाई जमनालालजी,

गोधरा के भंगी-निवास में थोड़े दिनों पहले जाने का अवसर मिला था। वहां बापू ने गुजरात के अस्पृश्यता-निवारण का काम शुरू किया था। इस जगह पर वहां के भंगी भाई एक मंदिर बनाने चाहते हैं। इन गरीबों ने अपने परिश्रम से कुछ दोसौ रुपये इकट्ठे किये हैं। एक हजार ज्यादा की जरूरत है। मैंने जुगलकिशोरजी को लिखा था। वे लिखते है कि दलित जाति के मंदिर और शिक्षा के कार्य के लिए श्रीयुत जमनालालजी बजाज यहां से कुछ हाल में ही ले गये थे। यदि वे कुछ उसमें से इस मंदिर के लिए दे देवें तो आप पूछ सकते हैं।

आप कुछ दे सकते हैं ?

आपका जबलपुर आने का संभव मालूम नहीं होता है। कान पूरा ठीक नहीं हो तबतक किसी भी जगह पर जाना नहीं चाहिए।

लिखित,

वल्लभभाई

: १७३ :

बोरसद, ४-५-३५

प्रिय भाई जमनालालजी,

आपका १-५-३५ का खत मिला। राजाजी को समझाकर पार्लमेंटरी बोर्ड में चुन भी लिया था, लेकिन वहां गये बाद बापूजी के पास अपना

विचार रखकर फिर राजेंद्रबाबू को समझाने की और पलटाने की कोशिश हुई। मैं तो इलाहाबाद गया भी। बापूजी ने मुझे इधर खत भेजा और राजेंद्र-बाबू ने भी भेजा।

बापू ने तो लिख दिया कि वे उनके मत के साथ सहमत नहीं हैं। राजेंद्र-बाबू को चिट्ठी मैंने कल लिखी है, लेकिन मैं समझता हूं कि अब मेरा कुछ चलनेवाला नहीं है। राजेंद्रबाबू बहुत नरम प्रकृति के आदमी हैं।

उनका रिटायर होने का खास कोई कारण नहीं है, सिवाय मानसिक और शारीरिक थकान के। इसको मैं कायरता समझता हूं। किसीको ऐसे भागने का अधिकार नहीं है।

बोरसद में काम ठीक चल रहा है। सरकार भी तो होड़ में आ गई है।

आपका स्वास्थ्य ठीक होगा। कमलादेवी बंबई कब आनेवाली हैं।

लिखित,

वल्लभभाई

: १७४ :

बंबई, १४-७-३५

प्रिय भाई जमनालालजी,

आज मणिबहन के गले के टांसिल्स कटवाये। आप कब आनेवाले हैं, यह देखना था। अब खांसी कम हुई होगी, पर आपको टांसिल कटवाने ही होंगे। तबतक ऐसी तकलीफ होती रहेगी।

मेरा स्वास्थ्य सुधर रहा है, पर एकाध सप्ताह तो लग ही जायगा।

आज काकासाहब का शंकर आया था। उसे विलायत जाना है, बारह हजार रुपये चाहिए। लड़का होशियार तो है ही। जिसमें लग जायगा उसमें कामयाब होगा। मुझे लगता है कि उसे प्रोत्साहन देना चाहिए। किसी प्रकार मदद कर सकें तो करनी चाहिए। बड़ी उछलकूद मचा रहा है। किसी तरह रुपये जुटाकर उसे जाना तो है ही। लोन लेने की बात करता था। मैंने उसे उधारी न करने की सलाह दी है। पर आप मदद जरूर करेंगे इससे मैं सहमत हुआ हूं। इसका अर्थ यह हुआ कि आप कहीं-न-कहीं

से मदद करावेंगे, यह उसे स्पष्ट कहा है। मैंने कहा है कि तू लिखना, मैं भी लिखूंगा।

अपनी तबियत संभालें।

वल्लभभाई के वंदेमातरम्

: १७५ :

बंबई, १८–७–३५

प्रिय भाई जमनालालजी,

आपका पत्र मिला। मेरा इरादा राजेंद्रबाबू वहां आवें तब आने का है। मुझे उम्मीद है कि ता. २५ को सबेरे मैं भी वहां पहुंच जाऊंगा। चि. मणिबहन को दो दिन काफी तकलीफ रही, लेकिन आज ठीक है। अब दो-तीन दिन में ठीक हो जायगी। मेरे साथ आ सकेगी। वर्किंग-कमेटी के सिवा और किसे बुलाया है, यह कुछ मालूम नहीं हुआ। आशा है कि आपको तो खबर दी ही होगी। भूलाभाई के नाम पत्र है। उन्हें बुलाया है। इसलिए दूसरे भाइयों को यदि निमंत्रित किया होगा, ऐसा मानता हूं।

शंकर के बारे में आपने लिखा सो जाना। रूबरू मिलेंगे तब बात करेंगे।

वल्लभभाई के वंदेमातरम्

: १७६ :

बंबई, १३-८-३५.

प्रिय भाई जमनालालजी,

आपका खत मिला। बोरसद के बारे में सरकार का जवाब मिल गया, इसलिए मुझे तुरंत इधर आना पड़ा। महादेवभाई भी आ गये हैं। कमेटी बनाने की आवश्यकता है। जल्दी कार्य खत्म करने का है, इसलिए तुरंत वर्धा छोड़ना पड़ा। छोड़ने का दिल नहीं था, हवा-पानी भी अनूकूल थे, लेकिन किस्मत की जो बात है।

आपके इंदौर के काम की रिपोर्ट अखबारों से मिली। कृपाकर सीकर के कार्य की विगत लिखते रहें।

आपकी तबियत का समाचार लिखना। श्री मणिभाईजी साथ आने वाले होंगे।

वल्लभभाई का वंदेमातरम्

: १७७ :

तीथल, ३०-५-३६

प्रिय भाई जमनालालजी,

मैंने आपको डॉ. खरे के पत्र भेज दिये थे। उसपर से देखा होगा कि वे अपने दिये हुए वचन का पालन करना नहीं चाहते हैं और उसका बचाव दूसरों का नाम लेकर करना चाहते हैं। चाहे जो हो इस काम में हाथ डालने में सार नहीं है। कल उनका तार आया है। कमेटी का प्रस्ताव हुआ है, वह देशमुख को पसंद करने की मैंने मंजूरी दी है। बापू को सब बता दिया था।

आपके समाचार नहीं मिले। अखबारों से जाना कि आप बिहार गये थे। आप जुहू जानेवाले नहीं है क्या ?

देवी और गण तो सब वहीं होंगे। बापू यहां से रवाना होने की जल्दी कर रहे हैं। सेगांव में जिनको छोड़कर आये हैं, उन्हींमें उनका मन लगा है। उन सबकी चिंता किया करते हैं। मेरा अंदाज है कि बरसात शुरू होने के पहले वहां आना अब बापू के लिए ठीक नहीं होगा। जून के पहले सप्ताह में वहां बहुत गर्मी होगी। इसलिए वहां १ जून को पहुंचने की जल्दी मचा रहे हैं, ऐसा न करके यहां ता. १२ या १५ तक रहें, इस विषय में आप लिखें तो ठीक होगा। सेगांव में सबसे मिलकर पूछकर लिखो, या तो वे लोग भी लिखें तो उन्हें शांति मिले और यहां रखने में मदद भी मिले। आपका पत्र मिला। नागपुरवालों की नादानी से दुःख होना स्वाभाविक है। पर उनके व्यवहार से मुझे जरा भी आश्चर्य नहीं हुआ। आपका स्वास्थ्य अच्छा होगा।

वल्लभभाई के वंदेमातरम्

: १७८ :

बंबई, २६-६-३६

भाई श्री जमनालालजी,

कल यहां से निकलने का इरादा है। १८ को सवेरे वहां पहुंच जाऊंगा।

डा. चोइथराम और जयरामदास भी उसी गाड़ी में यहां से आनेवाले हैं। इस बार आपने बहुत लोगों को न्यौता दिया लगता है। चातुर्मास में साधु-संतों का या देश-भक्तों का आतिथ्य करने से बहुत पुण्य मिलता है। इस-लिए आपको तो इस बार बहुत भारी पुण्य मिलनेवाला है।[1]

वल्लभभाई पटेल

: १७९ :

बंबई २१–७–३६

प्रिय भाई जमनालालजी,

आप तो बंबई आये ही नहीं। बापू की तबियत नहीं संभालेंगे तो गिरती जायगी। अब बीमार पड़ेंगे तो मुश्किल हो जायगी। आप किस काम में पड़े हैं? कलकत्ते में क्या कर आये? आप सब आनंद में होंगे। आज रात में हम बारडोली जा रहे हैं। आठ-एक दिन लगेंगे। मणि के प्रणाम।[2]

वल्लभभाई के वंदेमातरम्

: १८० :

बंबई, १२-८-३६

प्रिय भाई जमनालालजी,

कल रात अस्पताल से छूटकर घर आया। अभी कुछ दिन ड्रेसिंग के लिए जाना होगा। अब खास तकलीफ नहीं है। वर्धा आने की इच्छा बहुत थी परंतु डा. श्राफ मनाई करता है। इसलिए लाचार हो गया हूं। बेचारे राजेंद्र बाबू अकेले आ रहे हैं। कोई साथ में नहीं है। राजा तो आखिरी घड़ी में खिसक गये। उनका तो ऐसा कुछ-न-कुछ निकला ही करता है। क्या किया जाय? बार-बार इस्तीफा दे, उसे क्या कहा जाय?

आपका पत्र मिला। कमजोरी तो आती ही है, पर थोड़े दिनों में शक्ति वापस आ जायगी, ऐसा मानता हूं।

बेचारे मणीलाल कोठारी की बड़ी दयाजनक दशा हो गई है। चित्त-भ्रम-जैसा हुआ है। शायद पक्षाघात भी हो जाय। हरकिसनदास अस्पताल में

---

[1]–[2] गुजराती से अनूदित

रखा है। नर्सिंग आदि का रात-दिन का प्रबंध किया है।

वल्लभभाई के वंदेमातरम्

: १८१ :

बंबई, ७–९–३६

प्रिय भाई जमनालालजी,

आज अहमदाबाद जा रहा हूं। एक बात आपको लिखनी जरूरी है, वह लिख देता हूं।

गये साल, अपने बीच में अब फिर कभी गलतफहमी न हो, इसलिए जो कुछ कहना हो वह सीधा एक दूसरे को कह देना, ऐसी बात हुई थी। गई बार वर्धा आया तब ऐसी घटना हुई, जिससे आपको इस पत्र में दो बातें लिख देना आवश्यक लगता है।

घनश्यामदास को बापू ने बुलाया, उसमें मेरा जरा भी हाथ नहीं था। बल्कि मैं तैयार हुआ था सो उनका तार आने से रुक गया। उस तार की बात मैंने आपसे की, उस वक्त आप खूब गुस्से में थे, यह देख सका। आपने इतना ज्यादा क्रोध क्यों किया? यह मैं अभी तक नहीं समझ सका हूं। मित्रों के अंदर-अंदर भूल हो तो वह सुधारी जा सकती है, पर ऐसा क्रोध नहीं किया जाय, लेकिन इससे भी विशेष तो मुझे यह दुःख हुआ कि आपको मैंने खात्री दी कि मेरा उनको बुलाने में बिल्कुल हाथ नहीं था, फिर भी आपने मेरी बात मानी ही नहीं। मुझे पार्लमेंटरी बोर्ड के संबंध में उनसे काम था, यह बात मैंने आपसे कही थी। इससे मैंने ही उनको बुलाया होगा और बापू के मार्फत तार कराया होगा, ऐसा होते हुए मैं वह बात आपसे छुपाता हूं, ऐसा आपने मुझपर इल्जाम टेढ़ी रीति से लगाया। दूसरे दिन मैं महादेव के पास आपको ले गया, उसमें भी मेरा हेतु तो आपको खात्री कराने का और आपका मुझपर का रोष उतारने का था। फिर भी आपके मन में से मुझपर का वहम चला गया हो, ऐसा मुझे नहीं लगा। इतना अधिक वहमी मन रखना और अपने सगे भाइयों की बात अथवा वचन पर भरोसा न करना, आपका यह रुख मेरे लिए भारी दुःखकारी हो गया। अभी भी आपके मन में

से १६ आना वहम चला गया हो, ऐसा मैं नहीं मानता । पार्लमेंटरी बोर्ड के काम के संबंध में आपकी मदद मांगने की तो मेरी हिम्मत ही न हुई। कारण, वह बात निकालते ही आपका वहम आपको अधिक औंधे रास्ते ले जाय अथवा यह काम तो मेरे अकेले ही का है, ऐसा आपको लगता है। इसलिए मैं आपका रुख समझकर चुप हो गया। इनसब बातों पर आप विचार करके देंखे और आपने मुझपर अन्याय किया है, ऐसी खात्री होती हो, तो मुझपर वहम निकाल देंवे ।

गुस्सा करना छोड़ देंवे । अहमदाबाद आज जा रहा हूं। १५ दिन वहां लगेंगे ।[1]

वल्लभभाई के वंदेमातरम्

: १८२ :

वर्धा, ८-९-३६

पू. वल्लभभाई,

आपका ता: ७-९ का पत्र आज मिला। पढ़कर मुझे भी थोड़ा दुःख हुआ। उस रोज की घटना के बारे में आपने लिखा, वह प्रायः ठीक है। मुझे क्रोध भी खूब आया था, जो न आना चाहिए था। उसका मुझे दुःख अवश्य है । परंतु वह सब क्रोध आपपर ही नहीं था। महादेवभाई पर भी था। उसमें मेरा दोष जरूर था, परंतु आप उस दिन की मेरी मनःस्थिति का विचार तथा उतना क्रोध आने के कारण का पता लगाते, तो आपको पूरा हाल मालूम हो जाता। उस हालत में आप मेरे बारे में गैर-समझ नहीं करते। आप घनश्यामदासजी को यहां बुलाना चाहते थे, यह तो मैं पहले से ही जानता था। इसीलिए भी खास कर दो तार मैंने उन्हें भेजे और दोनों का जवाब आया, वह भी मैंने आपको दिखलाया व बापू को दिखलाया। उस समय बापू ने उनके आने की जरूरत नहीं समझी । तब बापू को पूछकर नरगिस व पेरीनबहन को आने के लिए तार भेजा गया व वह आ भी गईं। बाद में

---

1. गुजराती से अनूदित

बापू का स्वास्थ्य खराब होने की रिपोर्ट खानसाहब ने दी। चि. मणी ने कहा, "ऐसी मेरी समझ है कि आपने बापू के नाम से तार भेजकर घनश्यामदास को बुलवाने के लिए पुछवाया है।" उसपर मैंने उसे कहा कि आपसे कह देवें कि अभी उन्हें न बुलाया जावे, क्योंकि बापू का स्वास्थ्य भी खराब है। यहां मेरे पास ठहराने की व्यवस्था भी नहीं है। मैं इन दोनों बहनों को यहां से सेगांव जाने से रोक रहा हूं। सवारी की भी इन दिनों वर्षा के कारण दिक्कत है। घनश्यामदास की नाक में तकलीफ के कारण सर्दी वगैरा बैठ जाने का डर है। इन कई कारणों से अब इस समय न बुलाना ही ठीक है। बाद में जब शाम को मुझे मालूम हुआ कि उन्हें बुलाने का तार गया है, बापू को १०५ डिग्री ज्वर है, आप सभा में भी नहीं आये उसका भी मुझे बुरा मालूम हुआ और तब जरूर मुझे लगा कि आप चाहते तो घनश्यामदास को बुलाने का तार नहीं भेजा जाता। आपकी इच्छा के लिए ही बापू ने तार भेजा होगा। घनश्यामदास के आने से बापू की इस हालत में बापू को व उनको दोनों को ही कष्ट पहुंचता, इसका मेरे मन में जरा भी संदेह नहीं था। मुझे यही लगा कि जब मैंने आपको मना करवा दिया तो भी आपने उसका विचार नहीं किया। आप अपने काम (मतलब) के सिवाय और किसीके दुःख-तकलीफ की परवा कम करते हैं, यह विचार मेरे मन में जरूर आया। यह बात सत्य है और ये भी विचार आये कि जो काम आपको करने की इच्छा होती है और उसमें कुछ कारण होता है तो आप बापू का नाम ले दिया करते हैं। मैं मान लेता हूं कि इसमें मेरी भूल व दोष हुआ हो परंतु जो मेरे मन की वस्तुस्थिति उस समय थी वह मैंने थोड़े में यहां लिखने का प्रयत्न किया है। कई कारणों से मेरी मनःस्थिति, कार्यपद्धति तथा अन्य कमजोरी ऐसी है जिससे न मैं आपको संतोष दे पाता हूं न अन्य मित्रों को। ऐसी हालत में धीरे-धीरे अलग होने में ही मेरा श्रेय है।

आपको मैं अपना बड़ा भाई मानता हूं, मानूंगा भी। जो कुछ भी मेरे मन में अच्छा-बुरा सच्चा-झूठा खयाल होता है, वह आपसे पेट भरकर कह देना चाहता हूं। परंतु मालूम नहीं ऐसा क्यों नहीं बनता। आपको

जान या अनजान में इस घटना से चोट पहुंची है तो मेरे मन की स्थिति व उपरोक्त थोड़े कारणों का खयाल रखकर क्षमा करेंगे। आपने लिखा, पार्लियामेंटरी काम आपका अकेले का निजी का तो है ही नहीं। यह तो मैं भली प्रकार जानता हूं। मुझसे जो थोड़ा-बहुत इस काम में भी बन पड़ता है, करने की चेष्टा करता हूं। परंतु दूसरी अन्य जिम्मेवारियां इतनी हैं, और उनमें मित्र-मण्डल की सहायता बहुत कम मिलती है, इस कारण भी मैं मेरी मर्यादा निश्चित कर लूं तो आपको बुरा नहीं लगना चाहिए। क्योंकि अब मेरे में नई ताकत व उत्साह तो पैदा नहीं हो रहा है। मुझे बहुत-सी बातें अकेले की जिम्मेवारी पर करनी पड़ती हैं। आशा है, इस संबंध में आपसे रूबरू में ज्यादा स्पष्ट खुलासा हो जा सकेगा।

पू. बापू को बुखार तो नहीं है, कमजोरी ज्यादा हो गई है। आशा तो है ८–१० रोज में ठीक हो जावेंगे। आपका प्रोग्राम लिख भेजें। श्री राजेंद्र-बाबू व जयप्रकाश व ब्रजकिशोरबाबू यहींपर हैं। स्वास्थ्य वैसा ही है।

जमनालाल के वंदेमातरम्

: १८३ :

बंबई, ३१–१–३७

प्रिय भाई जमनालालजी,

अब आपको कब और कहां मिलूंगा, इसका कोई ठिकाना नहीं है। मैं भी भटकता रहूंगा। वह तीसरे हफ्ते (किस्त) किस तारीख को मिलेगा, यह पता नहीं है। आपके आये बिना नहीं मिलेगा, और आप कब आयंगे, यह खबर नहीं है। अब तो चारों ओर से जल्दी लगी हुई है। दिन नजदीक आ गया है, इसलिए बेहद उतावली हो रही है। चौथा हफ्ता (किस्त) तो अभी मिलनेवाला है नहीं, यह तो सब निबट जाने पर ही मिलेगा।

ऐसी हालत में अब उतनी रकम आपकी पेढ़ी से मुझे उधार मिल जाय तो सरलता हो। किस्त हफ्ते आने पर वसूल कर ली जायगी, इसलिए तब तक जरूरत के मुताबिक रकम मैं ले सकूं और पचास रुपये की मर्यादा में उठा सकूं, ऐसा बंदोबस्त आप कर दें तो मेरा रास्ता सरल हो। इसके बारे

में कल आप मुझे तार से जवाब दें और पेढ़ी पर जो इंतजाम करें उसकी खबर देवें, कारण यह है कि तार से ही सारा काम करना पड़ता है और फिर कल के दिन रहकर परसों बाहर गांव जाना है। ताकीद का काम है, इसलिए तुरंत जवाब दें। तारीख २–२–३७ के दिन शाम को यहां से गुजरात के लिए रवाना होनेवाला हूं।

प्रतापसेठ का कोई जवाब आया ? मूलजी सिक्का आये हैं। उन्हें मिल सकें तो अच्छा। इसके लिए आपको खुद आना पड़ेगा। पर वह तो हमारी अनुकूलता हो तभी।

काम तो सब जगह बराबर चल रहे हैं, पर सभी खुराक अच्छी मांगते हैं।[1]

वल्लभभाई के वंदेमातरम्

: १८४ :

तीथल १३–५–३७

प्रिय भाई जमनालालजी,

आपका ६–४–३७ का पत्र बारडोली में मुझे दो दिन पहले मिला। श्री भूलाभाई तो ८ तारीख को विलायत चले गये। जून १५ तक आवेंगे। आपके केस की बातें महादेवभाई से भी सुनीं। विशेषकर जिस तरह केस चले वैसे लिखते रहें। गवाही में खूब तकलीफ देते हैं, यह साफ है, इसलिए तो केस लंबा चलावेंगे इसमें मुझे ताज्जुब नहीं लगा। आपका बयान पूरा हो जाय, तब खबर दें। थोड़े दिन आराम लेने यहां आवें तो कैसा ? बापू मजे में हैं।

आपका स्वास्थ्य अच्छा होगा।

वल्लभभाई के वंदेमातरम्

---

[1] गुजराती से अनूदित

: १८५ :

वर्धा, २९-७-३७

प्रिय भाई जमनालालजी,

आपने बंबई में डालमियां के बारे में जो बात कही थी, उस संबंध में मैंने इधर जांच की। कई लोग बिहार से आये थे, उनसे पूछ लिया। इससे पता चला कि राजा डुमराव जो बड़ी धारा-सभा में गये हैं, वे बड़े-बड़े जमींदार लोगों का एक मतदार मंडल है, उसकी तरफ से गये हैं। इस जगह पर कांग्रेस ने अपने उम्मीदवार को आज तक कभी खड़ा नहीं किया और डालमियां खुद वहां से खड़े होते तो कांग्रेस को कोई आपत्ति नहीं थी। जिस जगह पर वह खड़ा रहना चाहते थे, वह तो कांग्रेस की जगह थी। श्री अनुग्रहबाबू ने जब सेंट्रल असेंबली छोड़ दी, तब उनकी जगह पर, हमारा फर्ज था कि हम कांग्रेस के आदमी को ही भेजें। मुल्क की मौजूदा हालत में कांग्रेस की एक भी सीट हम छोड़ना नहीं चाहते थे। डालमियां की ख्वाहिश यह थी कि उनको उसी जगह से जाने दें। हमने इनको संदेश भी भेजा था कि वे कांग्रेस की टिकट पर दस्तखत कर दें, ताकि हम उनको भेज सकें। लेकिन इसके लिए उन्होंने इनकार किया। डालमिया और राजा डुमराव के बीच में इस हालत में किसी तरह से मुकाबला नहीं हो सकता है। आप उनसे मिलनेवाले तो हैं, अतः उनके साथ स्पष्टता से बात हो सके, इस हेतु से मैंने यह सब खुलासा आपको भेजा है। यदि हमारी कोई गलती न हो, जैसाकि हम मानते हैं, तो इनको कहना चाहिए कि खामखा हमारी शिकायत हमारे पीछे न करें, क्योंकि इससे उनको कोई लाभ नहीं होगा। हम लोग किसी बड़े धनिक के साथ भी अन्याय नहीं करना चाहते। लेकिन हमारे पास से किसी प्रकार के अन्याय की अपेक्षा भी किसी बड़े धनिक को नहीं करनी चाहिए।[1]

वल्लभभाई का वंदेमातरम्

---

[1] गुजराती से अनूदित

: १८६ :

बंबई, २२-१२-३७

प्रिय भाई जमनालालजी,

आपका तार कल रात को बारह बजे मिला। आज जांच की। तार से जवाब देने में सारी विगत लिखना संभव नहीं था। इसलिए पत्र लिख रहा हूं। लोन की टेंडर भरने की मियाद कल ३ बजे पूरी होती है। लोन अभी आठ लाख की निकाली है। उसमें चार लाख की बाहर से भरनी है। ३॥। टके का ब्याज है। १५ लाख के टेंडर देने हैं। १०४ के भाव से कम में भरने से कुछ मिलने-जैसा नहीं है, जांच कराने से ऐसा मालूम पड़ता है। इसलिए ऐसे ६ रुपये प्रीमियम से लोन लेना पोसायगा या नहीं, यह तो आप जानें। मुझे तो इतना प्रीमियम भरकर टेंडर भरना ठीक नहीं लगता। फिर भी यदि आपको योग्य लगे तो और टेंडर भरना हो तो, मैं तो आज रात को जाने-वाला हूं, लेकिन प्रा. समिति में मंत्री के नाम तार कर दें तो कल तार मिलते ही टेंडर और रुपये जमा कर आवेंगे। टेंडर के साथ सैकड़ा ६ टका डिपोजिट भरना है। इसकी सुविधा रखेंगे और फार्म तैयार रखेंगे। आपका तार आयेगा तो भर आवेंगे, नहीं आवेगा तो रद्द कर देंगे। आज रात को हरिपुरा जाता हूं। बापू की तबियत ठीक होगी।[1]

वल्लभभाई के वंदेमातरम्

: १८७ :

जयपुर, १९-७-३८

प्रिय श्री वल्लभभाई,

आपका १४-७-३८ का तार मिल गया था। अखबारों से आपने सीकर के बारे में खबरें जान ली होंगी। संभव है, आज या कल जयपुर-दरबार से मिलना हो सके। आपके नाम एक तार भेजने की इच्छा मैंने जयपुर के अधिकारियों के पास प्रकट की थी, परंतु उन्होंने अपनी सम्मति नहीं दी।

---

1. गुजराती से अनूदित

तार का मसविदा इसके साथ है। समिति का प्रयत्न चल रहा है। इसलिए यह तार प्रेस में देना ठीक नहीं समझता। स्थिति काफी चिंताजनक है। सीकर में निकट भविष्य में गोलीबार नहीं होगा, इस तरह यंग ने विश्वास दिलाया है। लोगों में भय छा गया है। अनाज के थैले, जो सीकर स्टेशन पर पड़े हुए हैं, जयपुरवाले शहर में नहीं जाने देते। पेट्रोल भी सीकरवालों के पास खतम हो रहा है। हर तरह से तंगी है। तार भेजते हैं तो सेंसरवाले रोक लेते हैं।

कल मैं सीकर जाऊंगा। वहां से २२ की शाम तक वर्धा पहुंचने की कोशिश करूंगा। परंतु यदि यहां का काम संपूर्ण नहीं हो सका, तो संभव है कि, वर्किंग कमेटी में इस बार शरीक न हो सकूं।

मध्य प्रांत बरार मंत्रि-मंडल में फिर मतभेद पैदा हो गया है। यह जानकर चिंता हो रही है। अखबारों में देखा कि आपने बियाणीजी को सूचना दी है। मैं भी उन्हें लिख रहा हूं।

जमनालाल बजाज के वंदेमातरम्

: १८८ :

पौनार, ४-११-३८

पूज्य वल्लभभाई,

आज मुझे ४९ वर्ष पूरे होकर पचासवां वर्ष शुरू होता है। यह पत्र मैं विनोबा के स्थान से लिख रहा हूं। इन वर्षों में मेरी उन्नति होने के बदले अवनति विशेषतया हुई। मुझमें कमजोरियां भी काफी दिखाई दे रही हैं। परमात्मा की दया होवेगी व पूज्य बापूजी, विनोबा व आप-सरीखे पूज्य व प्रिय मित्रों का आशीर्वाद रहेगा, तो शायद दूर हो सकेंगी और कोई राजमार्ग दिखाई देगा, अन्यथा जीवन में कोई रस नहीं रहनेवाला है। प्रिय किशोर-लालभाई ने कुछ रोज पहले आपका पत्र बताया था। उसमें आपने लिखा था कि मैं बंबई आता-जाता था; परंतु आपसे नहीं मिला। यह बात सत्य है। दिल्ली के बिड़ला-हाउस में भाई घनश्यामदास की हाजिरी में जिस प्रकार हमारी बातचीत हुई, उससे यह बात तो बिल्कुल स्पष्ट मालूम हो गई कि

आपको मेरे व्यवहार से वहुत दुःख हुआ व चोट पहुंची है। साथ में मेरी भी वही हालत थी। मुझे इतनी चोट व दुःख हुआ कि मैं उसे भूलने की कोशिश करने पर भी उसे भूल नहीं सका। यह तो समय जाने पर ही संभव है। ऐसी हालत में मैं अगर आपसे मिलता तो भी वे ही बातें याद आकर आपको व मुझे दोनों को दुःख ही पहुंचता। इसलिए मैं जान-बूझकर नहीं मिला। मैं आपको बड़ा भाई मानता आया हूं और भरसक मानता रहूंगा, इसलिए इस 'खानगी' पत्र में मैंने पूज्य शब्द का प्रयोग किया है। सार्वजनिक पत्र में तो 'प्रिय' शब्द ही प्रयोग करने की इच्छा है। मैं यह भी मानने को तैयार हूं कि आपके व मेरे तीव्र रूप के मतभेद में, बहुत संभव है, मेरा ही कसूर हो; परंतु कुछ बातें मेरे हृदय में बैठ गई हैं, मैं क्या करूं? मैं तो नरीमान व शरीफ प्रकरण प्रायः भूल गया था। परंतु देहली में आपने जिस प्रकार कहा, व मैंने गंगाधर राव व देव तथा स्वामी को जो पत्र लिखे, उस बारे में आपको जो चोट पहुंची, तथा उस बारे में डा. खेर आदि की उपमा देकर आपने अपना दर्द प्रकट किया, फिर भी मेरा हृदय अभी तक यह गवाही नहीं देता कि पत्र लिखने में मेरा इतना अपराध हुआ; तब क्या करूं? मैं तो आपसे इतना ही कह सकता हूं कि अगर आप विश्वास कर सकें तो, इतनी सब घटनाओं के होते हुए भी, मैं आपको पूज्य मानता हूं तो इसका कारण यह है कि आपमें कई गुणों को देखता हूं। आपकी बहादुरी व जिस काम को हाथ में लेना, उसे सफल करके छोड़ना, इसपर तो मैं मुग्ध हूं। दूसरे लोगों से आपकी बड़ाई सुनकर मुझे सुख मिलता है तथा लोग अगर आपकी निंदा करते हैं तो स्वभावतया उनसे लड़ भी लेता हूं। यह सब इसलिए कि मैं आपको अपना समझता हूं। एक कुटुंब में मतभेद हो, त्रुटियां दिखाई दें, तो भी वह छूट नहीं सकते। मैं आपमें त्रुटियां व आपके स्वभाव में दोष व कमजोरियां भी देखता हूं। पू. बापू व आपके व मेरे मित्रों के सामने कभी-कभी चर्चा भी हो जाती है। परंतु मेरा उद्देश्य तो यही रहता है कि वे त्रुटियां भी आपमें न रहें। मैं आपको पूजता रहना चाहता हूं, आपके गुणों व कौटुंबिक संबंध के नाते, न कि आपकी कमजोरियों को गुण समझकर। मैं एक बार फिर दुहरा

देना चाहता हूं कि आपकी जितनी ज्यादा प्रतिष्ठा बढ़ेगी, व हम लोगों के मित्र हृदय से आपका आदर व प्रेम करते रहेंगे, तो मुझे जितना सुख मिलेगा, उतना कम लोगों को मिलना संभव है। मैं नहीं चाहता कि मित्र लोग व कार्य-कर्त्ता आपसे डरकर प्रेम करें। बस, अगर फर्क है तो इतना ही हो सकता है। मैं लिखने तो क्या लगा था और लिख क्या डाला। खैर। आखिर मन के भाव ही तो लिखे हैं। और वह भी अपने बड़े भाई को लिखे हैं। इसमें डर क्या ?

मालूम होता है कि आपने किशोरलालभाई को एक बार कहा था कि इस प्रकार की स्थिति में आप मेरे यहां ठहरना भी पसंद नहीं करते। मैंने जब यह बात सुनी तो मुझे चोट लगना स्वाभाविक था। इसमें आपका दोष भी मैं नहीं निकालता। लेकिन दोष एक तरह से दे भी सकता हूं। अगर आप मेरा घर आपका भी मानते हों, अथवा मेरा घर मेरे अकेले का ही नहीं है, वह जानकीदेवी, कमलनयन, मदालसा, राधाकृष्ण वगैरह सबोंका है, व वे सब तो प्रायः आपको पूज्य समझते व प्रेम से देखते हैं; इनमें से बहुतों को तो अभी तक हम लोगों के मतभेद का पता भी नहीं है, वैसी हालत में आपके मन में यह विचार आने से, क्या उनके प्रति अन्याय होना संभव नहीं है ? आप यह अवश्य कर सकते हैं कि मेरे साथ आप किसी भी राजनैतिक या सार्वजनिक विषयों पर चर्चा न करें, जबतक आपका व मेरा समाधान न हो जाय। घरेलू बातें, हास्य-विनोद आदि क्यों नहीं किया जाय ? आप विचारकर देख लेवें। मैं तो डाह्याभाई के पास जरूर जा सकता हूं, खा सकता हूं व कान भी पकड़ सकता हूं। आपसे मतभेद हो गया तो क्या सब बालकों से भी हो जाना चाहिए। यह कहां का न्याय ? सच बात तो यह है कि अगर आप मेरे शुभचिंतक हैं तो आपको मुझे जबतक मेरा दिमाग व दिल पूरी तौर से उत्साह के साथ काम देने लायक न हो जावें, तो वहांतक तो आपको मुझे सार्वजनिक कामों से अलग होने में पूरी मदद दिल से करनी चाहिए व मेरे काम का व जबाबदारी का जो थोड़ा-बहुत बोझ हो वह आपको प्रसन्नतापूर्वक उठा लेना चाहिए। नहीं तो आप मेरे दोष कैसे निकाल सकेंगे ? आपका अगर मेरे प्रति कुछ भी प्रेम रह गया हो, जोकि रहना स्वाभाविक है, तो आप मुझे

हमेशा के लिए नहीं तो, कुछ लंबी मुद्दत के लिए ही सही, सार्वजनिक जिम्मे-वारी की जगहों से मुक्त करने में सच्चे दिल से मदद करें व मुझे आशीर्वाद प्रदान करें कि मुझमें कमजोरियां निकालने की ताकत पैदा हो व सद्बुद्धि रहे।

चि. मणी, डाह्याभाई बावला को आशीर्वाद कहें। आशा है कि आपसे सुख व समाधान मिले, ऐसी भेंट मिलेगी।

जमनालाल बजाज के वंदेमातरम्

: १८९ :

सीकर, १४-७-४१

प्रिय श्री वल्लभभाई,

आपका तार यथासमय मिल गया।

जयपुर में मुझे दो रोज रुकना पड़ा। मैं प्राइम मिनिस्टर से मिला। पहले रोज उन्होंने ही मिलने की इच्छा प्रकट की थी। पहले रोज की बात-चीत के सिलसिले में दूसरे रोज भी मिलना पड़ा। इन लोगों ने काफी कोशिश की कि मैं सीकर न जाऊं। लिखित हुक्म नहीं दे सके। जयपुरवाले समझौते की बात नहीं चाहते। वे समझते हैं कि उनकी कार्य-पद्धति से वे सारी हालत पर काबू पा सकेंगे। आपको कष्ट देकर कुछ नतीजा निकाल सकें, ऐसी उम्मीद नहीं है। अतः आपको तकलीफ न देना ही ठीक समझा है। मैं अभी सीकर जा रहा हूं। वहां जाकर वहां की परिस्थिति का निरीक्षण कर आगे का प्रोग्राम निश्चित कर सकूंगा।

जमनालाल बजाज के वंदेमातरम्

: १९० :

वर्धा, २५-९-४१

पूज्य वल्लभभाई,

आपका प्रेमभरा पत्र मिला। मैंने तो जानबूझकर आपको पत्र नहीं लिखा कि फिर आपको जवाब लिखने की इच्छा होवेगी। मुझे उधर से आपके स्वास्थ्य की पूरी जानकारी रहने का खयाल रखना था।

पूज्य बापूजी ने सत्याग्रह की इजाजत नहीं दी। मुझे सरकार ने स्वास्थ्य

के कारण अयोग्य (अनफिट) करके छोड़ दिया। अव मैं बापू के द्वारा फिट नहीं समझा जा रहा हूं। इस विचार से मेरे मन में क्या भावना आती होवेगी, उसका आप विचार कर सकते हैं। जयपुर प्रजा-मंडल से इधर मेरा संबंध प्रायः नहीं सरीखा रहा, गोकि में जयपुर को भूल तो नहीं सकता था। आपने मेरे संदेश के बारे में जो शंका की, वह एक प्रकार से ठीक है। परंतु इधर वहां की जैसी परिस्थिति हो गई थी, उसमें कुछ कार्यकर्त्ता वहकावे में आकर नई पार्टी में शामिल हो गये थे। जूने (पुराने) कार्यकर्त्ताओं में उदासीनता आ जाने के कारण मुझे संदेश भेजना पड़ा। मैंने संदेश में लिखा था कि मिलकर ही रचनात्मक कार्य करना चाहिए। इसका विशेष खुलासा मिलने पर करूंगा। दूसरे, राजा ज्ञाननाथ एक भयंकर दमन-नीतिवाले सावित हुए हैं। उनके हाथ में ये सब लोग न चले जावें, इन विचारों से तार भेजा था। मेरे पास उन लोगों के जो पत्र आये हैं, व मैंने जो तार व पत्र दिये हैं, वे आप देखेंगे तो मुझे आशा है कि आपको संतोष हो जायगा। मैंने आपका मेरे नाम का पत्र पू. बापू को दे रखा है। थोड़ी बात हुई, बाकी कल हो जायगी। आपका स्वास्थ्य कैसा है? यहां कबतक आनेवाले हैं? मुझे सत्याग्रह के अभाव में गो सेवा का कार्य करने की परवानगी मिली है। आशा है कि इस काम में आपका आशीर्वाद तो रहेगा ही।

जमनालाल बजाज के वंदेमातरम्

: १९१ :

शिमला, २९-४-२९

भाई श्री जमनालालजी,

आपका ता. २७-४ का पत्र मिला। पढ़कर आनंद हुआ। संतरों की मौसम खतम होगई है। तब भी आपने एक पेटी भेज दी, बड़ी कृपा। सिंहगढ़ जाने का इरादा छोड़कर कुछ रोज के लिए सेवक के पास कृपा करके आ जाओ तो अच्छा। संतरे अच्छी हालत में पहुंच गये हैं। वल्लभभाई की जय हो गई, ऐसी बात सुनी जाती है। सत्य क्या है, वह तो मालूम नहीं।

विट्ठलभाई पटेल का जयश्री स्वामीनारायण

: १९२ :

बंबई, २६-२-३४

परम स्नेही श्रीयुत जमनालालजी,

आपसे मिलने को दिल बहुत उत्सुक है। परमात्मा की कृपा से जल्दी मौका मिल जायगा, ऐसी उम्मीद रखता हूं। आपने यरवडा में मेरी संभाल लेकर व प्रेम रखकर मुझे बहुत ऋणी किया है, इसकी मुझे हमेशा याद रहती है। मैंने बापूजी को छूटने के बाद पत्र लिखा था और बापूजी का जवाब भी मिल गया है। आपको बापूजी बिहार में मिलेंगे तो मेरा बहुत-बहुत प्रणाम कहने की कृपा करें।

मैंने यह खत पहली दफे ही हिंदी में आपको लिखा है। इसमें बहुत ही चूक होगी। सो क्षमा करना।

आपको फुरसत जब-जब होगी, तब-तब मुझे लिखने की कृपा करेंगे तो बहुत एहसान रहेगा।

अपनी तरफ सबको वंदेमातरम्।

लि. दर्शनाभिलाषी,
नगीनदास मास्टर का वंदेमातरम्

: १९३ :

वर्धा, १८-९-३६

प्रिय श्री मंगेशराव,

१३-९-३६ का पत्र मिला।

कुछ लोगों का यह स्वभाव होता है कि जनता में वे ऐसी झूठी बातों का प्रचार करते हैं जिससे जनता में बुद्धि-भेद पैदा हो। स्वार्थ की भावना ही इसकी जड़ में होती है। महाराष्ट्र में संघटित रूप से ऐसा प्रयत्न कांग्रेस महात्मा गांधी व अन्य नेताओं के विरुद्ध हो रहा है, यह मैं जानता हूं। इसी दृष्टि को खयाल में रखते हुए मैं चाहूंगा कि महाराष्ट्र व खानदेश के कार्य-कर्त्ता अपने कार्य में ऐसी घटनाओं से बाधा न आने दें। गैर-जिम्मेदार लोगों की ऐसी बातों पर खयाल नहीं दिया जा सकता। परंतु यदि आप

समझते हों कि वह आदमी कुछ जिम्मेवारी का खयाल रखता है तो आप उससे कहें कि उसको जो कुछ कहना है वह लिखकर दे दे। आपको मालूम होगा कि महाराष्ट्र के कुछ अखबार भी इस प्रकार का गंदा प्रचार कर रहे हैं। एक अखबार पर तो मैंने मान-हानि का केस भी किया है। दूसरे पर भी करने का विचार है। इन दोनों केसों के बाद सब स्पष्ट खुलासा हो जायगा और फिर किसीको संशय नहीं रहेगा। मैं तो आज तक ऐसे प्रचार की ओर दुर्लक्ष्य ही करता आया था। परंतु इन लोगों ने इस चुनाव में कांग्रेस को हानि पहुंचाने की नियत से वह काम प्रारंभ किया है। इसीलिए मुझे ऐसा करना पड़ा।

जमनालाल बजाज के वंदेमातरम्

: १९४ :

बरेली, २२-९-३३

पूज्य काकाजी,

सादर प्रणाम। हम यहां कल रात को पहुंचे। स्टेशन पर दो लोग लेने आये थे। खानसाहिब को आज सुबह दस बज मिले। मुलाकात काफी देर तक चली। खानसाहिब बहुत प्रसन्न दीखते थे। तबीयत भी पहले से ठीक लगती थी। और उनका दो पौंड वजन भी बढ़ा है। अब वजन १४५ पौंड है। कमजोरी के कारण से पीठ में दर्द और पेट में भारीपन होता है। वह पठान रसोइये के बारे में खूब शिकायत करते थे। सादुल्ला ने खानसाहिब को घर, पेशावर और काबुल की बातें सुनाईं। गनी के लिए उनको अत्यंत चिंता होती है और वह चाहते हैं कि गोला की मिल में रहें, जिससे वह खानसाहिब को कभी-कभी मिल सकें। उनको बहुत आश्चर्य हुआ कि बापूजी ने गनी को १२० रुपये भेजे हैं। हमारे बारे में तो कहा है कि जबतक वह जेल में हैं तबतक हम बंबई रह सकते हैं। उसके बाद हमको जहां ले जायं वहां जाना पड़ेगा और सादुल्ला को भी कहा कि वह भले बंबई में काम करे। मेरे साथ भी बहुत प्रेम से बातें कीं और पश्तो सीखने के लिए कहा है। मुझे उनको देखकर बहुत आनंद हुआ।

दूसरे हफ्ते में आप खानसाहिब को मिल सकते हैं, मगर पहले से सुपरिटेंडेंट को सूचना दे दीजिए। मैंने जब खानसाहिब को मदालसा का संदेशा कहा तब उन्होंने पूछा कि मेरा छोटा पठान कैसा है ? वह कबतक अलमोड़ा में रहनेवाली है ? और क्या लिखूं। आज रात को हम बंबई जायंगे। भूल-चूक माफ करियेगा।

आदर के साथ आपकी,
सफिया (सोमजी)

: १९५ :

धारवाड़, २-५-३१

प्रिय महोदय,

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आपने हुकेरी में होनेवाली कर्नाटक प्रांतीय परिषद की अध्यक्षता स्वीकार करली है। क्या मैं आपसे अनुरोध करूं कि आप इस अवसर पर कुछ और समय लगाकर प्रांत का एक छोटा-सा दौरा कर लें, जिससे आप यहां के स्वदेशी कार्य से परिचय प्राप्त कर लें और भावी मार्गदर्शन के लिए हमें सुझाव दे सकें।

कर्नाटक प्रांतीय परिषद् इस महीने २६ और २७ तारीख को होने जा रही है और आपको इस परिषद् के अध्यक्ष के रूप में यहां पधारना है।

कर्नाटक ऐसे सुअवसर का सदुपयोग किये बिना नहीं रह सकता क्योंकि वह अपनी इस सभा के उद्देश्य की पूर्त्ति के लिए आपसे बहुमूल्य परामर्श और मदद चाहता है।

वर्तमान समय में तो सभा अपना ध्यान विदेशी कपड़े व सूत के बहिष्कार की ओर लगा रही है और इस प्रांत के तो छोटे गांव तक में ये विदेशी वस्त्र मारवाड़ी ही बेचते हैं। उनकी अपनी शिकायतें और टेकनीकल कठिनाइयां हैं, जिन्हें संतोषपूर्वक आप-जैसे व्यक्ति ही हल कर सकते हैं। विदेशी कपड़े और सूत का बहिष्कार बड़ी आसानी से और सफलतापूर्वक चल सकता

हैं, अगर मारवाड़ी तथा अन्य व्यापारी उसमें लग जायं। ऐसी परिस्थितियों में सभा का अनुरोध है कि आप अपने बहुमूल्य समय में से थोड़ा—एक सप्ताह के लगभग—कर्नाटक के कपड़े और सूत के केंद्रों को देखने में लगायें, जिससे आप स्थानीय कठिनाइयों को समझ लें और व्यापारी समाज को प्रभावित कर उसे सभा के काम में सच्चे दिल से और पूर्णतः सहयोग देने के लिए तैयार कर सकें। सभा आपका समय सार्वजनिक भाषणों की व्यवस्था में बर्बाद न करके संबंधित व्यापारियों से निजी और दिली बातचीत में लगायेगी। सभा आपसे इनसब कामों के कराने की आशा रखती है।

अखिल कर्नाटक स्वदेशी सभा एक ऐसी संस्था है जो कर्नाटक में स्वदेशी का प्रचार कांग्रेस के आदेशानुसार कर रही है। अमली रूप में यह कांग्रेस की पुरानी बहिष्कार-समिति है।[1]

आपका,

आर० एस० हुकेरीकर

मंत्री, अखिल कर्नाटक स्वदेशी सभा

---

१. अंग्रेजी से अनूदित

बिहार

: १९६ :

छपरा, ३-११-३१

प्रणाम !

आपसे बातें हुईं थीं, उसके बारे में महेंद्रबाबू से सलाह-मशविरा किया गया। जैसा आपने कहा था उन्होंने अपनी जमींदारी के सब मौजे का ब्यौरा दिखाया था। किसकी क्या आमदनी है, कितनां सरकार को देना होता है। आपका कुल २२,००० रुपये असल बाकी है और इस साल का सूद बाकी है।

जैसा आपने कहा था सादा कागज पर मसौदा लिखा गया है, लेकिन उसमें ग्राम का नाम नहीं भरा गया है। आप दोनों में जो पसंद करें उसको मसौदे में दर्ज करके गवाही वगैरह कराकर महेंद्रबाबू व राजेंद्रबाबू से लिखवाकर आपके पास भेज दिया जाय, और इसको आपके पास भेज देने पर जब यहां का काम (बिजलीवाला) ठीक हो जाता है तब रजिस्ट्री करवा दी जायगी। तबतक जो मौजा आपका लिख दिया जाता है उसकी बचत आमदनी आपको पहुंचा दी जायगी। इस मौजे को आप ही का समझा जायगा। इसलिए शीघ्र उत्तर दें कि मसौदे को साफ लिखवा करके और मौजा उसमें चढ़ाकर दस्तखत गवाही बनाकर आपको भेज दिया जाय ?

आपका,

ब्रजकिशोर प्रसाद

: १९७ :

पटना, २५-१२-३५

श्रद्धेय सेठजी,

आपकी सेवा में अनेक खत लिखे पर उत्तर नहीं मिला। पता नहीं खत आपको मिले या नहीं। 'सर्चलाइट' की हालत नितांत शोचनीय हो

रही है। इस समय आप बंबई में अवश्य रहेंगे। इसी आशा से अपने मैनेजर पं० छविनाथ पाण्डेय को आपकी सेवा में भेज रहा हूं। आशा है, आप हमारी अवस्था का खयालकर कुछ बंदोबस्त अवश्य ही करा देंगे। आपको याद होगा कि हमने आपको बतलाया था कि करीब १५ हजार रुपये 'सर्चलाइट' को कर्ज है। उसका सूद दिन-दिन बढ़ता जा रहा है। एकाध पावनेदारों ने नालिश करके डिग्री भी करा ली है। एकाध नालिश की धमकी भी दे रहे हैं। यदि इस समय कम-से-कम ५००० रुपये भी मिल जायं तो कुछ काम चल सकता है। इसके अलावा ५-७ विज्ञापन का भी प्रबंध करा दीजिएगा जिससे मासिक घाटे की पूर्ति हो जाय। आप इन आदमियों से हमारे मैनेजरसाहब को मिला दें या अपने किसी आदमी के साथ भेज दें तो हमें कुछ-न-कुछ अवश्य विज्ञापन मिल जायंगे।

१. अम्बालाल साराभाई ने कैलिको मिल का विज्ञापन देने का वादा दिया था। यह दो वर्ष की बात है। आप उनसे कह देंगे तो जरूर कुछ-न-कुछ मिल जायगा।

२. श्री जाल नौरोजी ने डाक्टर महमूद से कहा था कि ताता के विज्ञापन 'सर्चलाइट' को दिला देंगे। आप उनसे कह देंगे।

३. श्री सकलातवाला के नाम पत्र एफ. ई. वाचा से दिला देंगे। उन्होंने वादा किया था कि विज्ञापन दिला देंगे।

४. सेठ कस्तूरभाई लालजी और सेठ रणछोड़दासजी से भी कुछ विज्ञापन मिल जायंगे।

आपको विशेष क्या लिखें। आप तो 'सर्चलाइट' से भली-भांति परिचित हैं।

भवदीय,
मुरली मनोहर

: १९८ :

छपरा, १५-११-२३

प्रिय भाई जमनालालजी,

मैं अमृतसर जाने के लिए यहां आया, पर जिस दिन रवाना होने को था

उसी दिन रात को बड़ी खांसी होगई और ऐसी खराब अवस्था होगई कि चारपाई पर पड़ गया । उसी कारण से मैं अमृतसर नहीं जा सका और बीजापुर भी नहीं आ सकूंगा।

मुझे बड़ा दुख है कि मैं वहां आप लोगों के दर्शन और सत्संगत से कुछ लाभ न उठा सका और न आगे क्या करना होगा इस विचार में सम्मति ही दे सकता । मैंने जैसा पहले लिखा है मैं विधायक कार्यक्रम को ही दो-तीन जगहों में अपने सूबे में जोरों से चलाने का प्रयत्न कर रहा हूं और आशा है कि इस महीने के अंदर ही नहीं तो दिसंबर के प्रथम सप्ताह में उसका आरंभ हो जायगा । कोकनाडा-कांग्रेस में, मैं समझता हूं, कि हम लोगों को विशेष अपनी ओर से कुछ नहीं करना है पर यदि स्वराज्य दलवाले कौंसिल संबंधी किसी बात पर जोर फिर लगाकर चाहें कि कांग्रेस की ओर से उनके लिए कार्यक्रम निश्चित कर दिया जाय तो इसका विरोध अवश्य करना होगा। जैसा मैं देख रहा हूं किसी प्रांत में स्वराज्य दलवालों की बहुतायत कौंसिल में नहीं होगी और असेंबली में मुझे पूरा शक है कि वह अधिक संख्या में नहीं जायंगे । ऐसी अवस्था में भी मैं यह नहीं समझता कि वह कांग्रेस को क्या करने को कहेंगे, पर यदि वह सहयोग की आज्ञा चाहें तो इसका विरोध अवश्य करना होगा । आप सब जैसा निश्चय करें लिख भेजिएगा । जैसा और जहांतक संभव हो सकेगा मैं चेष्टा करूंगा ।

सेवा-संघ के नियमों की प्रति भेज चुका हूं । दूसरा कोई कागज मेरे पास नहीं है । मैं यहां नाम चुन रहा हूं । पर यह चाहता हूं कि जो काम करना चाहे वह कुछ दिनों तक साथ रहे और काम करे । उसके बाद उनको स्थायी रूप से भरती करूं । कुछ काम शुरू हो गया है । कुछ रुपयों की भी जरूरत है । कुछ ऐसे कार्यकर्त्ता हैं जिनको मासिक देना पड़ता है । वह उसीसे देना होगा । इसलिए यदि कुछ रुपये शीघ्र पटने भेज देवें तो बहुत अच्छा हो ।

आपका,
राजेंद्रप्रसाद

: १९९ :

मुजफ्फरपुर, २७-७-२७

प्रिय भाई जमनालालजी,

हमारे सूबे में रायबहादुर रामेश्वरप्रसादजी एक बड़े जमींदार थे। उन्होंने प्रायः २५,०००) की अपनी संपत्ति अनाथालय और विधवाश्रम के लिए अपने वसीयतनामे में दी है। उसी अनाथालय के सबंध में आपसे कुछ सम्मति चाहिए। श्रीयुत श्रीप्रकाशजी, बनारसवाले एक ट्रस्टी हैं। मुझे भी उन लोगों ने ट्रस्टी बनाया है। इसलिए आपसे निवेदन है कि आप अपनी अमूल्य सम्मति देकर बोधित करें। सम्मति नियमावली और भावी कार्य-क्रम के संबंध में चाहिए।

आपका,
राजेंद्रप्रसाद

: २०० :

नई दिल्ली, २९-१-३५

प्रिय श्री जमनालालजी,

प्रणाम। पत्र और तार आपका यहां प्राप्त हुआ। यहां वर्किंग कमेटी का काम तो १७ ता० तक खतम हो गया, मगर पार्लमेंटरी बोर्ड और असेंबली-संबंधी काम में लग जाना पड़ा। फिर मि० जिन्ना से बातें शुरू हो गईं और अबतक चल रही हैं। काम के महत्व की ओर खयाल करके बापूजी ने मुझे यहां ठहर जाने की राय दी और सरदारजी ने भी रोक लिया। संभव है कि ता. ७ या ८ फरवरी को यहां से जाने की छुट्टी मिले। इस समय सरदारजी, राजाजी, डा० अनसारी, मि. शेरवानी, आसफअली से राय लेकर मुझे एक तरफ से और मि. जिन्ना से (उनके परसनल हैसियत से) दूसरी तरफ बातें करनी पड़ती हैं। मैं अभी पूरा स्वस्थ नहीं हो सका हूं। अभी भी कुछ खांसी चलती है और दिल्ली में सर्दी भी कड़ाके की है तब भी काम तो करना ही है। अभी तक लक्षण कुछ-कुछ आशाजनक है। संभव क्या है, यह कहना कठिन है; पर ईश्वर-कृपा से कुछ भी असंभव नहीं। इस संबंध में समय पर विशेष

खबर दूंगा।

आपके कान को इस समय क्या हो रहा है, यह जानने की चिंता लग रही है। आप कृपा करके लिखें कि हालत कैसी है।

और सब कुशल है।

आपका,
राजेंद्रप्रसाद

: २०१ :

नई दिल्ली, १४-२-३५

प्रिय भाई श्री जमनालालजी,

आपका पत्र मिला। यहां भी जिन्ना से जो बातें हुई, उसके फलस्वरूप जो निकला है उसे भेज रहा हूं और उसके साथ जो सरदार वल्लभभाई को पत्र लिखा है, वह भी भेज रहा हूं। उससे सब बातें मालूम हो जायंगी। मैं ९ से १५ मार्च तक वर्धा के लिए खाली रखने का प्रयत्न कर रहा हूं और आशा है आ सकूंगा।

छपरे में इलेक्ट्रिक का हिसाब आडिटर ने जांच लिया है। उसमें अपना २८,०००) लगा हुआ है और इसके अलावा ३१,०००) से अधिक उस रुपये पर सूद है, जो भाई ने अपनी जवाबदेही से लेकर लगाया है और जो हमको मिलना चाहिए। इसके अतिरिक्त १७,०००) मैनेजिंग एजेंसी का है। कुल प्रायः ७७,०००) पावना उसने निकाला है। अब इसपर मैं जाकर विचार करके कुछ निश्चय कराऊंगा। वर्धा के बाद यदि आप भी आ जाओ तो ठीक होगा। मथुराबाबू छपरे में है और इसी काम में लगे हैं।

यदि हिंदू-मुस्लिम-समझौते का काम आगे निकला तो इसमें भी पूरा समय लगेगा। और सब आनंद है। आशा है, आप अच्छे होंगे?

आपका,
राजेंद्रप्रसाद

: २०२ :

नई दिल्ली, २१-२-३५

प्रिय भाई जमनालालजी,

प्रणाम। आशा है, आप अच्छे हो गये होंगें और कान का घाव आराम

हो गया होगा। आपका पत्र मिला, जिससे मालूम हुआ कि आप वर्धा जा रहे हैं। इससे अनुमान करता हूं कि अब अच्छे हो गये होंगे।

आज धोत्रेजी का पत्र आया है कि ता० १०-३ से वर्धा में चरखा-संघ की और ११-३ से गांधी-सेवा-संघ की बैठक होनेवाली है। मैं आशा रखता हूं कि उपस्थित होऊंगा। श्री धोत्रे को अलग पत्र नहीं लिख रहा हूं, आप कृपया कह देंगे। पू. मालवीयजी आ गये। अभी बात बढ़ती नहीं दीखती। आज सरदार आ रहे हैं। तब पूरी बातें होंगी और जो कुछ होगा निश्चय करूंगा।

आपका,

राजेंद्रप्रसाद

: २०३ :

छपरा, १९-४-३५

प्रिय भाई जमनालालजी,

प्रणाम। यहांपर पवहारीजी का मामला भी तय हो गया। उनके आदमियों ने बडदुनिका गांव उनके रुपये के संधान में ले लेना स्वीकार कर लिया। बात-चीत पक्की होगई। पर उन लोगों के घरों में शादी है, इसलिए पक्का कागज लिखवाने के लिए वे लोग ठहर नहीं सके। शादी के बाद एक महीना के अंदर आकर लिखा-पढ़ी कर लेंगे। सूद वगैरह भाव नहीं चलेगा। खुदी मियां का भी स्टैम्प खरीद लिया गया है। आशा है, उनका और आपके——दोनों कागज आज लिखें जायंगे और मैं, मृत्युंजय और धन्नु आज उनपर दस्तखत करके जमशेदपुर जनार्दन को दस्तखत करने के लिए भेज देंगे। वहां से चार दिनों में वापस आ जाने पर रजिस्ट्री हो जायगी। इससे यहां का सब मामला तो ठीक हो जायगा, अब केवल इलेक्ट्रिक का मामला रह जायगा। इसके संबंध में अनुग्रहबाबू की भी पंडितजी से बातें हुई हैं। मैनेजिंग एजेंसी का जो ६०००) मिलेगा उसमें से हमको बैंक ३०००) साल दिया करेगा। और बाकी ३०००) साल जनार्दन मिल्स के बाकी ३००००) में प्रतिवर्ष लेकर १० बरसों में सब सधा ले और दस बरसों के बाद पूरी एजेंसी हमारी हो जाय। इस तरीके से बैंक को पैसा-पैसा अदा हो जाता है। इलेक्ट्रिक

कंपनी का खर्च प्रायः १८०) मासिक जो मैनेजमेंट में है वह कम हो जाता है। हमको २५०) मासिक पक्का हो जाता है और साथ ही ४५,०००) का डिबेंचर और १५,०००) का हिस्सा मिल जाता है और सभी हिस्सेदारों को कम-से-कम ४ रुपये सैकड़ा जल्द-से-जल्द मिलने लग सकता है। मैं चाहता हूं कि इसी तरह लिखा-पढ़ी करके बैंक से फैसला कर लूं। अपने ऊपर का सारा भार हट जाय। जो अपनेको डिबेंचर मिलेगा उसके संबंध में आप जैसा कहेंगे वैसा कर दिया जायगा। मैं आशा करता हूं कि इतना तो जरूर हो जायगा। अगर हो सकेगा तो बैंक से कुछ और छुड़वाने का प्रबंध किया जायगा और अगर कुछ हिस्सा, पंडितजी राजी हो जायंगे तो, उनको और देने का प्रयत्न किया जायगा। अगले रविवार ता० २१-४ को यहां इलेक्ट्रिक कंपनी की बैठक है। उसके बाद मैं पटना जाकर यह सब तय करना चाहता हूं और जो कुछ हो सकेगा कर लूंगा। सबकुछ निश्चित हो जाने पर चित्त भी स्थिर हो जायगा।

गांव में जो जिरात जमीन अपने जोत में है, उसको भी बंदोबस्त करके कुछ-न-कुछ १७-२० हजार तक निकाल देने की आशा है। वह जैसे-जैसे निकलता जायगा कर्जे में देते जायंगे और जमीन पर से बोझ उतारते जायंगे। यदि यह सब नक्शा ठीक हो गया तो लड़कों को अभी तो अपनी कमाई से ही सबकुछ चलाना होगा पर जैसे छूटता जायगा कुछ और तुरंत आमदनी बढ़ती हो जायगी।

आपने जो कुछ किया उसके लिए मैं क्या कहूं और लिखूं। ईश्वर ही उसको समझता है और आपकी अन्य पुण्य-कृतियों के साथ हमारी सम्मान रक्षा और सहायता के लिए भी आपको आशीर्वाद देगा। अधिक क्या लिखूं। बापू का आशीर्वाद होगा तो इस परीक्षा में हम ठीक उतरेंगे। और उनके सामने मुंह दिखाने योग्य रह जायंगे।

आपका,

राजेंद्रप्रसाद

: २०४ :

जबलपुर, २५-४-३५

प्रिय भाई जमनालालजी,

प्रणाम। मैं ता० २२-४ की रात को पटना से चलकर यहां २३-४ को पहुंच गया।

छपरे में खुदीबाबू का दस्तावेज लिखा जा चुका। आपके नाम के दो दस्तावेज भी लिखे गये। पवहारीजी से बातें हो गई हैं। कुछ दिनों के बाद वह भी ठीक हो जायगा। इन सब मामलों के हो जाने से सभी प्रबंध हो गया। केवल पवहारीजी की बाकी है वह भी हो जायगा। मैं एक दिन के लिए जीरादेई गया था। वहां जिरात की जमीन का बंदोबस्त करने का प्रबंध कर आया हूं। आशा है, कुछ होगा। यदि कुछ हो गया तो फिर आपसे सलाह लूंगा।

यह जानकर बहुत संतोष हुआ कि आपका स्वास्थ्य ठीक हो रहा है। मैं तो कल यहां से बरार और उसके बाद कर्नाटक की ओर जा रहा हूं। स्वास्थ्य ठीक मालूम होता है, पर काम बहुत पड़ रहा है और यहांपर बहुत अधिक काम भी पड़ा है; पर आशा है कि इस दौरे को बर्दाश्त कर सकूंगा।

चि० कमलनयन से भेंट हुई। ईश्वर को धन्यवाद है कि उसने उसकी रक्षा की और सब आनंद है।

आपका,

राजेंद्रप्रसाद

: २०५ :

इलाहाबाद, ६-९-३५

प्रिय भाई जमनालालजी,

प्रणाम। मैंने आपको अपने निजी काम के लिए तार दिया था। मालूम हुआ कि अब आपको आने का समय नहीं होगा। मुझे समय की उतनी कमी नहीं थी, पर मेरे लिए आना मुश्किल है।

छपरा इलेक्ट्रिक का मामला अभी तक कुछ तय नहीं हुआ। इस बार

में पटने में बाबू कुलवंतसहाय (भूतपूर्व हाईकोर्ट जज) से, जो बिहार-बैंक के डाइरेक्टर हैं, मिला था और उनसे कहा था कि यह मामला तय करादें। उस दिन पंडितजी पटने में नहीं थे, इसलिए मैं यहां चला आया और मथुरा-बाबू को छोड़ आया। पंडितजी के लौटने पर बाबू कुलवंतसहाय ने उनसे बातें की हैं, और उनका जो प्रस्ताव है, वह लिख रहा हूं।.

(१) बैंक के रुपये का पहला डिबेंचर

(२) सूद ४।। सैकड़ा

(३) मैनेजिंग एजेंसी उनके हाथ में; जिसमें ५००) मासिक मिलने वाला है, उसमें से २५०) मासिक जनार्दन मिल्स के बाकी में बैंक काट लेगा और बाकी २५०) में से खर्च करके जो बचेगा वह हम लोगों को।

(४) हमारे रुपयों का दूसरा डिबेंचर।

जहांतक मैं समझ सका हूं यही उनकी शर्त है; पर जो खत मथुराबाबू ने भेजा है वह भी भेज रहा हूं जिसमें आपको सब हाल पूरा मालूम हो जाय। उसे भी आप कृपाकर पढ़ लेंगे। अब क्या किया जाय समझ में नहीं आता। आपको सब हाल मालूम है ही। आप जैसी राय दें करें। इसी विषय में सलाह करना था। अगर आ सकता तो मैं स्वयं आ जाता। पर स्वास्थ्य के कारण मजबूरी है।

कांग्रेस-संबंधी दो बातें हैं :

(१) जो कांग्रेस का इतिहास छपेगा उसमें पहले खर्च करना पड़ेगा। वह प्रायः ५००० प्रतियों के लिए ५०००) तक पड़ेगा। पीछे पुस्तक बिक जाने पर पैसे वापस आ जायंगे ऐसी आशा है। इसके अतिरिक्त कुछ छोटी-छोटी पुस्तिकाएं भी छपवाने का विचार है। वे लिखी जा रही हैं। इनपर भी खर्च होगा। अगली बैठक में वर्किंग कमेटी से पास कराया जायगा। पर जबतक जो खर्च पड़ेगा वह देना होगा।

(२) पंडित नेकीराम शर्मा का तार आया है, उसे भेज रहा हूं। इस संबंध में क्या करूं ?

(३) चर्खा-संघ की बैठक वर्धा में ११ से १३ अक्तूबर तक रहे और

कार्य-समिति मद्रास में १४, १५, १६ और ए० आई० सी० सी० ता० १७-१८ अक्तूबर को।

(४) स्वराज्य-भवन के संबंध में कुछ निश्चय कर लेना चाहिए कि वह अस्पताल रहेगा या कांग्रेस-भवन। पंडित मोहनलाल की ओर से कुछ उन कमरों की भी मांग है जो अबतक ए० आई० सी० सी० के काम में आते रहे हैं। मैं एक पत्र इस संबंध में लिखूंगा।

आपका,

राजेंद्रप्रसाद

: २०६ :

इलाहाबाद, १६-९-३५

प्रिय भाई जमनालालजी,

प्रणाम। आपका पत्र मिला। यह जानकर कुछ चिंता हुई कि आप भी थक गये हैं। आशा है, अलमोड़े में आराम लेने से आप अच्छे हो गये होंगे।

मेरी तबियत अब ठीक हो गई है। डाक्टर पट्टाभि की पुस्तक देख रहा हूं। बहुत समय और परिश्रम लग रहा है। मैंने समझा था कि आसान काम है, पर ऐसा नहीं दीखता। बहुत काम कर रहा हूं। आशा है कि १०-१२ दिन में समाप्त कर लूं। उसके बाद पटना से होता हुआ वर्धा आना है, और वहां से मद्रास। उधर सिंध और राजपूताने का दौरा बंद कर दिया। पर आराम तो नहीं मिलनेवाला है। आशा है कि दक्षिण में शरीर ठीक रहेगा।

और सब आनंद है।

आपका,

राजेंद्रप्रसाद

: २०७ :

जीरादेई, ३-१०-३५

भाई श्री जमनालालजी,

प्रणाम। मैं यहां कल ही पहुंच गया। यहां आने पर गांव के कुछ लोगों

ने यह खबर दी कि हथुआ में महाराजा ने एक बहुत बड़ा चीनी-कल (शुगर मिल) बनाया था जिसमें प्रायः ३८०० मन प्रति दिन ईख पेरा जाता है। उसमें किंवदंती है कि २२ या २३ लाख महाराजा ने लगाये थे। पर बदइंतजामी के कारण वह उसे वेच देना चाहते हैं। अगर आप लोग इस प्रकार का काम करना चाहते हों तो इसपर विचार कर सकते हैं। मिल सेवान से ५-६ मील पर हथुआ में है। वहां भी रेल है और इस तमाम इलाके में ईख वहुत होता है। यदि कुछ विचार हो तो इस संवंध में श्री रामकृष्णजी डालमिया से हाल मिल सकता है और प्रभुदयालजी हिम्मतसिंहजी को भी जानते हैं, क्योंकि इसकी बिक्री के संवंध में महाराजा हथुआ की ओर से वही वकील थे और उन्होंने ही लिखा-पढ़ी कराई थी। यदि आपका विचार हो तो और सब पता लगाया जा सकता है।

और सब आनंद है।

आपका,

राजेंद्रप्रसाद

: २०८ :

जून, १९३६

प्रिय भाई श्री जमनालालजी,

प्रणाम। मैं ता. २८-६ की संध्या तक वहां पहुंचूंगा। आप जानते हैं कि स्वीजरलेंड के डाक्टर सेरेसोल मुजफ्फरपुर जिले में कुछ उजड़े और डूबे हुए गांवों के लोगों को अलग बसाने में प्रायः दो वर्षों से लगे हैं। उसका खर्च विहार सेंट्रल रिलीफ कमेटी और वायसराय के फंड से दिया जा रहा है। डा. सेरेसोल बापू से मिलने वर्धा जा रहे हैं। वह ता. १४-६ तक वर्धा पहुंचेंगे। वह पहुंचने का समय तार द्वारा या पत्र द्वारा सूचित करेंगे। उन्होंने एक पत्र भी भेजा है जिसमें उन्होंने अपने जाने की सूचना दी है। पर वह पत्र भेजा है, आश्रम के प्रबंधक के नाम से। न मालूम वह किसको मिला होगा। आप कृपया उनके लिए समुचित प्रबंध कर देवें। बापू से मिलकर वह वंबई चले जायंगे और वहां से विलायत। उनको रिलीफ

कमेटी के संबंध में बातें करनी हैं। और मैंने पू. बापू के पास पत्र भी लिख दिया है। आप भी देख लेंगे और राय देंगे। अधिक मिलने पर।

आपका,
राजेंद्रप्रसाद

: २०९ :

पटना, २८-८-३७

प्रिय महाशय,

एक ऐसी संस्था की आवश्यकता बहुत दिन से अनुभव की जा रही है जो अपने देश का प्राचीन काल से अबतक एक प्रामाणिक इतिहास तैयार करे। हमारे देश में बहुत-से विद्वान् हैं, जिन्होंने भारतीय इतिहास के विभिन्न युगों या पहलुओं पर ध्यान दिया है अथवा उनके लिए बड़ी कीमती सामग्री उपस्थित की है। किंतु भारतीय इतिहास की इस चौमुखी खोज का समन्वय करने के लिए कोई संगठित यत्न अभी तक नहीं किया गया। इसलिए हमारा यह प्रस्ताव है कि भारतीय अध्ययन मंदिर नाम से एक संस्था शुरू की जाय, जो सब प्रसिद्ध विद्वानों की सहायता प्राप्त करके संस्था के केंद्रीभूत कुछ आजीवन व्रतियों के विशेष उद्योग द्वारा भारतवर्ष का इतिहास तैयार करने का यत्न करे। इस संबंध में कई प्रसिद्ध विद्वानों से परामर्श किया गया है और उन्होंने इस विचार को पसंद किया है। मैं आपके पास भारतीय अध्ययन मंदिर के प्रस्तावित विधान का मसविदा भेज रहा हूं। कृपया इसपर अपने विचार और सम्मति दीजियेगा। मंदिर के उद्देश्यों की कल्पना व्यापक दृष्टि से की गई है, जिसमें भविष्य में यदि कार्य को बढ़ाने के अवसर प्राप्त हों तो उनसे लाभ उठाया जा सके।

किंतु फिलहाल हम अपना ध्यान पहले उद्देश्य पर ही केंद्रित करेंगे। हर्ष की बात है कि श्रीयुत जयचंद्र विद्यालंकार मंदिर के आजीवन व्रती बनने को तैयार हैं।

मेरी आपसे यह प्रार्थना है कि मंदिर की आरंभिक समिति के सदस्य

होना स्वीकार कीजिये। जल्दी उत्तर देकर अनुगृहीत कीजियेगा।

आपका,

राजेंद्रप्रसाद

उन सज्जनों के नाम जिनसे आरंभिक समिति का सदस्य होने की प्रार्थना की जा रही है —

१. सर यदुनाथ सरकार, दार्जिलिंग, बंगाल
२. श्री गोविंद सखाराम सरदेसाई, पूना
३. डाक्टर हीरानंद शास्त्री, बड़ौदा
४. श्री शिवप्रसाद गुप्त, सेवा उपवन, काशी
५. सेठ जमनालाल बजाज, वर्धा
६. महाराज कुमार डाक्टर रघुवीरसिंह एम. ए., एल. एल. बी., डी. लिट्, सीतामऊ (सी. आई.)
७. श्री राजेंद्रप्रसाद, सदाकत-आश्रम, पटना
८. श्री जयचंद विद्यालंकार, काशी विद्यापीठ, काशी
९. डा. सैयद महमूद, पटना

: २१० :

वर्धा, १३-९-३७

प्रिय श्री राजेंद्रबाबू,

आपका पत्र ता० २८-८ का मुझे समय पर मिला। भारतीय अध्ययन मंदिर के विधान का मसविदा तथा उसके आरंभिक सदस्यों की सूची भी प्राप्त हुई। इस अध्ययन-मंदिर के संबंध में इसके पहले आपसे कोई बात नहीं हुई, इसलिए मैं कह नहीं सकता कि मुझसे किस तरह की सहायता अपेक्षित है और वह मैं कहांतक दे सकता हूं। प्रारंभिक सूची में उल्लिखित विद्वानों के बीच में अपना नाम देखकर मुझे अच्छा नहीं लग रहा है। यह कार्य तो उच्च श्रेणी के विद्वानों के कर्तव्य में आता है। हां, मंदिर के विधान पर सरसरी निगाह दौड़ाने से मुझे मालूम होता है कि ऐसा कार्य अविलंब शुरू कर देना चाहिए। जब आपसे मुलाकात हो तो इस संबंध में अधिक बातों

की जानकारी प्राप्त कर लूंगा और मुझसे अपेक्षित बातों के संबंध में अपनी राय दे सकूंगा।

मंदिर का विधान इससे सरल तथा अधिक व्यावहारिक बनाया जा सकता है। उसका संगठन कई श्रेणियों के साथ संबंधित तथा वैधानिक दृष्टि से अधिक सुरक्षित बनाने की कोशिश की गई है। क्या पहले इस तरह के कार्य के लिए इतने विस्तृत तथा व्यापक विधान की आवश्यकता है ? मैंने विधान की प्रति श्री सत्यनारायण को दी है। आवश्यक हो तो वे भी इस संबंध में आपको लिखेंगे।

जमनालाल बजाज के वंदेमातरम्

: २११ :

जीरादेई, ११-१०-३७

प्रिय भाई श्री जमनालालजी,

प्रणाम। कुछ दिन पहले मैंने आपको पत्र लिखा था, जिसमें यह कहा था कि बिहार में एक अल्यूमीनियम फैक्टरी बन रही है जिसमें भाई निर्मल-कुमार जन और दूसरे लोग हैं। वह लोग मुझपर बहुत जोर दे रहे हैं कि मैं डाइरेक्टर होऊं और चूंकि बिहार में यह एक बड़ा काम होने जा रहा है, मुझे उसमें जरूर शरीक होना चाहिए। मैंने पूछा था कि पू० बापू से पूछकर आप अपनी राय लिखें कि क्या किया जाय। निर्मलबाबू एक अच्छे जमींदार और रईस हैं। आदमी अच्छे और विश्वासी हैं और मुझपर इसलिए बहुत जोर दे रहे हैं कि सूबे में यह काम होने जा रहा है, अत: शरीक होकर उसमें प्रोत्साहन देना चाहिए। इस पत्र का अभी तक उत्तर नहीं आया है। मालूम नहीं आपको मिला या नहीं ? उनका सब कागज तैयार है। रजिस्ट्री कराना चाहते हैं और शीघ्र उत्तर चाहते हैं। कृपया उत्तर देवें।

मैं ता० २०-१० को वर्धा आऊंगा तब भेंट होगी।

आपका,

राजेंद्रप्रसाद

: २१२ :

जीरादेई, ४-१२-३७

प्रिय भाई श्री जमनालालजी,

प्रणाम। आपका पत्र मिला।

महादेवभाई ने तार का जवाब दे दिया था और जैसा आपने लिखा था वैसा ही पू० बापू का भी उत्तर आया। यहां के लोगों ने बहुत जोर लगाया था, इस कारण मैंने आपको और पू० बापू को कष्ट दिया। जिस समय मैंने आपको तार दिया, मुझे यह नहीं मालूम था कि पू० बापू की तबीयत इतनी खराब है, नहीं तो मैं तार नहीं देता। तार देने के बाद पत्रों से पता चला कि वर्धा जाकर बापू इतने अस्वस्थ हो गये हैं। बहुत चिंता होती है। एक दिन पटना में खबर पहुंच गई कि पू० बापू बहुत जोर से बीमार हो गये और बेहोश होगये। मैंने महादेवभाई को तार देकर पूछा तो मालूम हुआ कि बहुत आहिस्ता-आहिस्ता तबीयत सुधर रही है। हरिजन में महादेवभाई के लेख से चिंता कम नहीं होती है।

एक ही बात संतोष की है कि पू० बापू स्वयं तबीयत सुधारने में मदद कर रहे हैं। वह जब-कभी ऐसा करते हैं तब स्वास्थ्य सुधर जाता है।

आप जानते होंगे कि बिहार-असेंबली में किसानों के लगान हटाने-संबंधी बिल पेश है। यह जल्द ही पास हो जायगा तब कुछ लगान अपने यहां भी घटाना होगा। अभी ठीक पता नहीं है कि कितना घटेगा, पर यहां ज्यादा लगान बढ़ाया नहीं गया था, इसलिए बहुत घटने की संभावना नहीं है। तथापि हो सकता है कि जो प्रायः २२००) बरस में देने होते हैं, उनमें से प्रायः २००-३००) घटेगा। खैर जैसा होगा, फिर लिखूंगा।

वर्धा में जो गांधी-सेवा-संघ की कार्यवाहक समिति की बैठक हुई उसकी कार्यवाही मिली। ठीक ही है। यहां उसके अनुसार काम आरंभ कर दिया गया है। पू० बापूजी ने जो लेख हरिजन में ए. आई. सी. सी. के संबंध में लिखा है, उससे जवाहरलालजी बहुत नाराज हैं। कुछ वक्तव्य प्रकाशित कराना चाहते थे, पर मौलाना आजाद के रोक देने से उन्होंने उसे रोक रखा

है। पर एक पत्र सब वर्किंग कमेटी के मेंबरों के पास उन्होंने उस संबंध में भेजा है, जो आपको भी मिला होगा। चूंकि मैं उस बैठक में नहीं था, मेरे लिए कोई राय कायम करना कठिन है, पर अगली बैठक में तो यह बातें पेश होंगी और शायद उसके पहले भी वह उसपर जोर डालेंगे।

कार्य-समिति की बैठक जनवरी के आरंभ में होनेवाली है। वह जवाहर-लालजी इलाहाबाद में ही करना चाहते हैं, क्योंकि वर्धा करने से पू० बापू पर बहुत भार आ जाता है और उनको इस भार से बचाना वह आवश्यक समझते हैं। इसमें मैं भी उनसे सहमत हूं कि पू० बापू को इस समय कुछ आराम देकर स्वास्थ्य सुधारने का मौका देना चाहिए। मौलाना आजाद का पत्र आया है कि बंगाल के मामले के लिए पू० बापू ने उनको वर्धा बुलाया है, शायद शीघ्र ही उनको जाना पड़े। उससे मालूम होता है कि पू० बापू बंगाल के कैदियों की चिंता से व्यग्र हैं और पूरा आराम नहीं ले रहे। यह तो उनकी प्रकृति है। जो हो, जहांतक हो सके आप आराम देने की कृपा करेंगे।

और सब आनंद है।

आपका,

राजेंद्रप्रसाद

: २१३ :

पटना, २९-१०-३८

भाई जमनालालजी,

प्रणाम। आपका २६-१० का पत्र आज ही मिला। देहली से मैं यहां २४-१० की रात को पहुंच गया। यहां मैं ३-४ नवंबर तक रहने का विचार करता हूं, क्योंकि ३ नवंबर को प्रांतीय कार्यकारिणी की बैठक है। इसके बाद जीरादेई जाऊंगा। डाक्टर लोग लंबी मुसाफरी मना करते हैं, इसलिए अभी अनिश्चित है कि मैं क्या करूंगा। अगर कार्य-समिति की बैठक जवाहरलाल-जी के आने पर वर्धा में हुई और अगर मेरा स्वास्थ्य ऐसा रहा कि मैं सफर

कर सकूं तो मैं अवश्य आऊंगा। और तब कुछ दिनों तक इधर ही ठहर जाऊंगा।

बंगाली-बिहारी-रिपोर्ट आपको मिल गई, यह मालूम हुआ। कलकत्ता के 'हिंदुस्तान स्टैंडर्ड' ने उसका सारांश छापा है और एक कड़ी टिप्पणी-वाला लेख लिखा है। रिपोर्ट अभी कार्य-समिति के विचार के पहले प्रकाशित नहीं होनेवाली थी।... उन लोगों को वह रिपोर्ट किसी तरह से कलकत्ता में ही मिल गई होगी।

आपका,
राजेंद्रप्रसाद

: २१४ :

वर्धा, २-११-३८

प्रिय श्री राजेंद्रबाबू,

वर्किंग कमेटी की मीटिंग श्री जवाहरलालजी के आगमन के बाद रखेंगे, जैसा श्री सुभाषबाबू कह रहे थे। हिंदुस्थान स्टैंडर्ड का बंगाली-बिहारी-रिपोर्ट को पाना व उसपर कड़ी आलोचना लिखना, यह असलियत में वाजिब नहीं है। अपने संगठन में कमजोरी आने का यह प्रत्यक्ष प्रमाण है व उसका ही यह नतीजा है। आगे इस विषय में कुछ इंतजाम करना चाहिए।

आपका स्वास्थ्य वहां बराबर न रहे तो फिर आपको यहीं चले आना चाहिए।

जमनालाल बजाज के वंदेमातरम्

: २१५ :

जीरादेई, ४-१२-३८

भाई श्री जमनालालजी,

प्रणाम। मेरी तबीयत खराब रही है। मगर अब तीन-चार दिनों से कुछ सुधर रही है।

किशोरलालभाई के पत्र से मालूम हुआ है कि आपने गांधी-सेवा-संघ के ट्रस्ट से भी इस्तीफा दे दिया है। वर्किंग कमेटी का तो मैं जानता था और कुछ कारण भी समझा था, पर गांधी-सेवा-संघ के ट्रस्ट से अलग होने का कारण मालूम नहीं होता। भेंट होने पर सब बात मालूम होतीं। मगर वह तो इस समय नहीं हो सकता। इसलिए मैं केवल इतना ही लिखना चाहता हूं कि आप ट्रस्ट से न हटें, क्योंकि वह सारी संस्था आपकी ही कायम की हुई और चलाई हुई है और आपका न रहना ठीक नहीं होगा। आशा है, आप इसपर विचार करेंगे। यों तो पू० बापू वहां हैं ही। और उनसे आपकी बात होगी। पर मेरी तुच्छ सम्मति यही है।

आशा है और सब आनंद होगा।

आपका,
राजेंद्रप्रसाद

: २१६ :

देहली, १-२-३९

पू० राजेंद्रबाबू,

मैं २५ को रेल से जयपुर जा रहा हूं। आपके आशीर्वाद का पत्र मिला, सुख हुआ। आपका आशीर्वाद सदैव साथ है ही। मैं खूब उत्साह से जा रहा हूं। परमात्मा की दया से व पू० बापू व आप पूज्य जनों के आशीर्वाद से जयपुर की प्रजा को भी नवजीवन प्राप्त होवेगा व सफलता भी मिलेगी ही।

भाई रामकृष्ण डालमिया मुझे कलकत्ते में मिले थे। मैं कुछ समय पहले असोसियेटेड सीमेंट से व इनकी कंपनी से समझौता कराने का प्रयत्न कर रहा था। मैं तो अब इसमें लग गया हूं। आप खयाल रखेंगे। हमें तो अब जो हिंदुस्तानी उद्योग कायम हो गया है उसे बचाने का खयाल रखना है। डालमिया का ज्यादा उद्योग बिहार में है। इसलिए भी खयाल रखना होगा। उचित व न्याय से समझौता हो जावे तो दोनों का लाभ ह। जनार्दन के बारे में केशवदेवजी से कह दिया है।

जमनालाल बजाज के वंदेमातरम्

: २१७ :

पटना, १४-४-३९

भाई श्री जमनालालजी,

प्रणाम। आपका पत्र मिला था। आशा है, आप अच्छे होंगे। मैं बराबर यहां मजदूर-जांच-कमेटी और शिक्षा-कमेटी, जिन दोनों कमेटियों पर बिहार गवर्नमेंट ने मुझे मेंबर बना रखा है, मैं ऐसा फंसा रहा हूं कि दम मारने की फुर्सत नहीं मिल रही है। दिन-रात कारखानों को देखना और मजदूरों तथा मालिकों की गवाही लेना, हाल सुनना यही काम रहा है; और इसमें परिश्रम बहुत पड़ रहा है। ईश्वर की कृपा से इस समय शरीर ठीक है; पर इतनी मेहनत पर कबतक ठीक रहेगा कहना, कठिन है। ईश्वर जबतक काम ले सकेगा लेगा।

जनार्दन के संबंध में बहुत सोचा। जमशेदपुर गया था। वहां टाटा-कंपनी के कारखानों और मजदूरों को देखा और मालिक तथा मजदूरों का इजहार सुना। प्रायः १५-१६ दिनों तक वहां रहना पड़ा। जनार्दन से बहुत बातें हुईं। सर अरदेशर दलाल भी इजहार देने आये थे। उनसे तथा मि. गांधी जनरल मैनेजर से जनार्दन की बातें हुईं। मैंने किसीसे भी एक शब्द भी कहना उचित नहीं समझा। जनार्दन ने सब बातें कहकर और लिखकर भी दे दीं। यह बता दिया कि लाहौर से उसको ७५०) मासिक और प्रायः ३०००) वार्षिक बोनस का ऑफर है। वह कंपनी नहीं छोड़ना चाहता है, तोभी जब यह ऑफर है और वहां कोई आशा नहीं दीखती है तो उसको जाना ही पड़ेगा। अगर कंपनी उसे १ बरस की छुट्टी दे देवे तो बहुत अच्छा होगा। वह सब जान-सुनकर उन लोगों ने कहा कि वह उसे अगले सितंबर में विलायत भेजेंगे और लौटने पर ६००) मासिक कर देंगे और फाउंड्री का असिस्टेंट सुपरिंटेंडेंट बना देंगे। इधर भी ४५०) से ५००) कर देंगे। आपको शायद याद हो कि आज से प्रायः एक साल या डेढ़ साल पहले उन लोगों ने कहा था कि उसको विलायत भेजेंगे पर वह नहीं हुआ और इस बीच में एक दूसरे आदमी को वहां उन लोगों ने भेज दिया। उसीसे वह

बहुत दु:खी था। उसका जी वहां बिल्कुल नहीं लगता है। अंत में उन लोगों को पत्र लिख देने को कहा है कि वह उसे शीघ्र-से-शीघ्र छोड़ देवें। पहले ही पत्र में उसने लिखा था कि अगर एक बरस की छुट्टी नहीं दे सकें तो उस पत्र को इस्तीफा ही समझें। अब फिर भी साफ करके जल्द-से-जल्द छोड़ देने की बातें लिख देने को कह दिया है। आशा है, इस महीने के अंत में उसको छुट्टी मिल जाय। इधर का नाता अब तोड़ दिया, अब उधर ही जो होगा होगा। ईश्वर मालिक है। आप लोगों की जैसी राय होगी वैसा वह करेगा। श्री केशवदेवजी को भी पत्र लिख दिया है। जमशेदपुर में इत्तफाक से श्री रामजी भाई (जीवनलालजी के भागीदार) भी मौजूद थे। उनसे भी बातें हुईं। उनकी भी राय हुई कि छोड़ देना ही अच्छा होगा।

मैं अभी तो पटने या इसके आसपास रहूंगा। ता० २८-४ को शायद ए. आई. सी. सी. के लिए कलकत्ते जाऊं और ता० ८-५ से गांधी-सेवा-संघ की कार्यवाहक समिति और सम्मेलन होंगे। वहां प्राय: एक सप्ताह लगेगा। आपके संबंध में चिंता रहती है। कब भेंट होगी, पता नहीं।

आशा है, अच्छे होंगे।

आपका,
राजेंद्रप्रसाद

: २१८ :

वर्धा, २९-९-३९

श्री भाई जमनालालजी,

प्रणाम। आपका २४-८ का पत्र मिला। आपने पत्रों में देखा ही होगा कि पू. बापूजी वायसराय से दो बार मिलने गये थे और कल ही संध्या को ग्रांड-ट्रंक एक्सप्रेस से वापस यहां पहुंचे हैं। अब पं. जवाहरलाल और मेरी बुलाहट है। हम लोग ता. ३-१० को दिल्ली में उनसे मिलेंगे और पू. बापूजी भी दिल्ली उस समय रहेंगे। वर्किंग कमटी की बैठक वर्धा में ही होगी। पर अब तीन-चार दिन देर करके करने का विचार है; क्योंकि दिल्ली से ४ या ५ अक्तूबर तक लौटना संभव नहीं है। आपको तो शायद दिल्ली होकर ही लौटना होगा;

तो यहां पहुंचने से पहले दिल्ली में ही आपसे भेंट होने की आशा है।

जयपुर में जो फैसला हुआ, उससे तो मालूम होता है, संतोष होना चाहिए। बधाई। आपके ही परिश्रम और कष्ट का फल है। ईश्वर ने सच्चे अहिंसात्मक आंदोलन को पूरी सफलता दी।

मेरा स्वास्थ्य साधारण है।

आपका,
राजेंद्रप्रसाद

मद्रास

: २१९ :

मछलीपट्टम्, १-११-२५

प्रिय और सम्माननीय सेठजी,

मैं आपको औपचारिक तथा अंतिम रूप में उस विषय में कुछ लिखना चाहता हूं, जिसपर मैंने आपसे पटना में इंजीनियर्स हाउस के अहाते में बातचीत की थी, जहां महात्माजी ठहरे थे। मैंने आपसे 'जन्मभूमि' पत्र को साप्ताहिक रूप में जारी रखने की बाबत सलाह ली थी। मैंने आपको बताया था कि मैं गत ६ वर्ष से उसे कैसे चला रहा हूं, जिसके कारण पहले साल १५००) रुपये का नुकसान हुआ और ५वें वर्ष में ८००) से अधिक की हानि हुई। छठा वर्ष अब समाप्त होने को है। मैंने यह पत्र १ दिसंबर, १९१९ से निकालना प्रारंभ किया था। इसलिए मुझे अगले दिसंबर तक अर्थात् अब से एक ही महीने में यह निश्चय करना है कि मुझे यह पत्र जारी रखना है या नहीं। इस वर्ष इसमें ७००) से कुछ अधिक का घाटा है। इसलिए मुझे इसके बारे में फौरन फैसला करना है। यही कारण है कि मैं आपको यह पत्र लिख रहा हूं।

आपने कृपा करके यह सुझाव दिया था कि हमें यह अखबार दो साल और जारी रखना चाहिए और यह कि इसका १०००) सालाना का घाटा कुछ ऐसे दोस्त उठा लें जिनमें से एक आपने अपनेको बताया था। मेरी कठिनाई यह है कि हम जिन असहयोग सिद्धांतों का उपदेश दे रहे हैं, उनका असर किसीपर नहीं पड़ रहा है। वकील लोग ऐसे आंदोलन को जारी रखने के खिलाफ हैं, जिसको कि वे भूतकाल की चीज बना देना चाहते हैं। धनिक वर्ग इससे दूर भागता है। हरेक इसे नापसंद करता है, खासकर अंग्रेजी शिक्षित वर्ग के लोग। जो जनसमूह इस आंदोलन को पसंद करता है, वह देशी भाषा के पत्रों की सहायता करता है। अंग्रेजी पत्र की मदद के लिए, जो कि कलकत्ते के

सर्वेंट पत्र के अलावा एक ही पत्र है, जोकि महात्मा गांधी के सिद्धांतों का समर्थन करने की कोशिश करता है, हमें आपकी ओर देखना पड़ता है। मैं आंध्र जातीय कला शाला के लिए चंदा जमा कर सकता हूं। इस वर्ष तूफान के कारण जो नुकसान हुआ है, उसकी पूर्त्ति के लिए मैंने ६०००) इकट्ठे किये हैं। परंतु 'जन्मभूमि' के लिए मदद मांगते हुए मुझे संकोच होगा, क्योंकि यह मेरी चीज है। लोग यह नहीं जानते कि पत्र चलना यानी घाटा देना है और जो व्यक्ति अपना पेशा बंद कर चुका हो, वह इसकी पूर्त्ति मुश्किल से कर सकता है। इसके सिवा देश के इस भाग में बेकार देशभक्तों का एक फैशन-सा हो गया कि वे कोई अखबार शुरू करें और उसके नाम पर छोटे-बड़े सबसे मांगना शुरू करें और कुछ समय बाद बंद कर दें। ऐसी अवस्था में मैं फिर आपकी सलाह जानना चाहूंगा और यदि आप पत्र जारी रखने का तय करें, तो मेरा अनुरोध है कि आप कम-से-कम ६ महीने का आनुमानिक नुकसान अर्थात् ५००) कृपा करके अवश्य भेज दें, जिससे कि मैं अखबार को जारी रखने का प्रबंध कर सकूं। अगस्त, सितंबर, अक्तूबर महीने के छपाई-बिल अभी चुकाये नहीं गये हैं। यदि मैं पेपर बंद कर भी दूं तो अन्य महीनों की छपाई आदि के बिल उस हालत में भी चुकाये जाने चाहिए; मैं बड़ी हिचकिचाहट के साथ आप तक पहुंच रहा हूं। परंतु आपने जो दयालुता, अनुकंपा और सबसे बढ़कर मेरे प्रति प्रेम सदा से प्रदर्शित किया है, उससे मुझे प्रोत्साहन मिला है और व्यक्तिगत मामले में बिना हिचकिचाहट लिखने की हिम्मत की है।[1]

आपका,

बी. पट्टाभिसीतारमैया

: २२० :

सालेम, २९-८-२४

प्रिय सेठजी,

आपका २५ ता. का पत्र मिला। २१ ता. का एक कार्ड भी, जिसके द्वारा

---

[1] अंग्रेजी से अनूदित

यह सूचना मिली थी कि १५०० रुपये रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा भेजे गये हैं। कृपया वर्धा के मारवाड़ी-समाज को उसकी सहानुभूतिपूर्ण सहायता के लिए मेरी ओर से धन्यवाद दीजिये। मुझे बीमे का लिफ़ाफ़ा अभी मिला नहीं है। मिलते ही रसीद भेज दूंगा। इस रकम तथा १०००० रुपये, जो बंबई के मित्रों से श्री मथुरादास त्रिकमजी के जरिये मिले हैं, उनका उचित उपयोग किया जायगा। हम तंजोर जिले में ३०० व्यक्तियों को, जिनमें से अधिकांश पंचम वर्ण के (हरिजन) लोग हैं, अपने मकान फिर से बनाने के लिए सहायता दे चुके हैं। इस काम के सिलसिले में इधर-उधर घूमता रहा हूं, इसीलिए मेरे पत्र-व्यवहार में देरी हो गई। इधर रेलवे लाइन टूट जाने के कारण डाक विलंबित हो रही ह।[1]

आपका,
राजगोपालाचारी

: २२१ :

तिरुचेनगोडु, २०-७-२५

प्रिय सेठजी,

आपका १०ता० का कृपा-पत्र ठीक समय पर मिल गया था। मैंने तुरंत जवाब इसलिए नहीं दिया कि मैंने आपके कलकत्ते से लौट आने के बाद लिखने का विचार किया था। मैं अखबारों से यह अनुमान लगाने में असमर्थ हूं कि आखिर आप कलकत्ते गये भी या नहीं।

आपके प्रोत्साहन और सराहना के शब्दों को मैं बहुत मूल्यवान मानता हूं। काम मुश्किल है, खासकर इसलिए भी कि मैं दूसरे लोगों की हार्दिक सहायता के बिना बहुत कम कर सकता हूं, और दिल और दिमाग, तन और मन से काम करनेवाले आदमी पाना बड़ा कठिन है। इससे कभी आदमी निराशा हो जाता है।

जब मैंने ५००० रुपये के अतिरिक्त ट्रांसफर के बारे में लिखा था

---

[1] अंग्रेजी से अनूदित।

तो उससे मेरा मतलब १९२५ के साल से ही था। यह दो किस्तों में भेजा जा सकता है—एक अब और दूसरा अक्तूबर के शुरू में। मुझे आशा है कि अपनी इन मांगों से मैं अन्य शाखाओं को नुकसान नहीं पहुंचा रहा हूं। अगर आप ऐसा समझते हों तो मैं छत डालने का काम स्थगित कर सकता हूं और वर्तमान छप्पर से कुछ समय और काम चला सकता हूं।

आपके पत्र के अंतिम अंश, अर्थात संघ और शाखाओं के भावी कार्य के बारे में तो, मैं व्यक्तिगत रूप में ही यह जान लेने पर कि अन्य शाखाओं में क्या हो रहा है, बातचीत करना पसंद करूंगा। इस समय मुझे सारी बातों की जानकारी नहीं है।

आप कहते हैं कि आप अपनी शाखा से किसीको यहां भेजेंगे। हमें ऐसे मेहमानों को पाकर प्रसन्नता होगी, पर यह आशा न रखें कि वे हमसे कुछ सीखेंगे। श्री विनोबाजी-जैसे सहायक और मार्गदर्शक के होते हुए यहां से वहां ले जाने योग्य कोई बात नहीं मिलेगी। रहा काम, सो उसके लिए वर्तमान मौसम भी उतना ही अनुकूल है जितना कि कोई और।

लक्ष्मी और नरसिंहन के प्रणाम। दोनों अच्छे हैं।

मैं बहुत दिनों से आपसे नहीं मिला। आपने कभी इधर आने का वादा किया था। यह कब संभव होगा? आपका स्वास्थ्य कैसा है?

आश्रम के लिए आपको अपना एक बड़ा फोटो और बापू का अच्छा तैलचित्र भेजने चाहिए, ताकि वे आश्रम में प्रेरणा और भक्ति के केंद्र बन सकें।

क्या आप मुझे निजी खाते में २००० रुपये भेज सकते हैं? मांगते हुए मुझे संकोच होता है और जब भी यह सवाल मन में उठा उसे टालता रहा। मेरे अपने व्यक्तिगत मामलों की अभी मेरी मनचाही व्यवस्था नहीं हो पाई है। मेरे दौरों का खर्च देकर आपने मुझे पहले

ही बिगाड़ दिया है।[1]

आपका,
च० राजगोपालाचारी

: २२२ :

नंदी हिल, ३-६-२७

प्रिय सेठजी,

आपके कृपापत्रों और पूछताछ के लिए धन्यवाद।

बापू ने निर्णय और हमने प्रबंध कर लिया है कि ५ तारीख, रविवार को वह प्रातःकाल नीचे—बंगलौर चले जायंगे। हम और वे वहां यहीं की तरह एक महीना रह लेंगे। किसी सार्वजनिक कार्य में भाग नहीं लेंगे। यहां हवा कुछ ज्यादा चलने लगी है और सर्दी बढ़ गई है और बापू महसूस करते हैं कि बंगलौर बेहतर रहेगा। उनके स्वास्थ्य की औसत हालत अच्छी है।

"कुमार पार्क, हाई ग्राऊंड, बंगलौर" हमारा पता होगा। मैं सोमवार को जाकर जगह देख आया हूं। वह बड़ा स्वास्थ्यकर और शांत स्थान है।

प्रदर्शनी ३ जुलाई को होगी। मेहरबानी करके कम-से-कम एक हफ्ता पहले आइयेगा। राजेंद्रबाबू को भी लिख दीजिये कि वह भी वहां जरूर आयें। आपको साबरमती के टेक्निकल विभाग को भी प्रदर्शनी में हमारी मदद करने के लिए राजी करना पड़ेगा। मैसूर-सरकार और वहां की जनता पर चरखे के बारे में प्रभाव डालने का यह अच्छा मौका है।

मेरे तथा लक्ष्मी के स्नेहाभिनंदन—[1]

आपका,
च० राजगोपालाचारी

---

[1]. अंग्रेजी से अनूदित

: २२३ :

तिरुचेनगोडु, १०-३-२९

प्रिय जमनालालजी,

आपके दिनांक १०-१-२९ के परिपत्र-सी ३/४७ के द्वारा कार्यकारिणी के उस प्रस्ताव की जानकारी प्राप्त हुई, जिसके द्वारा मुझे अस्पृश्यता-निवारण-उप-समिति के सदस्य तथा संयोजक के रूप में नियुक्त किया गया है। इस सम्मान के लिए मैं हार्दिक धन्यवाद देता हूं। मुझे इस बात का बड़ा अफसोस है कि मैं यह पद स्वीकार न कर सकूंगा। वैसे मैं इस काम को पसंद करता हूं और उसके महत्व को समझता हूं, लेकिन मुझपर और काम का बोझ बहुत है। इसलिए मैं महसूस करता हूं कि इस वक्त मैं केंद्रीय उप-समिति में उपयोगी सदस्य साबित नहीं हो सकूंगा। अपने सीमित क्षेत्र के अंदर जो आसानी से कर सकता हूं, मुझे उसीसे संतुष्ट हो जाना चाहिए।

इसलिए कृपया कार्यकारिणी से मेरी ओर से माफी मांगलें और मेरा नाम उप-समिति से हटा दें।

पुनश्च :

मैंने यह पत्र केंद्रीय अस्पृश्यता-निवारण-उप-समिति से त्यागपत्र देने के लिए लिखा है। आपको मुझे माफी देनी होगी।[1]

सधन्यवाद आपका,
च० राजगोपालाचारी

: २२४ :

तिरुचेनगोडु, २-७-२९

प्रिय जमनालालजी,

आशा है आप अच्छी तरह होंगे।

दो संक्षिप्त नाटकों की प्रतिलिपि भेज रहा हूं। इन्हें मैंने नागपुर तिलक-विद्यालय के श्री तिजारे के कहने से लिखकर उनके पास भेजा था।

---

[1]. अंग्रेजी से अनूदित

उन्होंने लिखा था कि उन्होंने कुछ नवयुवकों का एक दल बनाया है, जो जगह-जगह घूमकर गाने और संवाद के द्वारा मनोरंजन करके पैसा जमा करेगा। वह चाहते थे कि मैं रचनात्मक कार्यक्रम के बारे में कुछ दिलचस्प संवाद लिख दूं।

लक्ष्मी अच्छी तरह है। नरसिंहन हमारी खादी की प्राप्ति और बिक्री का इंचार्ज होने के नाते खूब मेहनत कर रहा है। सुब्बया मेरे साथ काम कर रहा है। पहले महीने तो बीमार होने के कारण वह काम नहीं कर सका, पर अब वह संभल गया है।

मेरी तबियत पहले ही जैसी है।[1]

आपका,
च० राजगोपालाचारी

: २२५ :

तिरुचेनगोडु, ९-७-२९

प्रिय जमनालालजी,

आपका २ तारीख का कृपा-पत्र मिला। 'फ्री प्रेस' की खबरों द्वारा मैं आपकी गतिविधियों की जानकारी प्राप्त करता रहा हूं। खयाल है कि इस पत्र के मिलते-मिलते आप मनोरम श्रीनगर छोड़ चुके होंगे और बंबई और वर्धा लौट आये होंगे—बुरे मौसम से आपकी जिद भी बढ़ गई होगी। तथाकथित इरोद मंदिर-प्रवेश-समिति द्वारा प्रसारित और श्री रामनाथन् के हस्ताक्षरोंवाले छपे हुए परिपत्र को मैं देख चुका हूं। मुझे भी उसकी छपी प्रति मिली है। यह कारंवाई न तो मेरी सलाह से और न किसी अन्य ऐसे व्यक्ति की सलाह से, जिसकी परवा मैं करता होऊं, की गई थी। केस स्थानीय पुलिस ने चलाया है।

श्री ई० वी० रामस्वामी नैकर को ही इसकी पूरी जिम्मेदारी लेनी होगी। संबंधित सभी पक्षों को सलाह देने और मार्गदर्शन कराने की

---

[1] अंग्रेजी से अनूदित।

नैतिक जिम्मेदार भी इन्हींकी है। वह ऐसे आदमी नहीं हैं कि अब मेरे जैसे अन्य लोगों से सलाह लें।

इस केस की पैरवी के लिए मेरे पास कोई नहीं आया। उनकी पसंद का एक बैरिस्टर इस केस को लड़ रहा है। पर इस बारे में सबसे महत्व की बात यह है कि यह कार्य ऐसे लोगों के हाथ में है जो कांग्रेस, गांधीजी, हिंदू-जाति और भगवान के विरुद्ध जबरदस्त प्रचार कर रहे हैं। मैं चाहे कितना अस्पृश्यता दूर करना चाहूं, फिर भी ऐसे लोगों से मेल-जोल रखना नहीं चाहता। इन दिशाओं में उनकी जिन गतिविधियों का ऊपर अक्षरिशः सच्चा वर्णन किया गया है, वे हमारे लिए इतनी उग्र तथा तेज हैं कि इस मामले में हम कोई विभेद नहीं कर सकते।

इस मामले की स्थिति यह है। आपने श्री रामनाथन् को जो पत्र लिखा है, उसकी नकल मैंने पढ़ी है। वह ठीक है। मैं भी नहीं समझता कि उन्हें इस मामले में रुपये की जरूरत है।

और सब अच्छी तरह हैं। सुब्बया बीमारी से अच्छा हो गया और काम करने लगा है।[1]

आपका,

च० राजगोपालाचारी

: २२६ :

बंबई, १८-१०-२९

प्रिय राजाजी,

आपका १७ अक्तूबर का तार यथासमय मिल गया था। मैं खुद नहीं चाहता था कि इस अतिरिक्त काम का बोझा आपपर डाला जाय, परंतु यह महसूस करके कि अस्पृश्यता-निवारण-समिति का कोई अध्यक्ष होना चाहिए और उस काम के लिए दूसरा कोई योग्य व्यक्ति न पाकर मुझे आपको ही यह पद स्वीकार करने के लिए लिखना पड़ रहा है। बापूजी भी, हमारी समिति का कोई अध्यक्ष हो, यह जरूरी समझते हैं।

---

[1] अंग्रेजी से अनूदित।

इस बीच मैं किसी और ऐसे व्यक्ति की खोज में रहूंगा जो इस काम में अमली दिलचस्पी ले सके और आप भी ऐसे व्यक्ति की खोज में रहें। पर मैं चाहता हूं कि जबतक हमें दूसरा व्यक्ति न मिल जाय, तबतक के लिए आप इसे जरूर स्वीकार करें लें। हमें वर्धा में इसके बारे में अधिक बातचीत करने का मौका मिलेगा।

इस समय तो मैं खुद इस काम में पूरा समय नहीं दे पा रहा हूं, फिर भी कुछ ठोस काम हो रहा है। मुझे आशा है कि लाहौर-कांग्रेस के समय तक हमें कोई मिल जायगा। तबतक के लिए आप इसे मंजूर कर लीजिये और मुझे अपनी स्वीकृति तार से सूचित कीजिये।

'फ्री प्रेस' के बारे में श्री सदानंद कुछ कठिनाई में पड़े जान पड़ते हैं। कल वह उसका संक्षिप्त ब्यौरा ले आयेंगे तब मैं उसे आपके पास भेज दूंगा। हां, इस (पत्र) को जारी रखने के लिए आप क्या कर सकते हैं, और क्या आप कोई ऐसा आदमी ढूंढ़ सकते हैं जो इसमें दिलचस्पी ले सके? मैं इस महीने के अंत तक यहां हूं और उसके बाद वर्धा चला जाऊंगा।[1]

जमनालाल बजाज के वंदेमातरम्

: २२७ :

वर्धा, २७-१-३०

प्रिय राजाजी,

२५ ता. को बंबई से लौटने पर आपके २० जनवरी के दो पत्र मिले। मैं श्री शांतिकुमार नरोत्तम मोरारजी के काम से बंबई गया था। उनके पिताजी के असामयिक स्वर्गवास, अपने व्यापार-क्षेत्र में फैलाव और कंधों पर कर्ज के भारी बोझ के कारण श्री शांतिकुमार इस समय बड़ी आर्थिक कठिनाई में हैं। मैं उन्हें इस मामले में सभी संभव सहायता और सलाह देने का प्रयत्न कर रहा हूं और भविष्य में भी ऐसा ही करता रहूंगा।

मुझे यह जानकर खुशी हुई है कि आखिर आपने मेरे प्रस्ताव पर

---

१. अंग्रेजी से अनूदित

विचार किया। मैं इस पत्र के साथ १००० रुपये की हुंडी आपके निजी सफर-खर्च आदि के लिए भेज रहा हूं।

इस समय बापूजी बहुत-कुछ दक्षिण अफ्रीका के ढंग पर सविनय-अवज्ञा-आंदोलन शुरू करने की बात गंभीरता के साथ सोच रहे हैं। २४ ता० को वल्लभभाई बंबई आये थे। उनकी सलाह है कि हम लोग कांग्रेस-कार्यकारिणी की मीटिंग से दो-तीन दिन पहले ही से मिलें। मैं ११ या १२ फरवरी को साबरमती पहुंचने की कोशिश करूंगा। मुझे आशा है कि आप बंबई में मुझे मिल लेंगे और हम साथ ही साबरमती चलेंगे।

मैं आपका श्री वरदाचारी के बारे का पत्र घनश्यामदासजी बिड़ला के पास भेज रहा हूं। उनका जवाब आ जाने पर आपको लिखूंगा। कृपया श्री वरदाचारी से कहें कि वह हिंदी बोलने और लिखने की कुछ जानकारी हासिल कर लें जिससे इन्हें उत्तर भारत की किसी भी व्यापारिक पेढ़ी के साथ काम करने में आसानी हो।[1]

जमनालाल बजाज के वंदेमातरम्

: २२८ :

साबरमती, ९-३-३०

प्रिय राजाजी,

आपका ६ ता० का पत्र आज मिला। श्री घनश्यामदासजी बिड़ला यहां आये थे और मैंने उनसे आपके दामाद के बारे में बातचीत की। उन्होंने उनसे व्यक्तिगत रूप में मिलकर उस बात के बारे में मिलने व बातचीत करने की इच्छा प्रकट की। जिस तरह का काम करने के वह अनुकूल होंगे उसके अनुसार या तो उन्हें अपने प्राइवेट सेक्रेटरी का काम देकर जांच करेंगे या वह दिल्ली के हिंदुस्तान टाइम्स में उप-संपादक के पद के लिए उनकी सिफारिश कर देंगे। मैंने उनसे यह भी कहा है कि श्री वरदाचारी को इस समय किसी भी तरह २५० रुपये से ३०० रुपये मासिक की जरूरत होगी।

---

[1]. अंग्रेजी से अनूदित

श्री घनश्यामदासजी बिड़ला मार्च के चौथे सप्ताह में बंबई पहुंचने-वाले हैं। मैं भी उस समय वहां पहुंचना चाहता हूं, बशर्ते कि मैं उसके पहले ही गिरफ्तार न कर लिया गया। अगर श्री वरदाचारी उस समय आसानी से बंबई आ जायं तो ठीक रहेगा। यदि मुझे समय रहा तो मैं खुद उनका परिचय घनश्यामदासजी बिड़ला से करा दूंगा, नहीं तो वह खुद जाकर मिल लेंगे। मैं समझता हूं कि अ. भा. कांग्रेस कमेटी की मीटिंग में आते समय आप उन्हें अपने साथ लायें तो अच्छा रहेगा। इससे मुझे भी उनसे बातचीत करने का मौका मिल जायगा।

किसी भी महत्वपूर्ण खबर को आपके पास भेजे जाने के बारे में मैं महादेवभाई से बातचीत करूंगा। लेकिन ज्यादातर चूंकि आप अक्सर दौरे पर रहते हैं, इसलिए लगता है कि आपको अधिकांशतः अखबारों पर ही निर्भर रहना पड़ेगा।

आपके बारे में तामिलनाड कांग्रेस-कमेटी का निर्णय अच्छा ही है। मैं शायद खुद बंबई में ही अपनी गति-विधियां केंद्रित करूं।

वल्लभभाई की गिरफ्तारी कुछ मायनों में अच्छी ही रही। उसने हमें अपनी वास्तविक स्थिति दिखा दी है और इससे हमें अपने आंदोलन की शक्ति मापने में मदद मिलेगी। अब हम सिर्फ बापू की गिरफ्तारी की राह देख रहे हैं। उसके बाद हम अपनी कार्य-पद्धति का फैसला करेंगे।

दक्षिण में हिंदी-प्रचार-कार्य के बारे में श्री हरिहर शर्मा आपको बहुत जल्द लिखेंगे।[1]

जमनालाल बजाज के वंदेमातरम्

: २२९ :

सेंट्रल जेल, बिलारी, २-१०-३०

श्री सेठ जमनालाल बजाज,
सेंट्रल जेल, नासिक रोड,

प्रिय सेठजी,

जब लक्ष्मी ने मुझे आपकी कृपाओं के बारे में लिखा तो मैं गद्‌गद् हो

[1]. अंग्रेजी से अनूदित

गया। मैं इसी १० तारीख को यहां से छूटूंगा। मेरा कार्यक्रम वाहर जाने के बाद ही निश्चित होगा। मुझे विश्वास है कि आपका स्वास्थ्य अव बिल्कुल ठीक होगा। मैं वहुत अच्छी तरह हूं।

चूंकि मेरे साथ यहां बहुत-से सत्याग्रही कैदी—कोई ३०० नवयुवक—थे, इसलिए मेरा समय उनके साथ अच्छी तरह गुजरा।[1]

आपका,
राजा

: २३० :

मद्रास, २-११-३०

प्रिय जमनालालजी,

प्रणाम और प्यार। श्री एम. पी. नारायण मेनन मेरे एक वकील दोस्त हैं, जो कि मेरी राय में और अन्य दोस्तों की राय में भी, जिसमें कि श्री सी० एफ० ऐंड्रूज भी शामिल हैं, मोपिल्ला विद्रोह-केस में अन्यायपूर्वक फांस लिये गये थे और १९२१ ई० से ही आजीवन जेल की सजा भोग रहे हैं। अबतक उनके एक मित्र उनके परिवारवालों की मदद करते रहे हैं लेकिन अब वह भी जेल चले गये हैं, इसलिए उस कुटुंववाले कठिनाई में पड़ गये हैं। मैं जानना चाहता हूं कि क्या आपके वकील-कोष में अब भी कुछ रुपया बाकी है ? और क्या आप जहां हैं, वहीं से उसे दिलाने का बंदोबस्त करा सकते हैं ?[2] अगर ऐसी कोई रकम है, तो मैं चाहूंगा कि आप उनकी मदद करें। वह वड़े ही सज्जन व्यक्ति और इसके पात्र हैं। अगले अठारह महीनों

---

[1] अंग्रेजी से अनूदित

[2] इस बारे में १३-११-३० को . . . . . जेल से जमनालालजी ने अपने दफ्तर को निम्न सूचना भेजी—

"अगर वकील-फंड में कुछ रकम हो तो उसमें से नहीं तो सहायता खाते में से पू० राजाजी के लिखे अनुसार श्री मेनन को ५०) मासिक १-१२-३० से ३०-११-३१ तक एक वर्ष के लिए भेजा जाय। बाद में फिर विचार किया जायगा।

की रकम पचास रुपया भी भेजने की व्यवस्था कर दी जाय तो अच्छा होगा। यह रकम उनको मार्फ़त सुपरिंटेंडेंट, पेनीटेंशियरी, मद्रास के पते पर भेजी जा सकती है।

मैं अच्छी तरह हूं। मुझे आशा है कि आप भी अच्छे होंगे और छाती की तकलीफ भी अब नहीं रही होगी। इस बार मेरी सजा २५-१०-३० से एक साल सादी कैद की है। मैं यहां नहीं रखा जाऊंगा बल्कि शीघ्र ही किसी और जेल में भेज दिया जाऊंगा। अपनी प्रार्थनाओं में मुझे याद कर लिया करें। मुझे आशा है कि बापू भगवान की कृपा से स्वस्थ होंगे।[1]

आपका,
राजा

: २३१ :

तिरुचेनगोडू, १३-१-३६

प्रिय जमनालालजी,

आपके कृपा-पत्र के लिए धन्यवाद। आपके भतीजे की शादी की खबर मिली। वर-वधू के लिए मेरी शुभाकांक्षा।

मदनापल्ली का जलवायु अच्छा है और दक्षिण के और मैदानों की अपेक्षा यह ठंडा है। गर्मी थोड़े दिनों तक रहती है और तब वहां छुट्टियां रहती हैं। हवा खुश्क और अच्छी है, लेकिन होस्टल में खाना निश्चय ही खराब मिलता है। मेस शुद्ध शाकाहारी है। अगर आप यहां जमें और उमा को अच्छा खाना देने के लिए रसोइया रखलों तो यह जगह माफिक रहेगी। दूसरी भाषा की पढ़ाई की दृष्टि से शिक्षा अनुकूल नहीं होगी। पढ़ाई तो अन्य स्कूलों की ही भांति है। मैं नहीं समझता कि अगर कोई विद्यालय की पढ़ाई से संतुष्ट नहीं है तो उसे मदनापल्ली का स्कूल पसंद आयेगा। मेरी तो यही राय ह। बापू के स्वास्थ्य के बारे में अच्छा समाचार पढ़कर खुशी हुई। देवदास लिखता है कि वह बंबई में रुकेगा, इसलिए मैं लक्ष्मी को इस सप्ताह वहां भेज रहा हूं।[2]

आपका,
च० राजगोपालाचारी

---

[1]–[2] अंग्रेजी से अनूदित

: २३२ :

तिरुचेनगोडू, २६-११-३६

प्रिय सेठजी,

मैं आपको बंबई में २ दिसबर या उसके पहले ही मिल लूंगा। अभी मैं एल्लोर (आंध्र) जा रहा हूं। वहां प्रांतीय परिषद् की खादी-प्रदर्शिनी का उद्घाटन २८ को करना मैंने स्वीकार कर लिया है। वहां से मैं बंबई आऊंगा। कृपया आप मुझे परिषद के मार्फत एल्लोर तार भेजिये कि आप और बापू बंबई से वर्धा के लिए कब रवाना होंगे, जिससे मैं अपनी रवानगी का कार्यक्रम उसके मुताबिक जमा लूं।

मैं ११ दिसंबर के बाद वर्धा नहीं ठहर सकता। मैंने निश्चित रूप में फैसला कर लिया है कि मैं गोहाटी नहीं जाऊंगा। कांग्रेस में जो कुछ करना है, उसे बापू को ही करना चाहिए किसी दूसरे को नहीं। मेरा विश्वास है कि हम जो चाहते हैं वह बिल्कुल संभव नहीं है।

चूंकि मुझे वर्धा से ११ तक यहां लौट ही आना है, इसलिए अगर आप चाहें कि सर्व-सेवा-संघ के बाबत अन्य मित्र बातचीत करने में भी शामिल हों तो वे इस समय के अंदर वर्धा आने के लिए राजी कर लिये जायं। अगर यह बापू और हम दोनों के बीच की ही बात हो, तो अन्य लोगों को कष्ट देने की जरूरत नहीं है।

छोटेलालजी यहां हैं। पर मुझे तो उन्हें यहां छोड़कर बाहर चले जाना होगा। मैं इस कोशिश में हूं कि वह भी मेरे साथ चलें।

शेष मिलने पर।[1]

आपका,
राजा

: २३३ :

मद्रास, २२-२-३७

प्रिय जमनालालजी,

असहाय लड़की नीला के प्रति आपने जो दयालुता दिखाई है, उसके

---

[1]अंग्रेजी से अनूदित

लिए मैं बहुत कृतज्ञ हूं। मुझे विश्वास है कि वह इस सबके योग्य साबित होगी। मुझे खुशी है कि बापू ने उसे दर्शन देकर आशीर्वाद देने का समय निकाल लिया।[1]

आपका,

च० राजगोपालाचारी

: २३४ :

मद्रास, १४-४-३७

जमनालाल बजाज,

वर्धा।

मेरे लड़के कृष्णस्वामी के घर के बिल्कुल पास एक मकान ९५०० म बिकाऊ ह। मजबूत बना और हमारी जरूरत के अनुकूल है। तात्कालिक उद्देश्य के लिए भी सुविधाजनक है।[2]

राजगोपालाचारी

: २३५ :

श्री राजगोपालाचारी,

कांग्रेस, मद्रास,

तार मिला। मकान खरीद लीजिये। आशा है दस्तावेज स्पष्ट होगा और जायदाद बिकने योग्य होगी। मरम्मत और खर्च आदि मिलाकर दस हजार से अधिक नहीं होनी चाहिए।[3]

जमनालाल

: २३६ :

मद्रास, ३-५-३७

प्रिय सेठजी,

मैंने घर का कब्जा ले लिया है। उसका दस्तावेज भी मुझे दे दिया गया है। मैं बेचनामा तमस्सुक पर तैयार कर रहा हूं और तैयार होते ही रजिस्ट्री करा लूंगा। मेरा खयाल है कि मैं आपके पिता का नाम रामधनदास

---

[1] अंग्रेजी से अनूदित [2]–[3] अंग्रेजी तार का अनुवाद

बच्छराज लिख सकता हूं।

आपने लिखे मुताबिक कृपया १०,००० रुपये का चैक भिजवा दीजिये। बिक्री की रकम ९,५०० रुपये होगी और मैं स्टाम्प का तथा अन्य खर्च अदा कर दूंगा और जगह को ठीक करने आदि का खर्च भी इसीमें से करके उसका हिसाब आपको भेज दूंगा। पानी और बिजली का इंतजाम पूरा है, पर उसके अहाते की दीवार का बढ़ाना जरूरी होगा।[1]

आपका,
च० राजगोपालाचारी

: २३७ :

मद्रास, १७-६-३७

प्रिय जमनालालजी,

आपका १५ जून का पत्र मिला। मैंने 'जस्टिस' के विरुद्ध कोई दावा दायर नहीं किया है। मैंने केवल एक लेख द्वारा उन्हें जवाब दिया था इसके बारे में न तो कोई केस था और न माफी मांगी गई। मेरा मुकदमा तो एक दूसरे पत्र के संपादक के विरुद्ध एक और ही मामले में था, जिसका तिलक-स्वराज्य फंड से कोई वास्ता नहीं। उसने उसमें माफी मांग ली। मैंने आपके वकील को यह समझा दिया। मैं १ जून १९३७ को 'जस्टिस' का अंक अलग भेजूंगा। यह कोई महत्वपूर्ण पत्र नहीं है। कांग्रेस के प्रति इसका विरोध मशहूर है। दूसरे विवादग्रस्त विषयों में सच्चाई से इसका कोई वास्ता नहीं।

मुझे आशा है कि इन सारे मामलों के बावजूद भी आप स्वस्थ हैं।[2]

आपका,
च० राजगोपालाचारी

[1-2] अंग्रेजी से अनूदित

: २३८ :

त्यागराजनगर, १५-७-३७

जमनालाल बजाज,

वर्धा।

कृपया बापू का आशीर्वाद एक्सप्रेस तार के द्वारा प्रीमियर सिनेट हाउस, मद्रास के पते से भेजिये। महादेव को तार दिया है। आज दोपहर को असेंबली की बैठक समाप्त होने के पहले उसको पढ़ देना चाहता हूं।[1]

राजगोपालाचारी

: २३९ :

मद्रास, १७-९-३८

प्रिय जमनालालजी,

यहां से दिल्ली जाते हुए हम २० तारीख को वर्धा होकर गुजर रहे हैं। आप शायद इससे पहले ही चल चुके होंगे। लेकिन आप अपने आदमियों को सूचित कर दें कि वे हमें स्टेशन पर मिल लें। मैं इसलिए लिख रहा हूं कि कहीं आपके आदमी यह शिकायत न करें कि मैंने कोई सूचना नहीं दी। मुझे किसी खास चीज की जरूरत नहीं है।[2]

आपका,

च० राजगोपालाचारी

: २४० :

मद्रास, २५-४-४०

प्रिय जमनालालजी,

आपकी उदयपुर-यात्रा के बारे में मैंने श्री टी. विजयराघवाचार्य से, जो यहीं पर हैं, लंबी बातचीत की।

यदि आप केवल सद्भावना-यात्रा पर वहां जायं तो आपका स्वागत होगा। पर उसे एकदम व्यक्तिगत यात्रा बनाये रखना असंभव नहीं तो

[1-2] अंग्रेजी से अनूदित

कठिन अवश्य हो जायगा। आप ऐसा करना भी चाहें तो भी वहां के प्रजा-मंडल के लोग आपसे कोई-न-कोई काम कराने की कोशिश करेंगे और आपकी यात्रा राजनीतिक रंग अवश्य पकड़ लेगी। इसलिए यह जरूरी है कि यह देखा जाय कि आपका वहां जाना अभी ठीक रहेगा या कुछ समय बाद।

महाराणासाहब धीरे-धीरे अब अपने पुराने सलाहकारों के सुझाये दृष्टिकोण के अलावा कुछ देखने लगे हैं। यह सुझाया गया है और मैं भी इससे सहमत हूं कि महाराणासाहब की शिक्षा के लिए हमें कुछ और समय देना चाहिए। अगर आप अपनी यात्रा अगले दिसंबर तक के लिए स्थगित कर दें तो उस समय तक महाराणा आपके दृष्टिकोण से सहमत होने की स्थिति में अधिक होंगे। यह तो आप भी मानेंगे कि इस समय जो मानसिक परिवर्तन हो रहा है उसको छेड़ने में प्रतिक्रिया उत्पन्न होने का डर रहेगा।

आपने दीवान को जो पत्र लिखा है, उसके उत्तर की आशा न करें, क्योंकि मैंने उनसे कह दिया है कि मैं आपको सारी बात समझा दूंगा।[1]

आपका,
च० राजगोपालाचारी

: २४१ :

मद्रास, १-१-३६

प्रिय जमनालालजी,

हमारे नौजवानों को अपने देश की हिम्मत, निःस्वार्थ भाव और शांत-चित्त के साथ सेवा करने का उदाहरण आपसे बढ़कर दूसरा नहीं मिल सकता।

विजयराघवाचार्य

---

[1]अंग्रेजी से अनूदित

: २४२ :

वर्धा, १३-१-३०

प्रिय श्री संतानम्,

२० दिसंबर को वर्धा में हुई गांधी-सेवा-संघ के ट्रस्टियों के बोर्ड की मीटिंग की कार्यवाई मिली।

मुझे आशा है कि आपने 'सस्ता साहित्य मंडल', अजमेर, के हरिभाऊजी उपाध्याय को ६,०००) भेज दिये होंगे।

बिड़ला-कोष से महात्माजी द्वारा मिले हुए रु० ७,८००) मात्र कृपया अलग रखें और उन्हें १ जनवरी, १९३० से २००) रु० मासिक के हिसाब से श्री शंकर त्र्यंबक धर्माधिकारी, अध्यक्ष, तिलक राष्ट्रीय विद्यालय को श्री कृष्णदास जाजू, संचालक, गांधी-सेवा-संघ, म. प्र. शाखा के मार्फत भेजने का प्रबंध कर दें। मैं इसके साथ दो पत्र भेज रहा हूं—एक तो तिलक विद्यालय की ओर से महात्मा गांधी को लिखा हुआ है और दूसरा उसका अंग्रेजी सारांश, जो महात्माजी ने मेरे पास भेजा है।

भारत सेवा प्रिंटिंग प्रेस, वर्धा, का एक बिल, जो आल इंडिया टेम्परेंस कांग्रेस के अध्यक्षीय भाषण की छपाई का है, वह भी इस पत्र के साथ भेज रहा हूं। इस बिल की रकम मैंने चुका दी है। कृपया यह बिल श्री राजगोपालाचारी को दे दें, जिससे कि वह इसकी रकम हमें चुका सकें।[1]

जमनालाल बजाज के वंदेमातरम्

---

[1]अंग्रेजी से अनूदित

मध्य प्रदेश

२४३ :

यवतमाल, १-१-३७

श्रीमान जमनालालजी बजाज,

सप्रेम प्रणाम। आपसे मैं फैजपुर में मिला था। तब यवतमाल के हालात के संबंध में कुछ थोड़ी-बहुत बातचीत हुई थी। आज पत्र लिखने का प्रयोजन यह है कि कांग्रेस की तरफ से मेरे मित्र पी. एम. कोल्हे वन-केलापुर के लिए उम्मीदवार चुने गये हैं। उनके प्रतिस्पर्धी नरसिम्मा नामक धनी नवयुवक है। वह अनपढ़ नहीं, लेकिन अंग्रेजी नहीं जानता और अभी तक किसी सार्वजनिक कार्य से उसका संबंध नहीं आया। ब्राह्मणेतर पक्ष की ओर से वह खड़ा है। वन में मतदारों से मिलने के लिए वह कोशिश कर रहा है। वहां जमनादास नरसी फैक्टरी के मैनेजर श्री हरदासभाई का व्यापारी लोगों में काफी असर है। आपसे प्रार्थना है कि उनको एक चिट्ठी लिखकर कोल्हे साहब को सब तरह की मदद करने के लिए अवश्य संदेश भेज दें। उस चिटठी की एक नकल मुझे यवतमाल भेज देंगे तो और अच्छा होगा।

यहां की स्थिति कांग्रेस उम्मीदवार के लिए ठीक है। परंतु भाई ताराचंद और कुछ मारवाड़ी भाई कांग्रेस उम्मीदवार का विरोध करने की कोशिश कर रहे हैं। जरूरत हुई तो इसके विषय में भी आपको कष्ट देना पड़ेगा।

पूज्य बापू को साष्टांग नमस्कार कहियेगा।

आपका प्रेमांकित मित्र,
माधव श्रीहरि अणे

: २४४ :

नागपुर

जमनालाल बजाज,
वर्धा।

शनिवार की मेल से मैं खुद वर्धा आ रहा हूं। आप बरहानपुर नहीं जा सकते। मेरी लड़ाई सख्त है।[1]

अभ्यंकर

: २४५ :

होशंगाबाद, २७-६-४१

श्री मान्यवरं पूजनीय बजाजजी साहेब,

वंदेमातरम। मैं यहां सकुशल हूं। आपकी कुशलता ईश्वर से चाहता हूं। आपको परमात्मा सदा आनंद में रखें। मुझे जेल से छूटे आज २७ दिन हो गये हैं। काम पूरा बाहर का तो नहीं हो पाया मगर बाहर ज्यादा दिन रहने में हृदय कांपता है। ऐसा मालूम होने लगा है कि मैं भूल-सा रहा हूं। जो भतीजी की शादी-सगाई करनी थी वह न हो सकी। लड़का नहीं मिला। लोकल-बोर्ड है, इसका मैं चैयरमैन हूं। इसके कई सदस्य स्वार्थ व बहुमत करके नंगा नाच-सा कर रहे हैं जिसको देखकर भले आदमी को शर्म आती है। ईश्वर-कृपा से महात्माजी का आर्डर ऐन मौके पर आ गया कि सत्याग्रही दो जगह काम नहीं कर सकता। जो मैं चाहता था वही हो गया। अब मैं इससे इस्तीफा देकर अलग होता हूं। आपके दर्शनों की दिल में लगी है। आप बाहर आ गये हैं। तवियत कसी है? लिखने की कृपा करें। फिर मैं विचार करूं कि मिलकर जेल जाऊं या बिना मिले ही चला जाऊं। सिर्फ दिल को मजबूत करना पड़ेगा।

जब प्रेम हो जाता है, भूल नहीं सकते हैं। आपकी विचार-शैली और मिलन की सरलता अद्भुत है, जिसके लिए जी चाहता ही रहता है। मेल-

---

[1] अंग्रेजी तार का अनुवाद

मिलाप अचल-सा हो गया है। आप स्वयं अपने अनुभव से समझ लेंगे, ज्यादा क्या लिखूं ?

श्री कमलनयनजी से मुलाकात नहीं है, पर वंदेमातरम् पहुंचे—इसी तरह छोटों को प्यार, बड़ों को प्रणाम पहुंचे। श्री रामकृष्णजी अभी जेल में ही होंगे, आप उनको वंदेमातरम् पहुंचा देवेंगे। बाकी सब खैरियत है।

आपका शुभचिंतक,
अर्जुनसिंह (लाला)

: २४६ :

बैतूल, ७-१-३६

पूज्य जमनालालजी,

इस जिले की दोनों प्रांतीय असेंबली की सीटों के कांग्रेस उम्मीदवारों के विरोध में दो-दो उम्मीदवार खड़े हुए हैं। सरकार और कुछ धनिक लोग कांग्रेस के विरुद्ध अपनी पूरी शक्ति लगा रहे हैं। इसलिए परिस्थिति बहुत कठिन हो गई है। यहां अच्छे कार्यकर्ताओं की कुछ कमी भी है। आचार्य धर्माधिकारी इस जिले के निवासी होने के कारण जिले से भलीभांति परिचित हैं और वह अच्छे वक्ता भी हैं। इसलिए आपसे प्रार्थना है कि उन्हें कम-से-कम एक सप्ताह के लिए इसी जनवरी मास में और इसी जिले में कार्य करने के लिए अवश्य भेज दीजिए। मैंने एक पत्र इस विषय में पूज्य काकासाहब कालेलकर को भी लिखा है। कष्ट के लिए क्षमा कीजिये।

आपका,
दीपचंद गोठी

: २४७ :

खंडवा, १६-१-३१

मान्य भाई जमनालालजी,

वंदे। इधर मैं बहुत दिनों से पत्र न लिख सका। कारण यह था कि मैं

८ अक्तूबर को बीमार होगया। श्री बालुंजकरजी जब खंडवा आये थे तब उन्होंने मुझे बिस्तरे पर ही देखा था। यहां के सिविल सर्जन मेरा इलाज करते हैं। मेरी आंतों में सूजन आगई है। भय यह था कि शायद पेट पर शस्त्र-क्रिया करने का अवसर आवे। परंतु वह कुछ न हुआ और अब मेरा स्वास्थ्य सुधरने की दिशा में लग गया है। यों तो २७ सितंबर के पश्चात् मेरा घूमना फिरना बंद हो गया था। अब आराम होता जाता है और शायद पंद्रह दिनों में मैं घूमने-फिरने लायक हो जाऊं। इस व्याधि के कारण मैं बहुत संकट में रहा। मेरे पास जो ७५ रुपये मासिक आता है, उसकी अवधि इसी दिसंबर तक थी, मेरा निवेदन है कि यदि आप उचित समझें, तो उसे जारी रखें, उसकी अवधि बढ़ा दें।

आप बीमार होकर वर्धा का पुण्योद्योग छोड़कर चले गये। कृपया कहिये, क्या बीमारी है ? मेरी इच्छा बंबई आने की हो रही है। जरा परिवर्तन भी चाहता हूं। परंतु मुझसे बंबई की इमारतों की सीढ़ियां न चढ़ी जायंगी। मैं वर्धा जाने की बात सोचता हूं, परंतु वहां आप न होंगे। कृपया लिखिये कि आप वर्धा कब जा रहे हैं। झांसी में हिंदी साहित्य सम्मेलन के समय दिसंबर की छुट्टियों में मध्यभारत देशी राज्य प्रजा-परिषद भी हो रही है। वहां के लोगों ने मुझे सभापतित्त्व के लिए तार दिया है। उत्तर आपकी स्वीकृति आने पर दूंगा। वहीं से कानपुर होता आऊंगा।

आशा है कि आप प्रसन्न होंगे। शीघ्र ही आपसे भी मिलना चाहता हूं।

आपका अपना,

माखनलाल चतुर्वेदी

: २४८ :

जबलपुर, १९-१२-३६

श्रद्धेय भाई जमनालालजी,

मैं जबलपुर शहर की स्त्रियों की सीट के लिए कांग्रेस की ओर से खड़ी होना चाहती हूं। परंतु मेरे मार्ग में बाधाएं आ रही हैं। इस संबंध में मैंने एक पत्र सरदार वल्लभभाई पटेल के पास भेजा है। उसकी प्रतिलिपि इस

पत्र के साथ आपको भी भेज रही हूं। आप मुझे और मेरी सेवाओं को अच्छी तरह जानते हैं। इसलिए आपसे मेरी प्रार्थना है कि आप आल इंडिया पार्लियामेंटरी बोर्ड से मेरे साथ न्याय करवाइये।

भवदीया,

सुभद्राकुमारी चौहान

: २४९ :

भंडारा, १७-१-४१

प्रिय पूज्य जमनालालजी,

सेवा में सादर नमस्कार। आपका ता. १४ का पत्र मिला। सभी कुछ अनपेक्षित होगया। हमारे परम पूज्य पिता श्री काकासाहेब का स्वास्थ्य बहुत ही अच्छा था, लेकिन अचानक केवल ६-७ दिन के डायबेटिस की बीमारी से उनका अंत होगया। इसके पहले उन्हें डायबेटिस की बीमारी कभी भी नहीं थी। मृत्यु के १० दिन पहले पैर की मालिश करते हुए नाखून लग गया और उसका छोटा-सा फोड़ा बन गया। वह छोटी-सी फुन्सी उनकी मृत्यु का कारण बनेगी, यह हमारे किसीके मन में भी नहीं आया था। फोड़ा बड़ी तेजी से बढ़ता गया। इसलिए तुरंत उन्हें नागपुर के डा. रंगीलाल के इलाज में रखा गया। सारे पैर में पीर हो गया, इसलिए वह बेहद बेचैन थे। अंतिम उपाय समझकर फोड़े को ओपन किया। उसका जरा भी फायदा नहीं हुआ।

आपका और स्व. काकासाहेब का गत एक साल में काफी अच्छा प्रेमल संबंध स्थापित हुआ। उनकी ए. आई. सी. सी. की सभा में जाने की बहुत इच्छा थी, परंतु उनकी आकस्मिक मृत्यु की वजह से वह साध्य न हो सकी। खैर, ईश्वर की मर्जी।

अब आप ही हमारे लिए उनके स्थान पर हैं। और स्व. काकासाहेब की वजह से जुड़ा हुआ आपका और हमारा संबंध इसी तरह कायम रहे, ऐसी हमारी बहुत इच्छा है।[1]

आपके,

ज. वि. जकातदार

सौ. प्रभावती जकातदार

---

[1] मरा ी से अनूदित

: २५० :

नागपुर, १६-६-२३

श्रीयुत मथुरादासभाई,[1]

सप्रेम वंदे। सत्याग्रह-संग्राम यहांपर जोर-शोर से, पर शांतिपूर्वक चल रहा है। सरकार भी अब कड़ी दमन-नीति का सहारा ले रही है। सिवनी के कार्यकर्त्ताओं को सत्याग्रह-संग्राम म भरती होने के लिए व्याख्यान देने के आरोपों में तीन सज्जनों को एक-एक साल की सख्त कैद और एक को ६ मास की सख्त कैद की सजा हुई। जोरों की अफवाह है कि हम लोग भी शीघ्र ही, संभवतः इस १८ तारीख तक, गिरफ्तार कर लिये जायं। परंतु सत्याग्रह-संग्राम अब दब नहीं सकता। स्वयंसेवकों की काफी संख्या अभी मौजूद है।

वर्किंग कमेटी के प्रस्ताव के अनुसार श्रीयुत मगनलालभाई की सलाह से मेरी गैर-हाजिरी में तुम कार्य करते रहना। जो रकम महात्माजी की गैर-हाजिरी में मेरी इच्छानुकूल खद्दर-कार्य में लगाने के लिए दाताओं ने दी है, उसे आप और मगनलालभाई दोनों की एक राय से खद्दर-कार्य में लगाने के लिए मेरी ओर से आपको अधिकार रहेगा। परंतु अच्छा यह होगा कि बालुभाई की मार्फत दाताओं की लिखी राय ले ली जाय ताकि भविष्य में किसी तरह की कोई गैर-समझ न हो। हिसाब बराबर रखा जाय। बाकी किसी भी टैक्निकल अथवा अन्य संशयजनक प्रश्न पर आप श्री जवाहरलालजी से सम्मति ले लिया करें। वह कल यहां आनेवाले हैं सो मैं उन्हें कह दूंगा, जिससे खद्दर-कार्य में कोई हर्ज न पहुंचे।

भवदीय,

जमनालाल बजाज

: २५१ :

वर्धा, १-१-३५

डा. जगन्नाथ महोदय से जमनालालजी की नीचे लिखी बात हुई और दवाखाना खोलने का निश्चय हुआ है, अतः उसके अनुसार व्यवस्था करना।

---

[1]. मथुरादास त्रिकमजी

१. दवाखाने का नाम "पीपल्स मैडिकल हाल" रखा जाय।

२. दवाखाने के लिए जो रकम लगेगी, वह दूकान से उठाई जायगी।

३. डाक्टर जगन्नाथ महोदय दवाखाने से सिर्फ एक सौ रुपये मासिक उठावेंगे, जिसमें से ७५ रुपये मासिक तो वह, दूकान में उनका गहण (गिरवी) ह, उस खाते में जमा करावेंगे। बाकी रुपये पच्चीस रहेंगे। उसमें यह अपना निजी खर्च चलावेंगे।

४. डाक्टर जगन्नाथ को जितनी भी विजिट फीस मिलेगी, वह तथा दवाई के विलों की जो रकम आवेगी,वह सारी दवाखाने में जमा की जायगी।

५. वर्ष के अंत में दवाखाने की आमदनी-खर्च का हिसाब जोड़कर जो रकम ज्यादा रहेगी, वह रकम डाक्टर के खाते में जमा की जायगी। अगर किसी कारण से आमदनी से खर्च ज्यादा रहा, तो जो कमी रहेगी, वह किसी अन्य खातें से पूरी की जायगी।

६. यह करारनामा एक साल के लिए है। आगे फिर क्या करना, उसका विचार वर्ष के अंत में किया जायगा।

चिरंजीलाल बडजाते,
मंत्री, जमनालाल बजाज

: २५२ :

नागपुर, २८-३-३४

श्रद्धेय सेठजी,

मेरी प्रार्थना पर आपने मुझे कठिन अवसर पर मदद की, इसके लिए आभारी हूं। मेरे जीवन में एक महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी को मैं निभा सका इसका मुझे संतोष है। आप द्वारा की गई मदद का सदुपयोग हुआ, यह सुनकर आपको संतोष होगा। आपके सौज़न्य के लिए तथा कठिनाई के प्रसंग पर सहायता देने की उदारवृत्ति के लिए मेरे मन में जो कृतज्ञतापूर्ण आदर उत्पन्न हो रहा है, वह किन्हीं भी औपचारिक शब्दों द्वारा व्यक्त करना संभव नहीं है। अनुकूल समय आते ही मैं आपके पैसे लौटा सकूंगा ? परंतु आपकी सहृदयता

का बदला मैं कैसे दे सकूंगा।[1]

आपका,
वामन शिवदास वार्लिंगे

: २५३ :

अकोला, २४-३-३६

प्रिय भाई जमनालालजी,

सविनय वंदे। आपका तार अभी मिला। उत्तर दिया है कि मैं दूसरे काम होने के कारण हाजिर नहीं हो सकूंगा। आप ता. २९ को इलाहाबाद अवश्य पधारें। श्री राजेंद्रबाबू का नाम पांच नामों में रहना ही चाहिए। यहां स्वागत-समिति की बैठक ता. २-४-३६ को सभापति के निर्वाचन के लिए रखी है। वहां से नाम आते ही यहां निर्वाचन हो जायगा। मैंने इलाहाबाद पत्र भी दिया है, जिसमें लिख दिया है कि बाबू राजेंद्रप्रसाद का सभापति होना नागपुर-अधिवेशन की सफलता के लिए आवश्यक है। मेरा विश्वास है कि बाबूजी का नाम पांच नामों में रखा जायगा। आपके प्रयत्न से इसमें तनिक भी शंका नहीं है। इलाहाबाद से आप मुझे तार करें।

मैं हाजिर नहीं हो रहा हूं, अतः क्षमा चाहता हूं। मेरी हार्दिक इच्छा है कि नागपुर का अधिवेशन खूब सफलता के साथ हो। अभी सब काम उसी निगाह से हो रहा है और मेरा विश्वास है कि सारा काम आपके संतोष के लायक होगा।

पत्र दें। कृपा रखें।

आपका,
बृजलाल बियाणी

: २५४ :

अकोला, १२-१०-४१

प्रिय भाई जमनालालजी,

सविनय वंदे। आपका ता. १० का कृपापत्र मिला। पूज्य बापू से मिला

---

[1] मराठी से अनूदित

था। प्रांत की असेंबली के चुनाव और हिंदू-मुस्लिम मन-मुटाव या तने हुए भावों के कारण मेरा जेल जाना अभी बापू ने स्थगित कर दिया है। उनकी आज्ञानुसार काम में लग गया हूं। ता. १६ को बापूजी से फिर मिल रहा हूं।

आपका स्वास्थ्य कुछ ठीक नहीं, जानकर चिंता है। जेल में जब आप चि. रामकृष्ण से मिलने आये थे, तब भी आप अस्वस्थ थे, ऐसा प्रतीत हुआ था। उस समय से चिंता है और अब चिंता और बढ़ जाती है जबकि थोड़े-से परिश्रम से आपकी थकावट बढ़ जाती है। मेरी आपसे विनम्र प्रार्थना है कि आप तबियत की पूरी हिफाजत रखें।

मेरी तबियत अभी ठीक है। केवल दो पौंड वजन कम करके आया हूं। दिल में तो पूर्ववत् उत्साह बना ही है। शरीर भी काम में खूब साथ देता है।

मैं जब जेल से रवाना हुआ तब चि. रामकृष्ण की तबियत अच्छी थी। उसका दिल तो मस्त और निर्भीक है ही। अपने संस्कृत-अध्ययन में वह खूब लगन के साथ लगा हुआ है। उसके प्रति मेरा प्रेम और आदर बढ़ा है।

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि आपकी सूचनानुसार मैंने श्री विनोबाजी का जीवन-चरित्र लिख लिया है। मैं चाहता हूं कि आप उसे देख लें और यदि संभव हो सके तो पूज्य बापूजी को भी दिखा दें। उसकी प्रस्तावना पूज्य बापूजी लिखें, तब तो कुछ कहना नहीं है, अन्यथा आपको लिखना होगी। आज मैं नहीं कह सकता कि जीवन-चरित्र कैसा लिखा गया है और आपको वह पसंद आयेगा या नहीं। मैंने आपकी आज्ञा का पालन अवश्य किया है। आपसे मिलूंगा तब आपको उसकी कापी दे दूंगा।

पत्र दें। कृपा रखें।

आपका नम्र,

बृजलाल बियाणी

: २५५ :

अकोला, १०-१२-४१

प्रिय भाई जमनालालजी,

सविनय वंदे। आपका ता. ८ का पत्र मिला। आपके आशीर्वाद के लिए

आभारी हूं। मैं भी आशा करता हूं कि आपकी इच्छानुसार मैं अपना कर्तव्य-पालन कर सकूंगा। पूज्य विनोबाजी के जीवन-चरित्र के विषय में जो लिखा सो विदित हुआ। जिस प्रकार पूज्य बापूजी की और आपकी आज्ञा होगी, उसी प्रकार किया जायगा। यहां सब प्रसन्न हैं। आशा है कि आप प्रसन्न होंगे। पत्र दें। कृपा रखें।

आपका नम्र,
बृजलाल बियाणी

: २५६ :

अकोला, ४-२-४२

प्रिय भाई जमनालालजी,

सविनय वंदे। गो-सेवा-संघ का काम आज समाप्त हो जायगा। कल से संभवतः आपको कुछ आराम मिले। आपको तबियत की दृष्टि से अधिक ध्यान रखने की आवश्यकता है, यह मेरी नम्र सूचना है।

जाजूजी की एकषष्टी के विषय में श्री घनश्यामदासजी से बातचीत हुई है। उन्होंने शिक्षा के संबंध में एक योजना बनाई है, जिसकी नकल मेरे पास आने पर उसके आधार पर वह योजना मैं आपके पास भेज दूंगा।

विनोबाजी का जीवन-चरित्र जो मैंने लिखा है, उसे श्री घनश्यामदासजी ने देखा। उनकी राय है कि यह प्रकाशित हो जाय तो ठीक है। मैंने यह चरित्र पूज्य जाजूजी को दिया है कि वह भी पढ़ लें। पढ़कर वह आपको दे देंगे। आप इस संबंध में अंतिम निर्णय करें। यदि छपवाने का निश्चय हो जाय तो आप प्रस्तावना लिख दें और मेरे पास वह चरित्र भिजवा दें, ताकि मैं उसको दुरुस्त करके संबंध में जो सूचनाएं हों उनके अनुसार ठीक करने दूं और भाषा को भी देखकर उसे अच्छा बना दूं।

यहां सब प्रसन्न हैं। पत्र दें। कृपा रखें।

आपका नम्र,
बृजलाल बियाणी

: २५७ :

खंडवा, १३-२-२७

सा. दण्डवत। आपका पत्र तथा २५० रुपये मिले। आपका आभारी

हूं। मैं दौरे पर से कल ही रात को लौटा, इसलिए पत्र नहीं लिख सका। सो क्षमा करेंगे। यहां काम खूब चल रहा है। आपके आशीर्वाद से विजय में शंका नहीं है। प्रतिद्वंद्वी कुछ घवरा-सा गया है और उसने अपना नाम वापस ले लेंने की वातचीत छेड़ी हैं। क्योंकि कल जो उसका काम कर रहे थे, वे अव उसका काम करने से इनकार कर रहे हैं। हजारों खर्च करने पर भी वुरी तरह से हारने की नौवत आती दीखती है। वह अव थोड़ा सहारा यह चाह रहे हैं कि आप लोगों में से कोई इन्हें इस तरह का संदेश लिख भेजें कि वे कांग्रेस उम्मीदवार के पक्ष में वैठ जायं।

आपसे मतलव उनका आप अथवा सरदार सा. या श्री राजेंद्रवावू या श्रीमती सरोजिनी वगैरह से खास है। यह भी इसलिए कि उनकी कुछ इज्जत बनी रहे।

इन बातों को ठीक से जानने के लिए आज एक विश्वस्त सज्जन यहां से वुरहानपुर गये हैं। अभी तो कुछ निश्चय नहीं है। हम अपनी तरफ से विल्कुल भी ढील नहीं कर रहे हैं। आपके तथा पू. वापू के आशीर्वाद से जनता में खूब उत्साह है और जहां से मदद की आशा विल्कुल भी नहीं थी, वे लोग भी अपने आप मदद कर रहे हैं।

आपका ही,
जगन
(जगन्नाथ महोदय)

: २५८ :

८-६-३५

भाई श्री जमनालालजी साहेब,

जोग लिखित जवलपुर से जमनादास का जयगोपाल वंचावजो। घणां घणां मानसे अपरंच कृपापत्र आपका मिला तथा चि. गजानंद तथा गोपी पहुंची। आपने इनको भिजवाने में वड़ी दूर तक का खयाल किया, इसके आभारी हैं।

हमने एक पत्र पूज्य महात्माजी को दिया है सो आपने भी देखा होगा। आपकी क्या आज्ञा है, आप क्या करना चाहते हैं, बहुत आगे-पीछे सोचकर लिखेंगे। हम तो जैसा आप लोगों की आज्ञा होगी, वैसा करने को तैयार हैं।

आपको हम कुछ लिखें, ऐसा नहीं है। आपको तो बिना ही लिखे हमारा ज्यादा खयाल है और गोपी का जो संबंध हमारा है, वैसा ही बल्कि उनसे ज्यादा आपका है।

कृपा बनाये रखें और जब मौका रूबरू मिलने का आयेगा, उस वक्त आपसे भविष्य का विचार करना है। देखें ईश्वर कब मिलायेगा। राजी-खुशी का पत्र दिलाते रहिये।

जमनादास मालपाणी

: २५९ :

जबलपुर, १४-१-२९

प्रियवर भाई जमनालालजी,

आपका कृपापत्र वर्धा से मिला। धन्यवाद। खैर, आपकी राय के अनुसार मैं यहीं कार्यकर्त्ताओं की व्यवस्था का प्रयत्न करूंगा और आवश्यकता होगी तो उनमें से कुछको साबरमती-आश्रम में भेजने की व्यवस्था भी करूंगा।

खादी का कार्य आरंभ करने के लिए हमलोग कुछ मित्रों की सहायता से एक योजना तैयार कर रहे हैं। व्यक्तिगत रूप से कार्य करने के लिए, मालूम होता है, जितनी पूंजी हम लोगों ने आरंभ में सोची थी, उससे कहीं अधिक लगेगी। कृपाकर यह सूचित कीजिये कि यदि मैं अपनी व्यक्तिगत जिम्मेदारी दूं तो क्या कुछ पूंजी इस कार्य के लिए स्पिनर्स एसोसिएशन की ओर से मिल सकेगी। और यदि मिल सकी तो ब्याज पर या निर्ब्याज पर? आखिर कुछ सहायता तो हम लोगों को एसोसिएशन की ओर से मिलनी ही चाहिए। कुछ पूंजी का प्रबंध हम लोग यहांपर अवश्य कर लेंगे।

मद्रास जाने के पूर्व यदि आप इस पत्र का उत्तर देंगे, तो बड़ी कृपा होगी।

कृपा रखिये। मेरे योग्य सेवा सदैव लिखते रहिये।

भवदीय,
गोविंददास मालपाणी

: २६० :

जबलपुर, १२-१२-२९

प्रियवर भाई जमनालालजी,

आपका कृपापत्र यथा-समय पहुंचा था। कुछ घरेलू अड़चनों के कारण उत्तर में विलंब हुआ। क्षमा करें।

आपकी आज्ञा के अनुसार चि. रत्नकुमारी बाई आपकी सेवा में जरूर उपस्थित होतीं। बहुत करके तो उसकी माता और मैं भी आते, किंतु इधर एक दुर्घटना होगई। राजकुमारी बाई के एक छोटी बहन स्वर्णकुमारी और थी। उसका देहांत हो गया। हमारे घर में कोई बच्चा इस प्रकार नहीं गया था। अतएव स्त्रियों में कुछ अधिक खेद हुआ है। इसी कारण किसीका आना भी इस समय संभव नहीं दीखता। मुझे बड़ा दुःख है कि इस समय पूज्य महात्माजी और आपके सत्संग से हम लोग वंचित रह गये। आपके जाने के बाद हम तीनों ने ही वर्धा आने का प्रायः निश्चय-सा कर लिया था। परंतु भावी प्रबल है।

पूज्य महात्माजी से मेरा प्रणाम।

भवदीय,
गोविंददास

पुनश्च :

अछूतों के मंदिर-प्रवेश के संबंध में आपने यहां का ब्योरेवार हाल पूछा है, सो एक शब्द में यही है कि एक पार्टी, जिसका यहां बहुमत है, हमलोगों को गालियां, देती रहती है। घर में पूज्य पिताजी और माताजी भी मुझसे बहुत रुष्ट हो गये हैं। कहते हैं कि अब तुम धर्म को डुबोने चले हो। मैंने तो कह दिया कि मैंने तो वही किया जिसको मेरी आत्मा ने ठीक कहा। मैंने कोई नई बात नहीं की। सन् १९२० के बाद मैं अस्पृश्यता मानता ही

न था। सभा आदि में अछूतों के साथ बैठता ही था। अब उनके साथ भगवान के दर्शन भी कर लिये।. हमारे साथी बहुत प्रसन्न हैं। जनता कुछ भी कहे, हमें तो अपने कर्तव्यों का पालन करते रहना है।

गोविंददास

: २६१ :

जबलपुर, १९-११-३९

प्रिय भाई जमनालालजी,

दिल्ली जाना अनिवार्य होने के कारण मैं जयपुर भी गया था। वहां वैद्यों को दिखाया। वे तो पीठ का दर्द वायु के ही विकार से मानते हैं। परंतु उनका भी कहना है कि हायड्रोसिल और हार्निया का आपरेशन हो जाना चाहिए। यह जल्दी ही कराऊंगा।

जयपुर में वनस्थली भी गया था और सीकर की प्रजा-मंडल-कांफ्रेंस का उद्घाटन करना भी स्वीकार कर लिया था। परंतु दिल्ली में बीमार हो गया। कमर में लुंबेगो हो गया। इसलिए सीकर नहीं जा सका। वहां जाता तो भाभी साहिबा और भाई राधाकृष्णजी के भी दर्शन हो जाते। सीकर के भाषण की एक प्रति सेवा में भेज रहा हूं। विश्वास है कि आपका स्वास्थ्य अब अच्छा होगा। मैं कल ही जबलपुर लौटा हूं।

भवदीय,
गोविंददास

: २६२ :

नागपुर, २४-१०-३८

श्रीमान सेठ साहेब,

हिंगनघाट म्युनिसिपल कमेटी की समस्या कितनी विकट हो गई है, इससे आप थोड़ा-बहुत परिचित हैं ही। नारायण बड़े नाम के एक हरिजन को नामजद किया था, जिसके बाबत वर्धा में कुछ लोगों ने ऊधम मचाया था। इस व्यक्ति ने अपना त्यागपत्र दे दिया है, यद्यपि वह कहता है कि उससे धोखा देकर त्यागपत्र लिया गया है। यदि आप जांच कर लें तो इस मामले का

फैसला करने में मुझे सुभीता होगा। पुखराजजी का कहना है कि वह आपको इस संबंध में कागजात दिखा देंगे।

यदि नारायण बड़े ने पहले खुशी से ही इस्तीफा दिया था, तो फिर उनकी जगह पर किसी दूसरे को नामजद करना होगा। इस संबंध में पुखराज-जी ने केशव ठाकरे का नाम दिया है। इस नाम की सिफारिश डिप्टी कमिश्नर ने भी की थी। पता नहीं कि यह नाम अब सबको मंजूर होगा या नहीं। केशव ठाकरे हरिजन नहीं हैं, किंतु सेलेक्शन में एक हरिजन आ चुका है। इसलिए अब हरिजन की आवश्यकता भी नहीं रही।

यदि आप इन दोनों का फैसला कर देंगे तो कृपा होगी। अब मजदूरों की हड़ताल खतम हो गई है और हिंगनघाट में कुछ शांति दीखती है। इस-लिए अब म्यु. कमेटी के पदाधिकारियों का चुनाव शीघ्र होना चाहिए। इस एक नामजदगी का मामला तय हो गया तो फिर कोई अड़चन न रहेगी। आप खुशाल चंदजी से भी पूछ लें तो शायद ठीक होगा।

भवदीय,
द्वारकाप्रसाद मिश्र

: २६३ :

नागपुर, १६-१२-२९

माननीय जमनालालजी बजाज की सेवा में,

सप्रेम वंदे। आपका कार्ड मिला। बड़ी कठिनाई से पत्नी को भेजा है। पुराने संस्कार उसमें भरे हुए हैं। घर के सभी आदमी पुरानी रूढ़ियों को माननेवाले होने की वजह से मैं सुधार-कार्य में असफल रहा।

श्रद्धेय जानकीदेवीजी यदि इस ओर ध्यान रख कर कुछ कष्ट उठावेंगी तो शायद उपयोगी होगा।

खादी इस्तेमाल करने में ज्यादा परिश्रम नहीं पड़ेगा। निर्भयता और रूढ़ियों को नष्ट करने में ही परिश्रम की जरूरत है। प्रथम, इसके लिए सत्संग की आवश्यकता है। इतनी दिक्कत यदि कुछ समय के लिए श्रद्धेय जानकीदेवीजी उठाने को तैयार हों, तभी कुछ सुधार होने की आशा है।

कृपा रखें।

पूनमचंद्र रांका का वंदेमातरम्

श्री सप्रूलालजी को साथ में भेजा है। यह एक होनहार नवयुवक है। पिता के यह एक ही पुत्र हैं। घर के धनिक हैं। ६ वर्ष से शुद्ध खादी पहनते हैं। सगाई हो चुकी है। इनके पिता विवाह करने की जल्दी कर रहे हैं। मैंने रोक रखा है। आप इनको २-३ वर्ष विवाह न करने की सलाह दें।

: २६४ :

नागपुर, ९-२-३७

माननीय सेठ साहेब,

आप कल शाम को दूकान पर आये थे। पर मैं बाहर गांव दौरे पर से रात को ७ बजे लौटा, इसलिए मिल नहीं सका। क्षमा करें। आप नागपुर किस काम के लिए पधारे, वह मालूम नहीं हुआ। मैं ६-१-३७ से लगातार दिन-रात देहातों में घूम रहा हूं।

प्रयत्न करना अपना काम है। मैंने अपने गत १६ वर्ष सार्वजनिक आयुष्य में इतना परिश्रम का काम नहीं किया। कौंसिल के कार्यक्रम में रुचि न होते हुए भी स्वभाव ने इस आग में गिरा दिया। इतना सब करते हुए भी श्री ठेकेदार गिर जायंगे, तो उसका मुझे दुःख नहीं होगा। चुनकर आ गये तो मुझे ही क्या, हिंदुस्थान के सभी राष्ट्र-सेवियों को आनंद ही होगा।

ता. १२ की शाम को इस चुनाव से छुट्टी हो जायगी। अब मुझे अपनी स्थिति के लिए गहरा विचार करना पड़ेगा। अफवाह यदि सच निकली तो सरकार कार्यवाही करेगी। तो मेरे लिए तो बहुत ही अच्छा हो जायगा। मैं वास्तव में घर रहने लायक रहा नहीं। अस्तु।

पूनमचंद रांका का वंदेमातरम्

: २६५ :

चांदा, २५-२-३७

पू. सेठजी,

आपका अभिनंदन का तार मिला। यह उल्टी बात क्यों? हम सिपाहियों

को यह लालच क्यों ? यह तो आपकी चीज है। हम तो हुक्म के तावेदार हैं।

आपका कृपाकांक्षी,
पूनमचंद रांका

: २६६ :

नई दिल्ली, ५-१०-३९

प्रिय श्री राघवेंद्ररावजी,

मेरा पत्र पढ़कर आपको थोड़ा आश्चर्य होना स्वाभाविक है। आपको यह तो मालूम होगा कि कुछ अर्से से रियासत जयपुर के मामले में काफी दिलचस्पी ले रहा हूं। कुछ कष्ट सहन करने के बाद अब वहां का वातावरण कुछ ठीक होने जा रहा है। महत्व की बातों में सलाह मशविरा लेना-देना शुरू होगया है। आपको शायद यह तो पता होगा कि वहां इस समय प्रधान-मंत्री की जगह खाली है। मेरी कोशिश है कि वहां सुयोग्य भारतीय प्राइम मिनिस्टर नियुक्त किया जाय जिसे दुनिया की वर्तमान स्थिति का पूरा ज्ञान हो और जो राज और प्रजा में हित-संबंध को बढ़ा सके। जयपुर राजपूताने की बड़ी रियासतों में से एक है। इस सिलसिले में जो बातचीत चल रही है उसमें मैंने भी श्री महाराजासाहब तथा पू. बापूजी से आपके बारे में बात की है। मैं आपसे तार द्वारा यह जानना चाहूंगा कि क्या आप जयपुर के प्राइम मिनिस्टर के स्थान को स्वीकार करने के लिए तैयार हो सकते हैं ? यदि आप अपनी स्वीकृत दे सकें तो आपको बहुत जल्दी भारत लौटना होगा। क्या यह संभव है ? यदि यह संभव हो और आपकी तरफ से स्वीकृति हो तो मुझे वर्धा के पते से सिर्फ "यस" का तार दीजियेगा। यदि किसी कारण आप इसे स्वीकार नहीं कर सके तो कृपया "नो" का तार कर दीजिएगा ताकि मुझे दूसरी कोशिश करने के लिऐ सुविधा हो। वह जगह जल्दी ही भरनेवाली है। इसलिए मैंने यह जरूरी खत लिखा है। आपके तार का उपयोग मैं श्री महाराजा साहेब तथा श्री महात्माजी के लिए करूंगा। बाकी तो वह खानगी ही रहेगा। इस बारे में और बातें तो जब आपसे मिलना होगा

तब अधिक हो सकेंगी। मैं इतना ही कह सकता हूं कि यदि आप यह स्थान स्वीकार कर सकेंगे तो मुझे खुशी होगी और यदि यह संभव हुआ तो हम लोग इस रियासत को एक आदर्श रियासत बनाने में सफलता प्राप्त कर सकेंगे।

जमनालाल बजाज के वंदेमातरम्

: २६७ :

वर्धा, १४-१०-३९

प्रिय श्री राघवेंद्ररावजी,

आपके तार के लिए धन्यवाद। मैं ऐसे भी आज ही आपको फिर पत्र लिखनेवाला था, कारण कल ही मुझे खबर मिली कि पोलिटिकल डिपार्टमेंट ने एकाएक गड़बड़ करके ता. ११-१०-३९ को जयपुर के लिए राजा ज्ञाननाथ सी. आई. ई. की नियुक्ति कर दी है। इस खबर से हम सबको ही आश्चर्य हुआ। उनके जयपुर आने तक किसीको उनकी नियुक्ति की खबर तक नहीं मिली थी। मैंने पिछली बार आपको पत्र लिखा था, उसी वक्त श्री महाराजा साहब जयपुर को आपके बारे में पत्र लिखा था। मुझे तो यह आशा रही थी कि सर बर्ट्रेंड ग्लसी भी आपके लिए अनुमति दे देंगे; क्योंकि उनके पास भी आपका नाम तो पहुंच ही गया था। मैं यह भी कह सकता हूं कि श्री महाराजासाहब की लिस्ट में राजा ज्ञाननाथजी का नाम नहीं था और मेरे साथ की बातचीत में भी मुझे यह मालूम हो गया था कि श्री महाराजासाहब आप ही को अधिक चाहते हैं। यह सब होते हुए पोलिटिकल डिपार्टमेंट में यह गड़बड़ क्यों की, इस बारे में आश्चर्य हो रहा है। मैं इस संबंध में, संभव है, जयपुर जाने पर अधिक मालूम कर सकूंगा। मुझे खेद है कि आपको कष्ट दिया गया। आपका क्या प्रोग्राम है? कबतक आनेवाले हैं?

जमनालाल बजाज के वंदेमातरम्

: २६८ :

नागपुर, ४-२-३७

श्रीयुत जमनालाल बजाज,

सेवा में सप्रेम नमस्कार। नागपुर-मजदूर-मतदाता-संघ के चुनावों

की बाबत यहां मजदूर-कांग्रेस और कांग्रेस में मतभेद हो गया है। मजदूर कांग्रेस की ओर से एक उत्साही युवक कामगार कार्यकर्त्ता—स्वयं मिल में काम करनेवाला—श्री बालाजी सालुंके को खड़ा किया है और उनके विरुद्ध श्री नायडू वकील को कांग्रेस की ओर से खड़ा किया गया है। मजदूर-संघ मत-दाताओं में कांग्रेस ने मजदूर-कांग्रेस के विरुद्ध कहीं भी उम्मीदवार खड़ा नहीं किया। ऐसा होते हुए नागपुर में ही कांग्रेस मजदूरों के विरुद्ध उम्मेदवार क्यों खड़ा करे, यह समझ में नहीं आता। सुलह के तौर पर हमारे उम्मीदवार श्री सालुंके को कांग्रेस उम्मीदवार के रूप में खड़ा करें, तो वे 'कांग्रेस प्लेज' पर सही करने को तैयार हैं। ऐसा हमने डा. खरे को सूचित किया है, फिर भी श्री नायडू हमारे विरुद्ध खड़े ही हैं। चुनाव की दृष्टि से श्री नायडू के कुछ भी चांस नहीं हैं। परंतु उनके खड़ा रहने से मजदूर व कांग्रेस में बिना कारण तनाव बढ़ेगा। मुझे और मेरे सब सहयोगियों को कांग्रेस से सहयोग करने की इच्छा है। परंतु श्री नायडू हमारे विरुद्ध ऐसा करें, तो यह सहयोग असंभव होगा। फिर भी आप स्वयं इस विषय में योग्य जांच करें और मजदूरों के विरुद्ध कांग्रेस का उम्मीदवार खड़ा न करने की खटपट करें। इस संबंध में हमने सरदार पटेल को भी लिखा है। आप भी उन्हें हमारे विचार सूचित करें। अखबारों की बाजारू रिपोर्ट पर विश्वास न करें।

हमारी शिकायत केवल नागपुर के मजदूर-मतदाताओं की जगह के लिए है और हमें कांग्रेस से यथासंभव सहकार्य करना है। गरीब कामगार-वर्ग की योग्य शिकायतों की ओर आप ध्यान देंगे, ऐसी आशा है।

आपका नम्र सेवक,

रा. स. रूईकर

: २६९ :

जयपुर, ४-९-३९.

प्रिय श्री शुक्लाजी,

मैं यहां ता. ३१-८ को पहुंच गया था। श्री महाराज साहिब से दो मर्तबा मिल चुका हूं। आशा है कि संतोषकारक समझौता हो जायगा। इस काम के

लिए मुझे कुछ समय यहां रहना पड़ेगा।

मुझे नागपुर स्टेशन पर यह तो मालूम हो गया कि श्री पी. सी. टेलर को पांच वर्ष के लिए यहां दिया गया है। साथ में वहांपर यह भी मालूम हुआ कि करतारनाथ पोलिस आफिसर को भी यहां डी. आई. जी.के स्थान पर भेजा जा रहा है। क्या इनके लिए भी आपने स्वीकृति दे दी है? कृपया शीघ्र लिखिये कि यह कितने समय के लिए दी गई है? इन्हें यदि स्वीकृति दी भी जाय तो एक वर्ष से अधिक के लिए कतई देना नहीं चाहिए। बेहतर तो यह होगा कि यहां की परिस्थिति को देखते हुए इस मामले को कुछ समय तक स्थगित रख दिया जाय, और मुझे पहले सूचित कर दिया जावे। श्री करतारनाथ कैसे व्यक्ति हैं, लिखें।

यदि आप मुझे सिविल लिस्ट भिजवा देंगे तो अपने प्रांत से देशी विधान सभाओं में कितने अधिकारी काम कर रहे हैं, इस बात का मुझे पता लग जायगा। सी. पी. गवर्नर से यदि आपसे जयपुर के बारे में किसी तरह की बातचीत हुई हो तो मुझे कृपया लिख भेजें कि क्या बात हुई?

यूरोप में तो अब लड़ाई शुरू हो गई है। देखना है कि ऊंट किस करवट बैठता है?

जमनालाल बजाज के वंदेमातरम्

: २७० :

नागपुर, २०-९-३९

प्रिय भाई बजाजजी,

वंदे। कृपापत्र मिला। देरी के लिए क्षमा। टेलर को तीन साल के लिए भेजा है। शर्त यह है कि ६ मास का नोटिस देकर हम लोग उन्हें वापस बुला सकते हैं। स्टेट को भी अधिकार है कि वह हमें ६ मास का नोटिस देकर वापस भेज दे। करतारनाथ को मैं अभी नहीं भेज रहा हूं। हमने यह कह दिया है कि जबतक स्टेट और प्रजा का समझौता संतोषजनक न हो और हमारे आफिसर सुधार के लिए आवश्यक न हों, तबतक हम कोई आफिसर नहीं भेजना चाहते।

आशा है कि आप अपने कार्य में सफल होंगे।

आपका स्नेही,
रविशंकर शुक्ला

: २७१ :

नागपुर, १७-११-४१

प्रिय बजाजजी,

मैं कल दौरे से लौटकर वर्धा गया था, परंतु आप तो गौमाता के पुत्रों की सवारी द्वारा कहीं गये थे। आपसे भेंट न हो सकी, इसका खेद रहा। मेरा लड़का भगवतीचरण, जो सेवाग्राम में रहा था, आज वर्धा जा रहा है। आपकी सेवा में उपस्थित होगा। महिला-आश्रम में पं. सीताचरणजी दीक्षित हैं। मुझे उन्हें १५ दिन के लिए किसी मेरे निजी कार्य के लिए भेजना है। कृपाकर उन्हें दस दिन की छुट्टी दिला दीजिये। संभवतः १०-१५ दिन में मैं लखनऊ वगैरह से लौटकर आपसे भेंट करूंगा और जेल जाने की तिथि निश्चित कर दूंगा। काम बहुत जरूरी है, इसलिए आप सीताचरणजी को जरूरी ही भेज दीजिये।

बाकी सब कुशल है।

आपका स्नेही,
रविशंकर शुक्ला

मध्यभारत

: २७२ :

इंदौर, ८-७-३६

सादर प्रणाम। आपको तकलीफ देने का सबब पैदा हुआ है। मैंने इसके पूर्व कई बार आपको कष्ट दिया है।

मध्य प्रदेश की बुरहानपुर तहसील में तथा बंबई इलाके के पूर्व खान देश जिले में हम दोनों ने मतदाताओं की सूची में अपने नाम लिखवाये हैं। आज की हालत में फेडरल असेंबली बनने में तो कई साल लगनेवाले हैं। इस कारण मध्यप्रदेश और बंबई इलाके की प्रांतीय असेंबलियों में जुदा-जुदा स्थानों से प्रवेश करने की इच्छा है।

श्रीमंत महाराजा होल्कर सरकार की उदारता से हमारी इच्छा के मुताबिक कांग्रेस द्वारा भी प्रयत्न करने की स्वीकृति प्राप्त हो गई है।

ऊपर लिखी हुई हालत में आपकी सलाह और मदद के लिए मैं आपके पास यह खत लिख रहा हूं। उचित समझें तो परम पूज्य महात्माजी से भी परामर्श करें।

आपके पत्र की उत्कंठा से प्रतीक्षा करूंगा।

भवदीय,

मा. वि. किबे

: २७३ :

वर्धा, १४-७-३६

प्रिय श्री किबेजी,

आपका ८-७-३६ का पत्र यथासमय मिल गया था। मध्य प्रदेश की बुरहानपुर तहसील में तथा बंबई के पूर्व खानदेश जिले में आपने तथा श्रीमती कमलाबाईजी ने मतदाताओं में अपने नाम लिखवाये हैं तथा प्रांतीय धारा

सभा में जुदा-जुदा जगह से प्रवेश कर लेने की आपकी इच्छा है, लिखा सो ठीक।

पार्लियामेंटरी कमिटी की स्थापना इसी चुनाव के वास्ते अभी हाल में हुई है, इसका आपको पता होगा। श्री राजेंद्रबाबू उस कमिटी के प्रधान मंत्री हैं तथा श्री सरदार पटेल उसके प्रमुख हैं। मैं उस कमिटी में नहीं हूं।

आपका इन महानुभावों से परिचय तो है ही। आप उन दोनों को लिख सकते हैं। यदि इन लोगों को मेरी ओर से आपको कुछ लिखवाने की इच्छा हो तो आप उस प्रकार सूचित कीजियेगा। आपकी इच्छा के अनुसार मैं उनको लिख दूंगा।

आशा है कि आप तथा श्रीमती कमलाबाईजी प्रसन्न होंगे।

जमनालाल बजाज के वंदेमातरम

: २७४ :

इंदौर, ५-१२-३८

सादर प्रणाम। आपका समाचार कई दिनों से मिला नहीं। आपका स्वास्थ्य अच्छा होगा। लिखिये। आपसे मिले ९-१० महीने हो गये हैं, ऐसा लगता है। गत फरवरी में मुझे प्रतापगढ़ से दीवानगिरी के लिए पूछा था, अधिक विस्तृत देश-सेवा का मौका मिलने की बात उस वक्त हुई थी। इस वास्ते मैंने इनकार कर दिया, अब तो देश की स्थिति बदल गई है, तो भी मैंने आपको जयपुर के वास्ते इशारा किया था। मेरे पास ब्रिटिश पदवियां न होने से और जो हैं, उन्हें भी छोड़ देने की तैयारी होने के कारण बड़ी स्टेटों में दीवानगिरी की मुझे उम्मीद नहीं। परंतु मध्यम जगह के बड़े राज्य में मैं कर सकता हूं। इस वास्ते यह कष्ट आपको दे रहा हूं।

आपका,

मा. वि. किबे

सिंध

: २७५ :

हैदराबाद, २२-३-४१

प्रिय जमनालालजी,

मुझे अफसोस है कि मैं हिंदी में आसानी से नहीं लिख सकता, इसलिए मुझे यह पत्र अंग्रेजी में लिखना पड़ रहा है।

आपका मेरी तंदुरुस्ती और 'प्रेमी' की कुशलता के बारे में कृपापत्र मिला था। मैं अब अच्छी तरह हूं और अगर मैं रात को ८ घंटे की और दिन में १ घंटे की नींद ले सकूं तो दिन भर काम कर सकता हूं। फ़िर भी मैंने कोई गंभीर कार्य करना शुरू नहीं किया है। मैं अब भी अपनेको सक्रिय राजनीतिक काम से बचा रहा हूं। बापू आज्ञा देंगे तब मैं क्रियात्मक कार्य आरंभ करूंगा। प्रेमी काफी ठीक है। वह अभी भी एक स्वतंत्र चिड़िया ही है। हम प्रांत के कुछ स्थानों में मनोरंजन के लिए भ्रमण को गये थे, और वहां से १८ को घर लौटे हैं।

प्रांत की स्थिति अभी तक स्पष्ट नहीं है। अगले दो-तीन महीनों में मालूम होगा कि हालात जम सकते हैं या नहीं।

देवीबेन और प्रेमी के प्रणाम। ओम् और मदालसा के क्या समाचार हैं?[1]

आपका स्नेही,

जयरामदास,

---

[1] अंग्रेजी से अनूदित

सीमाप्रांत

: २७६ :

ऐबटाबाद, १-१०-३७

प्रिय सेठजी,

मुझे उम्मीद है कि आपको अपना वह वायदा याद होगा कि जब मुझे सीमा प्रांत जाने की इजाजत मिल जायगी तो आप वहां तशरीफ लायेंगे। मुझे अफसोस है कि मैं वर्धा में उस समय नहीं था, जब मुझपर से मनाही का हुक्म उठा लिया गया, नहीं तो मैं आपको खुद अपने साथ लिवा ले जाता। अब मैं बहुत मशकूर होऊंगा, अगर आप मुझे अपना आगे का प्रोग्राम बतायेंगे। जब महात्माजी नवंबर के शुरू में सीमाप्रांत आयेंगे तो क्या आप उनके साथ आना चाहेंगे या आप पहले आ सकेंगे। मैं उसके बारे में आपके फैसले की राह देख रहा हूं।

मैं इसके पहले न लिख सकने के लिए आपसे माफी मांगता हूं। मैं आपको यकीन दिलाता हूं कि मेरे लिए आपको भूलना असंभव है। पर जबसे मैं यहां आया, मेरी तंदुरुस्ती अच्छी नहीं रही। मुझे मलेरिया हो गया। कल से मैं चारपाई पर पड़ा हूं। हिंदुस्तान में रहते हुए भी मेरी तंदुरुस्ती अच्छी नहीं थी, लेकिन ज्यादा काम होने की वजह से मेरी तंदुरुस्ती खराब हो गई। मैं इस पहाड़ी जगह—ऐबटाबाद—में तंदुरुस्ती सुधारने के लिए आया था, लेकिन यहां भी मुझे पब्लिक मीटिंगों, जलूसों आदि में भाग लेना पड़ता है, इसलिए आराम नहीं मिलता। राधाकिशन, जानकीबहन, कमला, मदालसा, और ओम को मेरा प्यार और बंदगी कहिएगा। अपनी पुत्रवधू और अपने परिवार के और लोगों को मेरी याद दिलायें।[1]

आपका,

अब्दुल गफ्फार खां

---

[1]अंग्रेजी से अनूदित

: २७७ :

पेशावर, २५-११-३७

प्रिय सेठजी,

मैं बन्नू और डेरा इस्माइलखां जिलों का दौरा करके अभी लौटा हूं। इसीलिए आपको लिखने का समय नहीं पा सका। मुझे सचमुच अफसोस है कि कलकत्ते से लौटते वक्त मैं आपसे नहीं मिल सका। शरतचंद्र बोस और सुभाषचंद्र बोस ने मुझसे कहा कि अगर मैं आपके पास आने की कोशिश करूंगा, तो गाड़ी छूट जायगी। मुझे उम्मीद है कि आप मुझे इसके लिए माफ करेंगे।

आप जानते हैं कि लाली[1] का साइंस पढ़ने का इंतजाम काफी नहीं है, इसलिए उसे इम्तहान में रुकावट पड़ेगी। इसके लिए क्या आप मेहरबानी करके कुछ इंतजाम कर सकेंगे।

मैंने महात्माजी को लिखकर उनकी मौजूदा तंदुरुस्ती के बारे में पूछा है और कहा है कि अगर वह ठीक हों तो वे सीमा प्रांत आयें। मैं मशकूर होऊंगा, यदि आप अपनी और महात्माजी की तंदुरुस्ती के बारे में मुझे लिखेंगे। महात्माजी का सीमा प्रांत का फैसला होने पर यदि आप भी उनके साथ आ सकेंगे तो मैं सचमुच बहुत ही मशकूर होऊंगा।

श्रीमती जानकीबाई को मेरा सलाम। मदालसा, ओम् और कमलनयन की पत्नी को भी।

शुभेच्छा के साथ,[2]

आपका,
अब्दुल गफ्फार खां

---

[1] अब्दुल अली खानसाहब का तीसरा लड़का। वह वर्धा में जमनालालजी की देख-रेख में पढ़ता था।

[2] अंग्रेजी से अनूदित

: २७८ :

पेशावर, २५-११-३९

प्रिय सेठजी,

मैंने आपकी नजरबंदी के दिनों में दो पत्र लिखे, पर उनका कोई जवाब नहीं आया, और जब महात्माजी सीमा प्रांत को आये तो उन्होंने कहा कि मुमकिन है कि आपको वे पत्र बिल्कुल मिले ही न हों।

आपकी रिहाई के बारे में समाचार पाकर मुझे बड़ी खुशी हुई। इस वक्त मैं एक ऐसे छोटे गांव में रहता हूं जो सड़क से दूर है और डाक तथा अखबार मेरे पास बहुत देर से पहुंचते हैं। इसलिए आपकी रिहाई के बहुत बाद मुझे उसकी खबर मिली और उसके बाद भी मैं इतना मशगूल रहा कि इसके पहले खत लिखने का समय न निकाल सका और मुझे उम्मीद है कि आप माफ करेंगे। मैं आपकी तंदुरुस्ती के लिए दुआ करता हूं।

कुनबे के सभी लोगों को मेरा प्रेम और सम्मान।

गनी और वली यहां मेरे साथ ही हैं और अपने प्रणाम भिजवाते हैं।[1]

आपका स्नेही,
अब्दुल गफ्फार खां

: २७९ :

बंबई, २८-२-३८

प्रिय डाक्टरसाहेब,[2]

वर्किंग कमेटी की मीटिंग में सीमा प्रांत के बारे में बातचीत हुई और हम सबने महसूस किया कि वर्किंग कमेटी को वहां के मामलों से परिचित नहीं कराया गया है। इसका कारण वहां के दफ्तर में ऐसे कुशल आदमी का अभाव हो सकता है, जो पत्र-व्यवहार और दफ्तर के अन्य नियमित काम कर सके। पंडित जवाहरलाल और मेरे बीच भी इसके बारे में बातचीत हुई और हम दोनों की यही राय हुई कि सादुल्ला यह काम करने के लिए उपयुक्त

---

[1]अंग्रेजी से अनूदित, [2]डाक्टर खानसाहब

व्यक्ति होगा। हमने सादुल्ला से भी बात की और मुझे आपको यह सूचित करते हुए खुशी हो रही है कि अगर उनकी सेवाओं की मांग हो तो वह पेशावर जाने में नहीं हिचकेंगे। इस संबंध में एक बात और है। जनता में यह भावना हो सकती है कि आपने इस काम के लिए अपना आदमी चुना है, पर ऐसे विरोध की ओर ध्यान देने की जरूरत नहीं है। सादुल्ला वहां तभी जाना चाहेंगे जब आप उनके लिए आजीविका का कोई स्वतंत्र प्रबंध कर सकें। यहां वह काम में लगे ही हैं और अपनी योग्यतानुसार काम में निपुण हैं। वहां वह नौकरी पर नहीं जा रहे हैं और न उनमें रुपये कमाने की ख्वाहिश ही है। वहां आप उन्हें कोई बड़ी तनख्वाह नहीं देनेवाले हैं। अगर आप उन्हें किसी ऐसे विभाग की जिम्मेदारी सौंप सकें, जहां उनकी काबलियत साबित हो तो मेरा खयाल है कि बहुत अच्छा होगा क्योंकि वे अपनी इंजीनियरिंग की जानकारी भी काम में ला सकेंगे। वे आपके गुप्त तथा अन्य दफ्तरी मामलों को संभालेंगे और वर्किंग कमेटी को वहां के मामलों की सूचनाएं देते रहेंगे। आप बंबई म्युनिसिपैलिटी से पूछ सकते हैं, यदि वे सादुल्ला की सेवाएँ एक साल के लिए दे सकें और अगर इतने दिनों में आप उन्हें उपयोगी न पायें तो आप उन्हें उनकी नौकरी पर बड़ी सहूलियत से वापस भेज सकते हैं। अगर आप किसी वजह से सादुल्ला को बुलाने का फैसला न करें, और दफ्तर में कोई दूसरा आदमी रखना चाहें तो हमें कुछ नहीं कहना है। अगर आपको ऐसा आदमी स्थानीय रूप में मिल जाय तो अच्छा ही है। नहीं तो, आप मुझे या पं. जवाहरलाल को लिखें तो हममें से कोई भी आवश्यक कार्रवाई करने की कोशिश करेगा।

खानसाहब और आपके प्रति सम्मान।[1]

आपका,
जमनालाल बजाज

---

[1] अंग्रेजी से अनूदित

निर्देशिका

(इस सूची में उन्हीं लोगों के नाम दिये गये हैं जिनको श्री जमनालालजी बजाज ने पत्र लिखे हैं या जिनके पत्र उनको प्राप्त हुए हैं। पत्रलेखकों तथा प्रदेशों के नाम अकारादिक्रम से दिये गए हैं। सं०)

जमनालाल बजाज-संबंधी साहित्य

1. जमनालालजी
—घनश्यामदास बिड़ला
2. श्रेयार्थी जमनालालजी (संक्षिप्त)
—हरिभाऊ उपाध्याय
3. बापू के पत्र
—संपादक : काकासाहब कालेलकर
4. स्मरणांजलि
—संपादक : काकासाहब कालेलकर
5. जीवन-जौहरी
—रिषभदास रांका
6. एक देश-सेवी परिवार
—विनायक कुलकर्णी
7. पत्र-व्यवहार—1
—संपादक : रामकृष्ण बजाज
8. पत्र-व्यवहार—2
—संपादक : रामकृष्ण बजाज

तीन रुपये